RNI NO. DELHIN/2008/23723

सारा अली खान का बोल्ड लुक ...

₹5/-

संपूर्ण माया

समाचार पत्रिका

वर्ष 12 ,अंक 8 , सितम्बर 2019 | www.sampurnamaya.in

130 करोड़ नागरिकों के चेहरे के भाव से मिलती है

‘नई ताकत’

KASHYAP CLINIC Pvt. Ltd.

sexoLogist

ISO 9001 : 2015
ISO 13485 : 2003

हमारी शुभकामनाएं आपका आनंदमय जीवन

सुप्रसिद्ध साइको सेक्सोलॉजिस्ट

डा0 बी.के.कश्यप

आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा एवम् योग द्वारा उपचार

(आयुर्वेदाचार्य) नाड़ी विशेषज्ञ

BAMS, DNYS, APC. PARISHAD, NEW DELHI, Y.N.MAHARASHTRA, MUMBAI

राजेश मेडिकल हॉल

333,वेणी माधव मन्दिर,दारागंज,प्रयागराज Timing 9 am to 10 am

क्श्यप क्लीनिक, सिविल लाइन्स

30, नावाब युसुफ रोड,हाईकोर्ट पानी की टंकी,प्रयागराज Timing 11 pm to 8pm

8756999981, 8756999982, 8756999983, 8004999984

Web : www.drbkkashyapsexologist.com | E-mail : dr.b.k.kashyap@gmail.com
www.justdial.com Kashyap Clinic, Civil Lines, Allahabad - Fb : DrBkKashyap-09335410105/09889005053

संपूर्ण माया
समाचार पत्रिका

वर्ष 12, अंक 8, सितम्बर 2019

स्व. क्षितींद्र मोहन मित्र
स्व.आलोक मित्र
प्रेरणास्रोत

संदीप मित्र
संपादक

रवींद्र श्रीवास्तव
वरिष्ठ सलाहकार संपादक

अंजनी कुमार श्रीवास्तव
समन्वयक

आलोक एम. इन्दौरिया
सलाहकार संपादक

खड़क बहादुर सिंह
राजनीतिक सलाहकार

शशि किरण
कानूनी विशेषज्ञ

शरद मिश्रा
डिजाइनर

ब्यूरो

प्रदेश : देवदत्त दुबे
बिहार : जीवेश कुमार सिंह
उत्तराखंड : राम प्रताप मिश्रा

संवाददाता

(नागपुर) अपर्णा महादानी
(प्रतापगढ़) सौरभ सिंह सोमवंशी

कार्यालय

दिल्ली: जी एच 1/32, अर्चना आपार्टमेंट पश्चिम विहार, नई दिल्ली-63
लखनऊ: के-4,वनास्थली अपार्टमेंट गोमती नगर एक्सटेन्सन लखनऊ -010
भोपालरू फ्लैट-बी-103 कन्हैया अपार्टमेंट शहापुरा, भोपाल
इलाहाबाद : 1/ए हाशिमपुर रोड, टैगोर टाऊन, इलाहाबाद-211002

प्रकाशन एवं मुद्रक, श्री संदीप मित्र द्वारा जी.एच 1/32,अर्चना अपार्टमेंट पश्चिम विहार,नई दिल्ली-63 से प्रकाशित एवं करन प्रिंटर्स एफ-29/2, ओखला फेस-3 नई दिल्ली से मुद्रित

प्रकाशक की आज्ञा के बिना कोई रचना उद्धृत नहीं की जानी चाहिए।

अन्दर

12 - 'बेटी बचाओ' : किस किस से ?

14 - जनमत का अपमान करते ये 'थाली के बैंगन'

18 - हमारे प्रेरक ग़ज़नवी नहीं बल्कि मोहम्मद के घराने वाले हैं

19 - सनातन धर्म की रक्षा के लिए भदरी नरेश का योगी से टकराव

22 - मेट्रो के उद्घाटन में भाजपा का मुँह बंद किया कमलनाथ ने

31 - 'मन की बात'

36 - भोपाल में वृक्षारोपण की संवेदनशील

38 - कामकाजी महिलाएं हैं ज्यादा मोटापे का शिकार

73 वें स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले से बोले प्रधानमंत्री मोदी

130 करोड़ नागरिकों के चेहरे के भाव से मिलती है 'नई ताकत'

अनुच्छेद 370 का हटना, 35 ए का हटना सरदार वल्लभ भाई पटेल के सपनों को साकार करने की दिशा में एक अहम कदम

मेरे प्यारे देशवासियो, स्वतंत्रता के इस पवित्र दिवस पर, सभी देशवासियों को अनेक-अनेक शुभकामनाएं।

आज रक्षा-बंधन का भी पर्व है। सदियों से चली आई यह परंपरा भाई-बहन के प्यार को अभिव्यक्त करती है। मैं सभी देशवासियों को, सभी भाइयों-बहनों को इस रक्षा-बंधन के पावन पर्व पर अनेक-अनेक शुभकामनाएं देता हूं। स्नेह से भरा यह पर्व हमारे सभी भाइयों-बहनों के जीवन में आशा-आकांक्षाओं को पूर्ण करने वाला हो, सपनों को साकार करने वाला होऔर स्नेह की सरिता को बढ़ाने वाला हो।

आज जब देश आजादी का पर्व मना रहा है, उसी समय देश के अनेक भागों में अति वर्षा के कारण, बाढ़ के कारण लोग कठिनाइयों से जूझ रहे हैं। कइयों ने अपने स्वजन खोए हैं। मैं उनके प्रति अपनी संवेदनाएं प्रकट करता हूं और राज्य सरकार, केंद्र सरकार, एनडीआरएफ सभी संगठन, नागरिकों का कष्ट कम कैसे हो, सामान्य परिस्थिति जल्दी कैसे लौटे, उसके लिए दिन-रात प्रयास कर रहे हैं।

आज जब हम आजादी के इस पवित्र दिवस को मना रहे हैं, तब देश की आजादी के लिए जिन्होंने अपना जीवन दे दिया, जिन्होंने अपनी जवानी दे दी, जिन्होंने जवानी जेलों में काट दी, जिन्होंने फांसी के फंदे को चूम लिया, जिन्होंने सत्याग्रह के माध्यम से आजादी के बिगुल में अहिंसा के स्वर भर दिए। पूज्य बापू के नेतृत्व में देश ने आजादी पाई।मैं आज देश के आजादी के उन सभी बलिदानियों को, त्यागी-तपस्वियों को आदरपूर्वक नमन करता हूं।

उसी प्रकार से देश आजाद होने के बाद इतने वर्षों में देश की शांति के लिए, सुरक्षा के लिए, समृद्धि के लिए लक्षावधी लोगों ने अपना योगदान दिया है। मैं आज आजाद भारत के विकास के लिए, शांति के लिए, समृद्धि के लिए जनसामान्य की आशाओं-आकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए जिन-जिन लोगों ने योगदान किया है, आज मैं उनको भी नमन करता हूं।

नई सरकार बनने के बाद लालकिले से मुझे आज फिर से एक बार आप सबका गौरव करने का अवसर मिला है। अभी इस नई सरकार को दस हफ्ते भी नहीं हुए हैं, लेकिन दस हफ्ते के छोटे से कार्यकाल में भी सभी क्षेत्रों में, सभी दिशाओं मेंहर प्रकार के प्रयासों को बल दिया गया है, नये आयाम दिए गए हैं और सामान्य जनता ने जिन आशा, अपेक्षा, आकांक्षाओं के साथ हमें सेवा करने का मौका दिया है, उसको पूर्ण करने में एक पल का भी विलंब किये बिना,हम पूरे सामर्थ्य के साथ, पूरे समर्पण भाव के साथ, आपकी सेवा में मग्न हैं।

दस हफ्ते के भीतर-भीतर ही अनुच्छेद 370 का हटना, 35 का हटना सरदार वल्लभ भाई पटेल के सपनों को साकार करने की दिशा में एक अहम कदम है।दस हफ्ते के भीतर-भीतर हमारे मुस्लिम माताओं और बहनों को उनका अधिकार दिलाने के लिए तीन तलाक के खिलाफ कानून बनाना, आतंक से जुड़े कानूनों में आमूल-चूल परिवर्तन करके उसको एक नई ताकत देने का, आतंकवाद के खिलाफ लड़ने के संकल्प को और मजबूत करने का काम, हमारे किसान भाइयों-बहनों को प्रधानमंत्री सम्मान निधि के तहत 90 हजार करोड़ रुपया किसानों के खाते में transfer करने का एक महत्वपूर्ण काम आगे बढ़ा है।

हमारे किसान भाई-बहन, हमारे छोटे व्यापारी भाई-बहन, उनकोकभी कल्पना नहीं थी कि कभी उनके जीवन में भी पेंशन की व्यवस्था हो सकती है। साठ साल की आयु के बाद वे भी सम्मान के साथ जी सकते हैं। शरीर जब ज्यादा काम करने के लिए मदद न करता हो, उस समय कोई सहारा

मिल जाए, वैसी पेंशन योजना को भी लागू करने का काम कर दिया है।

जल संकट की चर्चा बहुत होती है, भविष्य जल संकट से गुजरेगा, यह भी चर्चा होती है, उन चीजों को पहले से ही सोच करके, केंद्र और राज्य मिलकर के योजनाएं बनाएं इसके लिए एक अलग जल-शक्ति मंत्रालय का भी निर्माण किया गया है।

हमारे देश में बहुत बड़ी तादाद में डॉक्टरों की जरूरत है, आरोग्य की सुविधाएं और व्यवस्थाओं की आवश्यकता है। उसको पूर्ण करने के लिए नए कानूनों की जरूरत है, नई व्यवस्थाओं की जरूरत है, नई सोच की जरूरत है, देश के नौजवानों को डॉक्टर बनने के लिए अवसर देने की जरूरत है। उन चीजों को ध्यान में रखते हुए Medical Education को पारदर्शी बनाने के लिए अनेक महत्वपूर्ण कानून हमने बनाए हैं, महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं।

आज पूरे विश्व में बच्चों के साथ अत्याचार की घटनाएं सुनते हैं। भारत भी हमारे छोटे-छोटे बालकों को असहाय नहीं छोड़ सकता है। उन बालकों की सुरक्षा के लिए कठोर कानून प्रबंधन आवश्यक था। हमने इस काम को भी पूर्ण कर लिया है।

भाइयो-बहनो, 2014 से 2019, पांच साल मुझे सेवा करने का आपने मौका दिया। अनेक चीजें ऐसी थीं... सामान्य मानव अपनी निजी आवश्यकताओं के लिए जूझता था। हमनें पांच साल लगातार प्रयास किया कि हमारे नागरिकों की जो रोजमर्रा की जिदंगी की आवश्यकताएं हैं, खासतौर पर गांव की, गरीब की, किसान की, दलित की, पीड़ित की, शोषित की, वंचित की, आदिवासी की,उन पर बल देने का हमने प्रयास किया है और गाड़ी को हम ट्रैक पर लाए और उस दिशा में आज बहुत तेजी से काम चल रहा है। लेकिन वक्त बदलता है। अगर 2014 से 2019 आवश्यकताओं की पूर्ति का दौर था, तो 2019 के बाद का कालखंड देशवासियों की आकांक्षाओं की पूर्ति का कालखंड है, उनके सपनों को साकार करने का कालखंड है और इसलिए 21वीं सदी का भारतकैसा हो, कितनी तेज गति से चलता हो, कितनी व्यापकता से काम करता हो, कितनी ऊंचाई से सोचता हो,इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए, आने वाले पांच साल के कार्यकाल को आगे बढ़ाने का एक खाका हम तैयार करके एक के बाद एक कदम उठा रहे हैं।

2014 में, मैं देश के लिए नया था। 2013-14 में चुनाव के पूर्व, भारत-भ्रमण करके मैं देशवासियों की भावनाओं को समझने का प्रयास कर रहा था।लेकिन हर किसी के चेहरे पर एक निराशा थी, एक आशंका थी।लोग सोचते थे क्या यह देश बदल सकता है? क्या सरकारें बदलने से देश बदल जाएगा? एक निराशा जन-सामान्य के मन में घर कर गई थी। लम्बे कालखंड के अनुभव का यह परिणाम था- आशाएं लम्बी टिकती नहीं थीं, पल-दो पल में आशा, निराशा के गर्त में डूब जाती थी। लेकिन जब 2019 में, पांच साल के कठोर परिश्रम के बाद जन-सामान्य के लिए एकमात्र समर्पण भाव के साथ, दिल-दिमाग में सिर्फ और सिर्फ मेरा देश, दिल-दिमाग में सिर्फ और सिर्फ मेरे देश के करोड़ों देशवासी इस भावना को लेकर चलते रहे, पल-पल उसी के लिए खपाते रहेऔर जब 2019 में गए, मैं हैरान था। देशवासियों का मिजाज बदल चुका था। निराशा, आशा में बदल चुकी थी, सपने, संकल्पों से जुड़ चुके थे, सिद्धि सामने नजर आ रही थी और सामान्य मानव का एक ही स्वर था- हां, मेरा देश बदल सकता है। सामान्य मानव की एक ही गूंज थी- हां, हम भी देश बदल सकते हैं, हम पीछे नहीं रह सकते।

130 करोड़ नागरिकों के चेहरे के ये भाव, भावनाओं की यह गूंज हमें नई ताकत, नया विश्वास देती है।

सबका साथ-सबका विकास का मंत्र ले करके चले थे, लेकिन पांच साल के भीतर-भीतर ही देशवासियों ने सबके विश्वास के रंग से पूरे माहौल को रंग दिया। ये सबका विश्वास ही पांच सालों में पैदा हुआ जो हमें आने वाले दिनों में और अधिक सामर्थ्य के साथ देशवासियों की सेवा करने के लिए प्रेरित करता रहेगा। इस चुनाव में मैंने देखा थाऔर मैंने उस समय भी कहा था- न कोई राजनेता चुनाव लड़ रहा था, न कोई राजनीतिक दल चुनाव लड़ रहा था, न मोदी चुनाव लड़ रहा था, न मोदी के साथी चुनाव लड़ रहे थे, देश का आम आदमी, जनता-जनार्दन चुनाव लड़ रही थी, 130 करोड़ देशवासी चुनाव लड़ रहे थे, अपने सपनों के लिए लड़ रहे थे। लोकतंत्र का सही स्वरूप इस चुनाव में नजर आ रहा था।

मेरे प्यारे देशवासियो, समस्याओं का समाधान- इसके साथ-साथ सपनों, संकल्प और सिद्धि का कालखंड- हमें अब साथ-साथ चलना है। यह साफ बात है कि समस्याओं का जब समाधान होता है, तो स्वावलंबन का भाव पैदा होता है। समाधान से स्वावलंबन की ओर गतिबढ़ती है। जब स्वावलंबन होता है, तो अपने-आप स्वाभिमान उजागर होता है और स्वाभिमान का सामर्थ्य बहुत होता है। आत्म-सम्मान का सामर्थ्य किसी से भी ज्यादा होता है और जब समाधान हो, संकल्प हो, सामर्थ्य हो, स्वाभिमान हो,तब सफलता के आड़े कुछ नहीं आ सकता है और आज देश उस स्वाभिमान के साथ सफलता की नई ऊंचाइयों को पार करने के लिये, आगे बढ़ने के लिये कृत-निश्चय है। जब हम समस्याओं का समाधान देखते हैं, तो टुकड़ों में नहीं सोचना चाहिए। तकलीफें आयेंगी, एक साथ वाह-वाही के लिये हाथ लगाकर छोड़ देना, यह तरीका देश के सपनों को साकार करने के काम नहीं आयेगा। हमें समस्याओं को जड़ों से मिटाने की कोशिश करनी होगी। आपने देखा होगा हमारी मुस्लिम बेटियां, हमारी बहनें, उनके सिर पर तीन तलाक की तलवार लटकती थी, वे डरी हुई जिंदगी जीती थीं। तीन तलाक की शिकार शायद नहीं हुई हों, लेकिन कभी भी तीन तलाक की शिकार हो सकती हैं, यह भय उनको जीने नहीं देता था, उनको मजबूर कर देता था। दुनिया के कई देश, इस्लामिक देश, उन्होंने भी इस कुप्रथा को हमसे बहुत पहले खत्म कर दिया, लेकिन किसी न किसी कारण से हमारी इन मुस्लिम माताओं-बहनों को हक देने में हम हिचकिचाते थे। अगर इस देश में, हम सती प्रथा को खत्म कर सकते हैं, हम भ्रूण हत्या को खत्म करने के कानून बना सकते हैं, अगर हम बाल-विवाह के खिलाफ आवाज उठा सकते हैं, हम दहेज में लेन-देन की प्रथा के खिलाफ कठोर कदम उठा सकते हैं, तो क्यों न हम तीन तलाक के खिलाफ भी आवाज उठाएं और इसलिए भारत के लोकतंत्र की पकड़ते हुये, भारत के संविधान की भावना का, बाबा साहेब अंबेडकर की भावना का आदर करते हुये, हमारी मुस्लिम बहनों को समान अधिकार मिले, उनके अंदर भी एक नया विश्वास पैदा हो, भारत की विकास यात्रा में वे भी सक्रिय भागीदार बनें, इसलिये हमने यह महत्वपूर्ण निर्णय लिया। ये निर्णय राजनीति के तराजू से तौलने के निर्णय नहीं होते हैं, सदियों तक माताओं-बहनों के जीवन की रक्षा की गारंटी देते हैं।

उसी प्रकार से मैं एक दूसरा उदाहरण देना चाहता हूं - अनुच्छेद 370, 35। क्या कारण था? इस सरकार की पहचान है - हम समस्याओं को टालते भी नहीं हैं और न ही हम समस्याओं को पालते हैं। अब समस्याओं को टालने का भी वक्त नहीं है, अब समस्याओं का पालने का भी वक्त नहीं है। जो काम पिछले 70 साल में नहीं हुआ, नई सरकार बनने के बाद, 70 दिन के भीतर-भीतर अनुच्छेद 370 और 35ए को हटाने का काम भारत के दोनों सदनों ने, राज्यसभा और लोकसभा ने, दो-तिहाई बहुमत से पारित कर दिया। इसका मतलब यह हुआ कि हर किसी के दिल में यह बात थी, लेकिन प्रारंभ कौन करे, आगे कौन आये, शायद उसी का इंतजार था और देशवासियों ने मुझे यह काम दिया और जो काम आपने मुझे दिया मैं वही करने के लिए आया हूं। मेरा अपना कुछ नहीं है।

हम जम्मू-कश्मीर reorganisation की दिशा में भी आगे बढ़े। 70 साल हर किसी ने कुछ-न-कुछ प्रयास किया, हर सरकार ने कोई-न-कोई प्रयास किया लेकिन इच्छित परिणाम नहीं मिले और जब इच्छित परिणाम नहीं मिले हैं, तो नये सिरे से सोचने की, नये सिरे से कदम बढ़ाने की आवश्यकता होती है। और जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के नागरिकों की आशा-आकांक्षा पूरी हो, यह हम सब का दायित्व है। उनके सपनों को नये पंख मिले, यह हम सब की जिम्मेदारी है। और उसके लिए 130 करोड़ देशवासियों को इस जिम्मेदारी को उठाना है और इस जिम्मेदारी को पूरा करने के लिए, जो भी रुकावटें सामने आई हैं, उनको दूर करने का हमने प्रयास किया है।

पिछले 70 साल में इन व्यवस्थाओं ने अलगाववाद को बल दिया है, आतंकवाद को जन्म दिया है, परिवारवाद को पोसा है और एक प्रकार से भ्रष्टाचार और भेदभाव की नींव को मजबूती देने का ही काम किया है। और इसलिएवहां की महिलाओं को अधिकार मिलें। वहां के मेरे दलित भाइयो-बहनो को, देश के दलितों को जो अधिकार मिलता था, वो उन्हें

नहीं मिलता था। हमारे देश के जनजातीय समूहों को, tribals को जो अधिकार मिलते हैं, वो उनको भी मिलने चाहिए। वहां हमारे कई ऐसे समाज और व्यवस्था के लोग चाहे वह गुर्जर हों, बकरवाल हों, गद्दी हों, सिप्पी हों, बाल्टी हों - ऐसी अनेक जनजातियां, उनको राजनीतिक अधिकार भी मिलने चाहिए। उसे देने की दिशा में, हम हैरान हो जाएंगे, वहां के हमारे सफाई कर्मचारी भाइयों और बहनों पर कानूनी रोक लगा दी गई थीं। उनके सपनों को कुचल दिया गया था। आज हमने उनको यह आजादी देने का काम किया है।

भारत विभाजन हुआ, लाखों-करोड़ों लोग विस्थापित होकर आये उनका कोई गुनाह नहीं था लेकिन जो जम्मू-कश्मीर मेंआकर बसे, उनको मानवीय अधिकार भी नहीं मिले, नागरिक के अधिकार भी नहीं मिले। जम्मू-कश्मीर के अन्दर मेरे पहाड़ी भाई-बहन भी हैं। उनकी भी चिंता करने की दिशा में हम कदम उठाना चाहते हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, जम्मू-कश्मीर और लद्दाख सुख-समृद्धि और शांति के लिए भारत के लिए प्रेरक बन सकता है। भारत की विकास यात्रा में बहुत बड़ा योगदान दे सकता है। उसके पुराने उन महान दिवसों को लौटाने का हम सब प्रयास करें। उन प्रयासों को लेकर यह जो नई व्यवस्था बनी है वह सीधे-सीधे नागरिकों के हितों के लिए काम करने के लिए सुविधा पैदा करेगी। अब देश का, जम्मू-कश्मीर का सामान्य नागरिक भी दिल्ली सरकार को पूछ सकता है। उसको बीच में कोई रुकावटें नहीं आएंगी। यह सीधी-सीधी व्यवस्था आज हम कर पाए हैं। लेकिन जब पूरा देश, सभी राजनीतिक दलों के भीतर भी, एक भी राजनीतिक दल अपवाद नहीं हैं, अनुच्छेद 370,35ए को हटाने के लिए कोई प्रखर रूप से तो कोई मूक रूप से समर्थन देता रहा है। लेकिन राजनीति के गलियारों में चुनाव के तराजू से तोलने वाले कुछ लोग 370 के पक्ष में कुछ न कुछ कहते रहते हैं। जो लोग 370 के पक्ष में वकालत करते हैं, उनको देश पूछ रहा है, अगर ये अनुच्छेद 370, यह 35ए इतना महत्वपूर्ण था,इतना अनिवार्य था, उसी से भाग्य बदलने वाला थातो 70 साल तक इतना भारी बहुमत होने के बावजूद आप लोगों ने उसको permanent क्यों नहीं किया? Temporary क्यों बनाए रखा?अगर इतना conviction था, तो आगे आते और permanent कर देते। लेकिन इसका मतलब यह है, आप भी जानते थेजो तय हुआ है, वह सही नहीं हुआ है, लेकिन सुधार करने की आप में हिम्मत नहीं थी, इरादा नहीं था। राजनीतिक भविष्य पर सवालिया निशान लगते थे। मेरे लिए देश का भविष्य ही सब कुछ है, राजनीतिक भविष्य कुछ नहीं होता है।

हमारे संविधान निर्माताओं ने, सरदार वल्लभ भाई पटेल जैसे महापुरुषों ने, देश की एकता के लिए, राजकीय एकीकरण के लिए उस कठिन समय में भी महत्वपूर्ण फैसले लिए, हिम्मत के साथ फैसले लिए। देश के एकीकरण का सफल प्रयास किया। लेकिन अनुच्छेद 370 के कारण, 35 ए के कारण कुछ रुकावटें भी आई हैं।

आज लाल किले सेमैं जब देश को संबोधित कर रहा हूं, मैं यह गर्व के साथ कहता हूं कि आज हर हिन्दुस्तानी कह सकता है- One Nation, One Constitution और हम सरदार साहब का एक भारत-श्रेष्ठ भारत, इसी सपने को चरितार्थ करने में लगे हुए हैं। तब ये साफ-साफ बनता है कि हम ऐसी व्यवस्थाओं को विकसित करेंजो देश की एकता को बल दें, देश को जोड़ने के लिए cementing force के रूप में उभर करके आएं और यह प्रक्रिया निरंतर चलनी चाहिए। वह एक समय के लिए नहीं होती है, अविरल होनी चाहिए।

त्रस्ञ्ज के माध्यम सेहमने One Nation, One Ta&, उस सपने को साकार किया है। उसी प्रकार सेपिछले दिनों ऊर्जा के क्षेत्र में One Nation, One Grid इस काम को भी हमने सफलतापूर्वक पार किया।

उसी प्रकार से One Nation, One Mobility Card - इस व्यवस्था को भी हमने विकसित किया है। और आज देश में व्यापक रूप से चर्चा चल रही है, 'एक देश, एक साथ चुनाव''। यह चर्चा होनी चाहिए, लोकतांत्रिक तरीके से होनी चाहिए और कभी न कभी 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत'' के सपनों को साकार करने के लिए और भी ऐसी नई चीजों को हमें जोड़ना होगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, देश को नई ऊंचाइयों को पार करना है, देश को विश्व के अंदर अपना स्थान प्रस्थापित करना है। तो हमें अपने घर में भी गरीबी से मुक्ति के भान को बल देना ही होगा। यह किसी के लिए उपकार नहीं है। भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए, हमें गरीबी से मुक्त होना ही होगा। गत पांच वर्ष में गरीबी कम करने की दिशा में, लोग गरीबी से बाहर आएं, बहुत सफल प्रयास हुए हैं। पहले की तुलना में ज्यादा तेज गति से और ज्यादा व्यापकता से इस दिशा में सफलता प्राप्त हुई है।लेकिन फिर भी गरीब व्यक्ति, सम्मान अगर उसको प्राप्त हो जाता है, उसका स्वाभिमान जग जाता है तो वह गरीबी से लड़ने के लिए सरकार का इंतजार नहीं करेगा।वो अपने सामर्थ्य से गरीबी को परास्त करने के लिए आएगा। हम में से किसी से भी ज्यादा विपरीत परिस्थितियों से जूझने की ताकत अगर किसी में है, तो मेरे गरीब भाइयों-बहनों में है। कितनी ही ठंड क्यों न हो, वो मुट्ठी बंद करके गुजारा कर सकता है। उसके भीतर यह सामर्थ्य है। आइये उस सामर्थ्य के हम पुजारी बनें और इसलिए उसकी रोजमर्रा की जिंदगी की कठिनाइयों को हम दूर करें।

क्या कारण है कि मेरे गरीब के पास शौचालय न हो, घर में बिजली न हो, रहने के लिए घर न हो, पानी की सुविधा न हो, बैंक में खाता न हो, कर्ज लेने के लिए साहूकारों के घर जा करके एक प्रकार से सब कुछ गिरवी रखना पड़ता हो। आइये, गरीबों के आत्म-सम्मान, आत्म-विश्वास को, उनके स्वाभिमान को ही आगे बढ़ाने के लिए, सामर्थ्य देने के लिए हम प्रयास करें।

भाइयो-बहनो, आजादी के 70 साल हो गए। बहुत सारे काम सब सरकारों ने अपने-अपने तरीके से किए हैं। सरकार किसी भी दल की क्यों न हो, केंद्र की हो, राज्य की हो, हर किसी ने अपने-अपने तरीके से प्रयास किए हैं। लेकिन यह भी सच्चाई है कि आज हिन्दुस्तान में करीब-करीब आधे घर ऐसे हैं, जिन घरों में पीने का पानी उपलब्ध नहीं है। उनको पीने का पानी प्राप्त करने के लिए मशक्कत करनी पड़ती है। माताओं-बहनों कोसिर पर बोझ उठा करके, मटके लेकरदो-दो, तीन-तीन, पांच-पांचकिलोमीटर जाना पड़ता है। जीवन का बहुत सारा हिस्सा सिर्फ पानी में खप जाता हैऔर इसलिएइस सरकार ने एक विशेष काम की तरफ बल देने का निर्णय लिया है और वह है - हमारे हर घर में जल कैसे पहुंचे? हर घर को जल कैसे मिले? पीने का शुद्ध पानी कैसे मिले? और इसलिए आज मैं लाल किले से घोषणा करता हूं कि हम आने वाले दिनों में जल-जीवन मिशन को आगे ले करके बढ़ेंगे। यह जल-जीवन मिशन, इसके लिए केंद्र और राज्य सरकार साथ मिलकर

काम करेंगे और आने वाले वर्षों में साढ़े तीन लाख करोड़ रुपये से भी ज्यादा रकम इस जल-जीवन मिशनके लिए खर्च करने का हमने संकल्प लिया है। जल संचय हो, जल सिंचन हो, वर्षा की बूंद-बूंद पानी को रोकने का काम हो, समुद्री पानी को करने का विषय हो, पानी बचाने का अभियान हो, पानी के प्रति सामान्य से सामान्य नागरिक सजग बने, संवेदनशील बने, पानी का महत्व समझें, हमारे शिक्षा कर्मों में भीबच्चों को भी बचपन से ही पानी के महत्व की शिक्षा दी जाए। पानी संग्रह के लिए, पानी के स्रोतों को पुनर्जीवित करने के लिए हम लगातार प्रयास करें और हम इस विश्वास के साथ आगे बढ़ें कि पानी के क्षेत्र में पिछले 70 साल में जो काम हुआ है, हमें 5 साल में चार गुना से भी ज्यादा उस काम को करना होगा। अब हम ज्यादा इंतजार नहीं कर सकते और इस देश के महान संत, सैकड़ों साल पहले,संत तिरुवल्लुवर जी ने उस समय एक महत्वपूर्ण बात कही थी, सैकड़ों साल पहले, तब तो शायद किसी ने पानी के संकट के बारे में सोचा भी नहीं होगा, पानी के महत्वके बारे में भी नहीं सोचा होगा, और तब संत तिरुवल्लुवर जी ने कहा था नीर इन्ड्री अमियादू, उल्ग, नीर इन्ड्री अमियादू, उल्ग÷ यानि जब पानी समाप्त हो जाता है, तो प्रकृति का कार्य थम जाता है, रूक जाता है। एक प्रकार से विनाश प्रारंभ हो जाता है।

मेरा जन्म गुजरात में हुआ, गुजरात में तीर्थ क्षेत्र है महुडी, जो उत्तरी गुजरात में है। जैन समुदाय के लोग वहां आते-जाते रहते हैं। आज से करीब 100 साल पहले वहां एक जैन मुनि हुए, वह किसान के घर में पैदा हुए थे, किसान थे, खेत में काम करते थे लेकिन जैन परंपरा के साथ जुड़ करके वह दीक्षित हुए और जैन-मुनि बने।

करीब 100 साल पहले वह लिखकर गए हैं। बुद्धि सागर जी महाराज ने लिखा है कि एक दिन ऐसा आएगा, जब पानी किराने की दुकान में बिकेगा। आप कल्पना कर सकते हैं 100 साल पहले एक संत लिख कर गए कि पानी किराने की दुकान में बिकेगा और आज हम पीने का पानी किराने की दुकान से लेते हैं। हम कहां से कहां पहुंच गए।

मेरे प्यारे देशवासियो, न हमें थकना है, न हमें थमना है, न हमें रूकना है और न हमें आगे बढ़ने से हिचकिचाना है। यह अभियान सरकारी नहीं बनना चाहिए। जल संचय का यह अभियान, जैसे स्वच्छता का अभियान चला था, जन सामान्य का अभियान बनना चाहिए। जन सामान्य के आदर्शों को लेकर, जन सामान्य की अपेक्षाओं को लेकर, जन सामान्य के सामर्थ्य को लेकर हमें आगे बढ़ना है।

मेरे प्यारे देशवासियो, अब हमारा देश उस दौर में पहुंचा है जिसमें बहुत-सी बातों से अब हमें अपने आपको छुपाए रखने की जरूरत नहीं है। चुनौतियों को सामने से स्वीकार करने का वक्त आ चुका है। कभी राजनीतिक नफा-नुकसान के इरादे से हम निर्णय करते हैं लेकिन इससे देश की भावी पीढ़ी का बहुत नुकसान होता है।

वैसा ही एक विषय है जिसको मैं आज लाल किले से स्पष्ट करना चाहता हूं। और वह विषय है, हमारे यहां हो रहा बेतहाशा जनसंख्या विस्फोट।यह जनसंख्या विस्फोट हमारे लिए, हमारी आने वाली पीढ़ी के लिए अनेक नए संकट पैदा करता है लेकिन यह बात माननी होगी कि हमारे देश में एक जागरूक वर्ग है, जो इस बात को भली-भांति समझता है। वे अपने घर में शिशु को जन्म देने से पहले भली-भांति सोचता है कि मैं कहीं उसके साथ अन्याय तो नहीं कर दूंगा। उसकी जो मानवीय आवश्यकताएं हैं उनकी पूर्ति मैं कर पाऊंगा कि नहीं कर पाऊंगा, उसके जो सपने हैं, वो सपने पूरा करने के लिए मैं अपनी भूमिका अदा कर पाऊंगा कि नहीं कर पाऊंगा। इन सारे parameters से अपने परिवार का लेखा-जोखा लेकर हमारे देश में आज भी स्वः प्रेरणा से एक छोटा वर्ग परिवार को सीमित करके, अपने परिवार का भी भला करता है और देश का भला करने में बहुत बड़ा योगदान देता है। ये सभी सम्मान के अधिकारी हैं, ये आदर के अधिकारी हैं। छोटा परिवार रखकर भी वह देश भक्ति को ही प्रकट करते हैं। वो देशभक्ति को अभिव्यक्त करते हैं। मैं चाहूंगा कि हम सभी समाज के लोग इनके जीवन को बारीकी से देखें कि उन्होंने अपने परिवार में जनसंख्या वृद्धि से अपने-आपको बचा करके परिवार की कितनी सेवा की है। देखते ही देखते एक दो पीढ़ी नहीं, परिवार कैसे आगे बढ़ता चला गया है, बच्चों ने कैसे शिक्षा पाई है, वह परिवार बीमारी से मुक्त कैसे है, वह परिवार अपनी प्राथमिक आवश्यकताओं को कैसे बढ़िया ढंग से पूरा करता है।हम भी उनसे सीखें और हमारे घर में किसी भी शिशु के आने से पहले हम सोचें कि जो शिशु मेरे घर में आएगा, क्या उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मैंने अपने-आपको तैयार कर लिया है? क्या मैं उसको समाज के भरोसे ही छोड़ दूंगा? मैं उसको उसके नसीब पर ही छोड़ दूंगा? कोई मां-बाप ऐसा नहीं हो सकता है, जो अपने बच्चों को जन्म देकर इस प्रकार की जिंदगी जीने के लिए मजबूर होने दें और इसलिए एक सामाजिक जागरूकता की आवश्यकता है।

जिन लोगों ने यह बहुत बड़ी भूमिका अदा की है, उनके सम्मान की आवश्यकता है, और उन्हीं के प्रयासों के उदाहरण लेकर समाज के बाकी वर्ग, जो अभी भी इससे बाहर हैं, उनको जोड़कर जनसंख्या विस्फोट- इसकी हमें चिंता करनी ही होगी।

सरकारों को भी भिन्न-भिन्न योजनाओं के तहत आगे आना होगा। चाहे राज्य सरकार हो, केंद्र सरकार हो- हर किसी को इस दायित्व को निभाने के लिए कंधे से कंधा मिलाकर चलना होगा। हम अस्वस्थ समाज नहीं सोच सकते, हम अशिक्षित समाज नहीं सोच सकते। 21वीं सदी के भारत मेंसपनों को पूरा करने का सामर्थ्य व्यक्ति से शुरू होता है, परिवार से शुरू होता है लेकिन अगर आबादी शिक्षित नहीं है, तंदुरूस्त नहीं है, तो न ही वह घर सुखी होता है, न ही वह देश सुखी होता है।

जन आबादी शिक्षित हो, सामर्थ्यवान हो, स्वद्वद्यद्यद्दस्त्र हो और अपनी इच्छा और आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए, उपयुक्त माहौल प्राप्त करने के लिए संसाधन उपलब्ध हों, तो मैं समझता हूं कि देश इन बातों को पूर्ण कर सकता है।

मेरे प्यारे देशवासियो, आप भलीभांति जानते हैं कि भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद ने हमारे देश का कल्पना से परे नुकसान किया है और दीमक की तरह हमारे जीवन में घुस गया है। उसको बाहर निकालने के लिए हम लगातार प्रयास कर रहे हैं। सफलताएं भी मिली हैं, लेकिन बीमारी इतनी गहरी है, बीमारी इतनी फैली हुई है कि हमें और अधिक प्रयास, और वह भी सिर्फ सरकारी स्तर पर नहीं, हर स्तर पर करते ही रहना पड़ेगा, और ऐसा निरंतर करते रहना पड़ेगा।एक बार में सारा काम नहीं होता, बुरी आदतें - पुरानी बीमारी जैसी होती हैं, कभी ठीक हो जाती हैं, लेकिन मौका मिलते ही फिर से बीमारी आ जाती हैं। वैसे ही यह एक ऐसी बीमारी है, जिसको हमने निरंतर Technology का उपयोग करते हुए इसको निरस्त करने की दिशा में कई कदम उठाए हैं। हर स्तर पर ईमानदारी और पारदर्शिता को बल मिले, इसके लिए भी भरसक प्रयास किए गए हैं।

आपने देखा होगा पिछले पांच साल में भी, इस बार आते ही सरकार में बैठे हुए अच्छे-अच्छे लोगों की छुट्टी कर दी गई। हमारे इस अभियान में जो रुकावट बनते थे, उनसे कहा गया कि आप अपना कारोबार कर लीजिए, अब देश को आपकी सेवाओं की जरूरत नहीं है।

मैं स्पष्ट मानता हूं, व्यवस्थाओं में बदलाव होना चाहिए, लेकिन साथ-साथ सामाजिक जीवन में भी बदलाव होना चाहिए। सामाजिक जीवन में बदलाव होना चाहिए, उसके साथ-साथ व्यवस्थाओं को चलाने वाले लोगों के दिल-दिमाग में भी बदलाव बहुत अनिवार्य होता है। तभी जाकर हम इच्छित परिणामों को प्राप्त कर सकते हैं।

भाइयो और बहनो, देश आजादी के इतने साल बाद एक प्रकार से परिपक्व हुआ है। हम आजादी के 75 साल मनाने जा रहे हैं। तब यह आजादी सहज संस्कार, सहज स्वभाव, सहज अनुभूति, यह भी आवश्यक होती है। मैं अपने अफसरों के साथ जब बैठता हूं तो एक बात करता हूं, सार्वजनिक रूप से तो बोलता नहीं था लेकिन आज मन कर रहा है तो बोल ही दूं। मैं अपने अफसरों के बीच बार-बार कहता हूं कि क्या आजादी के इतने सालों के बाद रोजमर्रा की जिंदगी में, सरकारों का जो दखल है सामान्य नागरिक के जीवन में, क्या हम उस दखल को कम नहीं कर सकते? खत्म नहीं कर सकते हैं? आजाद भारत का मतलब मेरे लिए यह है कि धीरे-धीरे सरकारेंलोगों की जिंदगी से बाहर आएं, लोग अपनी जिंदगी के निर्णय करने के लिये आगे बढ़ने के लिये, सारे रास्ते उनके लिये खुले होने चाहिए, मन-मर्जी पड़े उस दिशा में, देश के हित में और परिवार की भलाई के लिये स्वयं के सपनों के लियेआगे बढ़ें, ऐसा ई सिस्टम हमको बनाना ही होगा। और इसलिये सरकार का दवाब नहीं होना चाहिए लेकिन साथ-साथ

जहां मुसीबत के पल हों, तो सरकार का अभाव भी नहीं होना चाहिए। न सरकार का दवाब हो, न सरकार का अभाव हो, लेकिन हम सपनों को लेकर आगे बढ़ें। सरकार हमारे एक साथी के रूप मेंहर पल मौजूद हो। जरूरत पड़े तो लगना चाहिए कि हां कोई है, चिंता का विषय नहीं है।क्या उस प्रकार की व्यवस्थाएं हम विकसित कर सकते हैं?

हमने गैर-जरूरी कई कानूनों को खत्म किया है। गत 5 वर्ष में एक प्रकार से मैंने प्रतिदिन एक गैर-जरूरी कानून खत्म किया था। देश के लोगों तक शायद यह बात पहुंची नहीं होगी। हर दिन एक कानून खत्म किया था, करीब-करीब 1450 कानून खत्म किये थे। सामान्य मानव के जीवन से बोझ कम हो। अभी सरकार को 10 हफ्ते हुए, अभी तो इन 10 हफ्तों में 60 ऐसे कानूनों को खत्म कर दिया है।

Ease of living यह आजाद भारत की आवश्यकता है और इसलिये हम Ease of living पर बल देना चाहते हैं, उसी को आगे ले जाना चाहते हैं। आज Ease of doing business में हम काफी प्रगति कर रहे हैं। पहले 50 में पहुंचने का सपना है, उसके लिये कई रिफार्म करने की जरूरत होगी, कई छोटी-मोटी रुकावटें हैं। कोई व्यक्ति छोटा सा उद्योग करना चाहता है या कोई छोटा-सा काम करना चाहता है, तो यहां द्धश्रह्द्ध भरो, उधर form भरो, इधर जाओ, उस office जाओ, सैंकड़ों ऑफिसों में चक्कर लगाने जैसी परेशानियों में उलझा रहता है, उसका मेल ही नहीं बैठता है। इनको खत्म करते-करते, reform करते-करते, केंद्र और राज्यों को भी साथ लेते-लेते, नगरपालिका-महानगरपालिकाओं को भी साथ लेते-लेते, हम Ease of doing business के काम में बहुत कुछ करने में सफल हुये हैं। और दुनिया में भी विश्वास पैदा हुआ है कि भारत जैसा इतना बड़ा Developing देश इतना बड़ा सपना देख सकता है और इतनी बड़ी jump लगा सकता है। Ease of doing business तो एक पड़ाव है, मेरी मंजिल तो है Ease of living - सामान्य मानव के जीवन में उसको सरकारी काम में कोई मशक्कत न करनी पड़े, उसके हक उसको सहज रूप से मिले और इसलिए हमें आगे बढ़ने की जरूरत है, हम उस दिशा में काम करना चाहते हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, हमारा देश आगे बढ़े, लेकिन incremental progress, उसके लिये देश अब ज्यादा इंतजार नहीं कर सकता है, हमें high jump लगानी पड़ेंगी, हमें छलांग लगानी पड़ेगी, हमें हमारी सोच को भी बदलना पड़ेगा। भारत को Global benchmark के बराबर लाने के लिये हमारे आधुनिक infrastructure,उसकी ओर भी जाना पड़ेगा और कोई कुछ भी कहे कोई कुछ भी लिखे, लेकिन सामान्य मानव का सपना अच्छी व्यवस्थाओं का होता है। अच्छी चीज उसे अच्छी लगती हैं, उसकी उसमें रूचि बनती है। और इसलिए हमने तय किया है कि इन कालखंड में 100 लाख करोड़ रुपया आधुनिक Infrastructure के लिए लगाए जाएंगे, जिससे रोजगार भी मिलेगा, जीवन में भी नई व्यवस्था विकसित होंगी जो आवश्यकताओं की पूर्ति भी करेगी। चाहे सागरमाला प्रोजक्ट हो, चाहे भारतमाला प्रोजेक्ट हो, चाहे आधुनिक रेलवे स्टेशन बनाने हों या बस स्टेशन बनाने हों या एयरपोर्ट बनाने हों, चाहे आधुनिक अस्पताल बनाने हों, चाहे विश्व स्तर के educational institutions का निर्माण करना हो, infrastructure की दृष्टि से भी इन सभी चीजों को हम आगे बढ़ाना चाहते हैं। अब देश में seaport की भी आवश्यकता है। सामान्य जीवन का भी मन बदला है। हमें इसे समझना होगा।

पहले एक जमाना था कि अगर कागज पर सिर्फ निर्णय हो जाए कि एक रेलवे स्टेशन फलाना इलाके में बनने वाला है, तो महीनों तक, सालों तक एक सकारात्मक गूंज बनी रहती थी कि चलो हमारे यहां नजदीक में अब नया रेलवे स्टेशन आ रहा है। आज वक्त बदल चुका है। आज सामान्य नागरिक रेलवे स्टेशन मिलने से संतुष्ट नहीं है, वो तुरंत पूछता है, वंदे भारत एक्सप्रेस हमारे इलाके में कब आएगी? उसकी सोच बदल गई है। अगर हम एक बढ़िया से बढ़िया बस स्टेशन बना दें, FIVE STAR रेलवे स्टेशन बना दें तो वहां का नागरिक ये नहीं कहता है साहब आज बहुत बढ़िया काम किया है। वो तुरंत कहता है- साहब हवाई अड्डा कब आएगा? यानी अब उसकी सोच बदल चुकी है। कभी रेलवे के stoppage से संतुष्ट होने वाला मेरा देश का नागरिक बढ़िया से बढ़िया रेलवे स्टेशन मिलने के बाद तुरंत कहता है- साहब बाकी तो ठीक है, हवाई अड्डा कब आएगा?

पहले किसी भी नागरिक को मिलें तो कहता था- साहब, पक्की सड़क कब आएगी? हमारे यहां पक्की सड़क कब बनेगी? आज कोई मिलता है तो तुरंत कहता है- साहब, 4 lane वाला रोड बनेगा कि 6 lane वाला? सिर्फ पक्की सड़क तक वो सीमित रहना नहीं चाहता और मैं मानता हूं आकांक्षी भारत के लिए ये बहुत बड़ी बात होती है।

पहले गांव के बाहर बिजली का खंभा ऐसे ही नीचे लाकर सुला दिया हो तो लोग कहते हैं कि चलो भाई बिजली आई, अभी तो खंभा नीचे पड़ा हुआ है, गाड़ा भी नहीं है। आज बिजली के तार भी लग जाएं, घर में मीटर भी लग जाएं तो वो पूछता है- साहब, 24 घंटे बिजली कब आएगी? अब वो खंभे, तार और मीटर से संतुष्ट नहीं है।

पहले जब मोबाइल आया, तो उनको लगता था मोबाइल फोन आ गया। वो एक संतोष का अनुभव करता था। लेकिन आज वो तुरंत चर्चा करने लगता है कि data की speed क्या है?

ये बदलते हुए मिजाज को, बदलते हुए वक्त को हमें समझना होगा और उसी प्रकार से Global Benchmark के साथ हमें अपने देश को आधुनिक infrastructure के साथ - clean energ हो, gas based economy हो, gas grid ãô, e-mobility हो, ऐसे अनेक क्षेत्रों में हमें आगे बढ़ना है।

मेरे प्यारे देशवासियो, आमतौर पर हमारे देश में सरकारों की पहचान ये बनती रही कि सरकार ने फलाने इलाके के लिए क्या किया, फलाने वर्ग के लिए क्या किया, फलाने समूह के लिए क्या किया? आमतौर पर क्या दिया, कितना दिया, किसको दिया, किसको मिला, उसी के आसपास सरकार और जनमानस चलते रहे और उसको अच्छा भी माना गया। मैं भी, शायद उस समय की मांग रही होगी, आवश्यकता रही होगी लेकिन अब किस को क्या मिला, कैसे मिला, कब मिला, कितना मिला। इन सबके रहते हुए भी हम सब मिल करके देश को कहां ले जाएंगे, हम सब मिल करके देश को कहां पहुंचाएंगे, हम सब मिल करके देश के लिए क्या achieve करेंगे, इन सपनों को ले करके जीना, जूझना और चल पड़ना ये समय की मांग है। और इसलिए 5 Trillion Dollar Economy का सपना संजोया है। 130 करोड़ देशवासी अगर छोटी-छोटी

चीजों को लेकर चल पड़े तो 5 Trillion Dollar Econom4, कई लोंगो को मुश्किल लगता है, वो गलत नहीं हो सकते, लेकिन अगर मुश्किल काम नहीं करेंगे तो देश आगे कैसे बढेगा? मुश्किल चुनौतियों को नहीं उठाएंगे तो चलने का मिजाज़ कहां से बनेगा? मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी हमें हमेशा ऊंचे निशान रखने चाहिए और हमने रखा है। लेकिन वो हवा में नहीं है। आजादी के 70 साल बाद हम दो Trillion Dollar Economy पर पहुंचे थे, 70 साल की विकास यात्रा ने हमें दो Trillion Dollar Economy पर पहुंचाया था। लेकिन 2014 से 2019, पांच साल के भीतर-भीतर हम लोग दो Trillion से तीन Trillion पहुंच गए, एक Trillion Dollar हमने जोड़ दिया। अगर पांच साल में, 70 साल में जो हुआ उसमें इतना बड़ा जम्प लगाया तो आने वाले पांच साल में हम Trillion Dollar Economy बन सकते है, और ये सपना हर हिन्दुस्तानी का होना चाहिए। जब श्वष्श्ठ्ठश्द्व4 बढ़ती है तो जीवन भी बेहतर बनाने की सुविधा बनती है। छोटे-से-छोटे व्यक्ति के सपनों को साकार करने के लिए अवसर पैदा होते हैं। और ये अवसर पैदा करने के लिए देश के आर्थिक क्षेत्र में हमें इस बात को आगे ले जाना है।

जब हम सपना देखते हैं कि देश के किसान की आय दो गुनी होनी चाहिए, जब हम सपना देखते है कि आजादी के 75 साल में हिन्दुस्तान में कोई परिवार, गरीब से गरीब भी, उसका पक्का घर होना चाहिए। जब हम सपना देखते हैं कि आजादी के 75 साल हों तब देश के हर परिवार के पास बिजली होनी चाहिए, जब हम सपना देखते है कि आजादी के 75 साल हो, तब हिन्दुस्तान के हर गांव में Optical Fiber Network & Broadband & Connectivity Long Distance Education की सुविधा हो।

हमारी समुद्री संपत्ति, Blue Economy इस क्षेत्र को हम बल दें। हमारे मछुआरे भाइयों-बहनों को हम ताकत दें। हमारे किसान अन्नदाता है, ऊर्जादाता बनें। हमारे किसान, दुनिया के अंदर हमारे किसानों के द्वारा पैदा की हुई चीजों का डंका क्यों न बजे। इन सपनों को ले करके हम चलना चाहते हैं। हमारे देश को E&port बढ़ाना ही होगा, हम सिर्फ दुनिया, हिन्दुस्तान को बाजार बना करके देखे, हम भी दुनिया के बाजार में पहुंचने के लिए भरसक प्रयास करें।

हमारे हर District में दुनिया के एक-एक देश की जो ताकत होती है, छोटे-छोटे देशों की, वो ताकत हमारे एक-एक District में होती है। हमें इस सामर्थ्य को समझना है, इस सामर्थ्य को हमें Channelize करना है और हमारे हर जिले E&port Hub बनने की दिशा में क्यों न सोचें, हर जिले का अपना Handicraft है, हर जिले के अंदर अपनी-अपनी विशेषताएं हैं। अगर किसी जिले के पास इत्र की पहचान है, तो किसी जिले के पास साड़ियों की पहचान है, किसी जिले के बर्तन मशहूर है, तो किसी जिले में मिठाई मशहूर है। हर एक के पास विविधता है, सामर्थ्य है, हमने Global Market के लिए zero defect, zero effect से उसका manufacturing कैसे हो और इस विविधता से दुनिया को परिचित कराते हुए अगर हम उसके e&port पर बल देंगे, दुनिया के मार्केट को capture करने की दिशा में हम काम करेंगे, तो देश के नौजवानों को रोजगार मिलेगा। हमारे small scale industries को, micro level industries को इसके कारण एक बहुत बड़ी ताकत मिलेगी और हमें उस ताकत को बढ़ाना है।

हमारा देश Tourist Destination के लिए दुनिया के लिए अजूबा हो सकता है, लेकिन किसी न किसी कारण से जितनी तेजी से हमें वह काम करना चाहिए, वो हम नहीं कर पाए हैं। आइये, हम सभी देशवासी तय करें कि हमें देश के tourism पर बल देना है। जब tourism बढ़ता है, कम से कम पूंजीनिवेश में ज्यादा से ज्यादा रोजगार मिलता है। देश की economy को बल मिलता है और दुनियाभर के लोग आज भारत को नये सिरे से देखने के लिए तैयार हैं। हम सोचें कि दुनिया हमारे देश में कैसे आए, हमारे tourism के क्षेत्र को कैसे बल मिले और इसके लिए Tourist Destination की व्यवस्था हो, सामान्य मानव की आमदनी बढ़ाने की बात हो, बेहतर शिक्षा, नये रोजगार के अवसर प्राप्त हों, मध्यम वर्ग के लोगों के बेहतर सपनों को साकार करने के लिए, ऊंची उड़ान के लिए सारे launching pad उनके लिए available होने चाहिए। हमारे वैज्ञानिकों के पास बेहतर संसाधनों की पूरी सुविधा हो, हमारी सेना के पास बेहतर इंतजाम हो, वो भी देश में बना हुआ हो, तो मैं मानता हूं ऐसे अनेक क्षेत्र हैं जो z trillion dollar economy के लिए भारत को एक नई शक्ति दे सकते हैं।

मेरे प्यारे भाइयो-बहनो, आज देश में आर्थिक सिद्धि प्राप्त करने के लिए बहुत ही अनुकूल वातावरण है। जब Government stable होती है, policy predictable होती है, व्यवस्थाएं stable होती है तो दुनिया का भी एक भरोसा बनता है। देश की जनता ने यह काम करके दिखाया है। विश्व भी भारत की political stability को बड़े गर्व और आदर के साथ देख रहा है। हमें इस अवसर को जाने नहीं देना चाहिए। आज विश्व हमारे साथ व्यापार करने को उत्सुक है। वह हमारे साथ जुड़ना चाहता है। आज हमारे लिए गर्व का विषय है कि महंगाई को control करते हुए हम विकास दर को बढ़ाने वाले एक महत्वपूर्ण समीकरण को ले करके चले हैं। कभी विकास दर तो बढ़ जाती है, लेकिन महंगाई control में नहीं रहती है। कभी महंगाई बढ़ जाती है तो विकास दर का ठिकाना नहीं होता है। लेकिन यह ऐसी सरकार है जिसने महंगाई को control भी किया और विकास दर को आगे भी बढ़ाया।

हमारे अर्थव्यवस्था के fundamentals बहुत मजबूत हैं। यह मजबूती हमें आगे ले जाने के लिए भरोसा देती है। उसी प्रकार से जीएसटी जैसी व्यवस्था विकसित करके, IBC जैसे ह्द्गद्धश्ह्द्ध लाना अपने आप में एक नया विश्वास पैदा करना चाहते हैं। हमारे देश में उत्पादन बढ़े, हमारी प्राकृतिक संपदा की processing बढ़ें, value addition हो, value addition वाली चीजें दुनिया के अंदर e&port हों और दुनिया के अनेक देशों तक e&port हों। हम क्यों न सपना देखें कि दुनिया का कोई देश ऐसा नही होगा, जहां कोई न कोई चीज भारत से न जाती हों, हिन्दुस्तान का कोई जिला ऐसा नहीं होगा जहां से कुछ न कुछ e&port न होता हो। अगर इन दोनों चीजों को लेकर हम चले, तो हम आमदनी भी बढ़ा सकते हैं। हमारी कंपनियां, हमारे उद्यमी वे भी दुनिया के बाजार में जाने के सपने देखते हैं। दुनिया के बाजार में जाकर भारत के रुतबे को वहां आवाज देने की ताकत दें, हमारे निवेशक ज्यादा कमाएं, हमारे निवेशक ज्यादा निवेश करें, हमारे निवेशक ज्यादा रोजगार पैदा करें - इसको प्रोत्साहन

देने के लिए हम पूरी तरह से आगे आने को तैयार हैं। हमारे देश में कुछ ऐसी गलत मान्यताओं ने घर कर लिया है। उन मान्यताओं से बाहर निकलना पड़ेगा। जो देश की wealth create करता है, जो देश की wealth creation contribute करता है, वे सब देश की सेवा कर रहे हैं। हम wealth creator को आशंका की नजरों से न देखें,उनके प्रति हीन भाव से न देखें।आवश्यकता है देश में wealth create करने वालों का भी उतना ही मान-सम्मान और प्रोत्साहन होना चाहिए। उनका गौरव बढ़ना चाहिए और wealth create नहीं होगी तो wealth distribute भी नहीं होगी। अगर wealth distribute नहीं होगी तो देश के गरीब आदमी की भलाई नहीं होगी। और इसलिए तो wealth creation, यह भी हमारे जैसे देश के लिए एक महत्वपूर्ण अहमियत रखता है और उसको भी हमें आगे ले जाना है। जो लोग wealth create करने में लगे हैं, मेरे लिए वह भी हमारे देश की wealth हैं। उनका सम्मान और उनका गौरव इस कदम को नई ताकत देगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, आज शांति और सुरक्षा विकास के अनिवार्य पहलू हैं। दुनिया आज असुरक्षा से घिरी हुई है। दुनिया के किसी न किसी भाग में, किसी न किसी रूप में मौत का साया मंडरा रहा है। विश्व शांति की समृद्धि के लिए भारत को अपनी भूमिका अदा करनी होगी। वैश्विक परिवेश में भारत मूकदर्शक बनकर नहीं रह सकता है और भारत आतंक फैलाने वालों के खिलाफ मजबूती के साथ लड़ रहा है। विश्व के किसी भी कोने में आतंक की घटना मानवतावाद के खिलाफ छेड़ा हुआ युद्ध है। इसलिए यह आह्वान है कि विश्वभर की मानवतावादी शक्तियां एक हों। आतंकवाद को पनाह देने वाले, आतंकवाद को प्रोत्साहन देने वाले, आतंकवाद को करने वाले, ऐसी सारी ताकतों को दुनिया के सामने उनके सही स्वरूप में प्रस्तुत करते हुए दुनिया की ताकत को जोड़कर आतंकवाद को नष्ट करने के प्रयासों में भारत अपनी भूमिका अदा करें, हम यही चाहते हैं।

कुछ लोगों ने सिर्फ भारत को ही नहीं हमारे पड़ोस के देशों को भी आतंकवाद से तबाह करके रखा हुआ है। बांग्लादेश भी आतंकवाद से जूझ रहा है, अफगानिस्तान भी आतंकवाद से जूझ रहा है। श्रीलंका के अंदर चर्च में बैठे हुए निर्दोष लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया। कितनी बड़ी दर्दनाक बाते हैं और इसलिए आतंकवाद के खिलाफ जब हम लड़ाई लड़ते हैं तब हम इस पूरे भू-भाग की शांति और सुरक्षा के लिए भी हमारी भूमिका अदा करने के लिए भी सक्रिय काम कर रहे हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, हम लोग भाग्यवान हैं कि हम एक ऐसे कालखंड में जन्मे हैं, हम एक ऐसे कालखंड में जी रहे हैं, हम एक ऐसे कालखंड में हैं जब हम कुछ न कुछ करने का सामर्थ्य रखते हैं। कभी-कभी मन में हमेशा रहता है कि जब आजादी की जंग चल रही थी, भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरू जैसे महापुरुष अपने बलिदान के लिए स्पर्धा कर रहे थे। महात्मा गांधी के नेतृत्व में आजादी के दीवाने घर-घर, गली-गली जा करके आजादी के सपनों का साकार करने के लिए देश को जगा रहे थे। हम उस समय नहीं थे, हम पैदा नहीं हुए थे, देश के लिए हमें मरने का मौका नहीं मिला,लेकिन देश के लिए जीने का मौका जरूर मिला है। और ये सौभाग्य है कि ये कालखंड ऐसा है, ये वर्ष हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। पूज्य बापू महात्मा गांधी, इनकी 150वीं जन्म-जयंती का ये पर्व है। ऐसे अवसर हमें अपने कालखंड में मिले, ये अपने-आप में हमारा सौभाग्य है। और दूसरा हमारी आजादी के 75 साल, देश की आजादी के लिए मर-मिटने वालों का स्मरण हमें कुछ करने की प्रेरणा देता है। इस अवसर को हमें खोने नहीं देना है। 130 करोड़ देशवासियों के हृदय में महात्मा गांधी के सपनों के अनुरूप, देश की आजादी के दीवानों के सपनों के अनुरूप आजादी के 75 साल और गांधी के 150 साल, इस पर्व को हमारी प्रेरणा का महान अवसर बना करके हमें आगे बढ़ना है।

मैंने इसी लाल किले से 2014 में स्वच्छता के लिए बात कही थी। 2019 में कुछ ही सप्ताह के बाद, मुझे विश्वास है, भारत अपने-आपको open defecation free घोषित कर पाएगा। राज्यों ने, गांवों ने, नगर पालिकाओं ने- सबने, मीडिया ने जन-आंदोलन खड़ा कर दिया। सरकार कहीं नजर नहीं आई, लोगों ने उठा लिया और परिणाम सामने हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, मैं एक छोटी-सी अपेक्षा आज आपके सामने रखना चाहता हूं। इस 02 अक्तूबर को हम भारत को single use plastic, क्या इससे देश को मुक्ति दिला सकते हैं। हम निकल पड़ें, टोलियां बना करके निकल पड़े हम सब पूज्य बापू को याद करते हुए और घर में प्लास्टिक हो - बाहर चौहराएं पर पड़ा हो, गंदी नाली में पड़ा हो, वह सब इकट्ठा करें, नगरपालिकाएं, महानगर-पालिकाएं, ग्राम पंचायत सब इसको जमा करने की व्यवस्था करें। हम प्लास्टिक को विदाई देने की दिशा में 2 अक्टूबर को पहला मजबूत कदम उठा सकते हैं क्या?

आइए मेरे देशवासियो, हम इसको आगे बढ़ाएं।और फिर मैं स्टार्टअप वालों को, उद्यमियों को आग्रह करता हूं कि हम इन प्लास्टिक के खत्म के लिये क्या करें? जैसे बनाने के लिये प्लास्टिक का उपयोग हो रहा है। ऐसी बहुत-सी विधाएं हो सकती हैं, लेकिन जिसके कारण अनेक समस्याएं पैदा हो रही हैं, उससे मुक्ति के लिये हमें ही अभियान छेड़ना होगा। लेकिन साथ-साथ हमें व्यवस्थाएं भी देनी पड़ेंगी। मैं तो सभी दुकानदानों से आग्रह करूंगा, आप अपने दुकान पर हमेशा लगाते हैं, एक यह भी लगा दीजिये, कृपा करके हमसे प्लास्टिक की थैली की अपेक्षा न करें। आप अपने घर से कपड़े का थैला लेकर आइए या तो हम कपड़े का थैला भी बेचेंगे, ले जाइये। हम एक वातावरण बनायें। दीवाली पर जहां हम लोगों को भांति-भांति के गिफ्ट देते हैं, क्यों न इस बार और हर बार कपड़े के थैले लोगों को गिफ्ट करें, ताकि कोई कपड़े का थैला लेकर मार्किट जायेगा, तो आपकी भी होगी। आप सिर्फ डायरी देते हैं, तो शायद कुछ नहीं होता है, तो कुछ नहीं होता है, थैला देंगे, जूट के थैले हों, मेरे किसानों को मदद करेगा, कपड़े के थैले हों, मेरे किसान को मदद मिलेगी। छोटे-छोटे काम हैं। गरीब-विधवा मां जो सिलाई करती होगी, उसको मदद करेगा यानी हमारा छोटा सा निर्णय भी सामान्य मानव के जीवन में किस प्रकार से बदलाव ला सकता है, हम उस दिशा में काम करें।

मेरे प्यारे देशवासियो Five trillion Dollar economy का सपना हो, स्वावलंबी भारत का सपना हो, महात्मा गांधी के आदर्शों को जीना आज भी प्रस्तुत है। महात्मा गांधी के विचार आज भी स्तुत्य हैं और इसलिये मेक इन इण्डिया का जो मिशन हमने लिया है, उसे हमें आगे बढ़ाना है। मेक इन इण्डिया प्रोडक्ट, हमारी प्राथमिकता क्यों न होनी चाहिए? हम तय करें अपने जीवन में मेरे देश में जो बनता है, मिलता है, वो मेरी प्राथमिकता होगी और हमें तो कल के लिये.... कल के लिये लोकल प्रोडक्ट पर बल देना है। सुहानी कल के लिये उज्ज्वल कल के लिये लोकल, जो गांव में बनता है पहले उसके लिये प्राथमिकता होनी चाहिये। वहां नहीं तो तहसील में, तहसील से बाहर जाना पड़े तो, जिले में, जिले के बाहर जाना पड़े तो, राज्य में और मैं नहीं मानता हूं कि उसके बाद अपनी आवश्यकताओं के लिये कहीं जाना पड़ेगा। कितना बड़ा बल मिलेगा? हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था को कितना बल मिलेगा?, लघु उद्यमियों को कितना बल मिलेगा?, हमारी परंपरागत चीजों को कितना बल मिलेगा? भाइयों-बहनों हमें Mobile phone अच्छा लगता है, हमें whatsapp भेजना अच्छा लगता है, हमें facebook-twitter पर रहना अच्छा लगता है, लेकिन देश की Economy में भी इसके कारण हम मदद कर सकते हैं। जानकारियों के लिये technology का जितना उपयोग है, आधुनिक भारत के निर्माण के लिये भी technology का उतना ही उपयोग है और हम सामान्य नागरिक Digital payment के लिये क्यूं न चलें? आज हमें गर्व है कि हमारा Rupay card सिंगापुर में चल रहा है, हमारे Rupay card आने वाले दिनों में और देशों में भी चलने वाला है। हमारा एक digital platform बड़ी मजबूती के साथ उभर रहा है, लेकिन हमारे गांव में, छोटी-छोटी दुकानों में भी, हमारे शहर के छोटे-छोटे मॉल में भी हम क्यूं न Digital payment पर बल दें? आइए ईमानदारी के लिये, Transparency के लिये और देश को ताकत देने के लिये हम Digital payment को अपनाएं। और मैं तो व्यापारियों को कहूंगा, आप board लगाते हैं ज्यादातर गांव में जाओगे व्यापारियों के board होते हैं - आज नकद-कल उधार। मैं चाहता हूं कि अब तो हमें board लगाया जाना चाहिए Digital payment को हां नकद को ना, यह एक माहौल बनाना चाहिए। मैं बैंकिंग क्षेत्र से आग्रह करता हूं, मैं व्यापार जगत के लोगों से आग्रह करता हूं कि आइये हम इन चीजों पर बल दें।

हमारे देश में Middle class, Higher Middle class

bulk बढ़ता जा रहा है, अच्छी बात है। साल में एक-दो बार परिवार के साथ, बच्चों के साथ दुनिया के अलग-अलग देशों में के रूप में भी जाते हैं, बच्चों को मिलता है। अच्छी बात है। लेकिन मैं आज ऐसे सभी परिवारों से आग्रह करता हूं, देश के लिए जब देश आजादी का 75 साल मना रहा है, देश के लिए इतने महापुरुषों ने बलिदान दिए हैं तब, जिंदगी खपा दी है तब क्या आप नहीं चाहते हैं कि आपकी संतान भी हमारे देश की बारीकियों को समझे।कौन मां-बाप नहीं चाहेगा कि हमारी-आपकी आने वाली पीढ़ी भावनात्मक रूप से इस मिट्टी से जुड़े, इसके इतिहास से जुड़े, इसकी हवाओं से, इसके पानी से नई ऊर्जा प्राप्त करें। ये हमें प्रयत्न पूर्वक करना चाहिए। हम कितने ही आगे बढ़े लेकिन जड़ों से कटना हमें कभी भी बचा नहीं सकता है, बढ़ा नहीं सकता है। और इसलिए जो दुनिया में के रूप में भले ही जाते हों, क्या मैं आपसे एक चीज मांग सकता हूं, लालकिले से देश के नौजवानों के रोजगार के लिए, विश्व में भारत की पहचान बनाने के लिए, भारत का सामर्थ्य उजागर करने के लिए मेरे प्यारे देशवासियो आज मैं आपसे एक छोटी- सी मांग कर रहा हूं - क्या आप तय कर सकते हैं कि 2022 आजादी के 75 साल के पहले हम अपने परिवार के साथ भारत के कम से कम 15 tourist destinations पर जाएंगे। वहां कठिनाईयां होंगी तो भी जाएंगे। वहां अच्छे होटल नहीं होंगे तो भी जाएंगे। कभी-कभी कठिनाईयां भी जिदंगी जीने के लिए काम आती हैं। हम बच्चों में आदत डालें यही हमारा देश है। एक बार जाना शुरू करेंगे तो वहां व्यवस्थाएं विकसित करने वाले लोग भी आने लग जाएंगे। क्यों न हमारे देश में 100 ऐसे बढ़िया tourist destination develop न करें, क्यों न हर राज्य में 2 या 5 या 7 top class tourist destination target करके तैयार करें। हम तय करें- हमारे North-east में इतनी प्राकृतिक संपदा है लेकिन कितनी यूनिवसिर्टीज होंगी जो अपना tourist destination north-east को बनाती हैं? ज्यादा contribute नहीं करना पड़ता है। आपको 7 दिन, 10 दिन निकालने हैं लेकिन देश के भीतर ही निकालिए।

आप देखिए आप जहां जाकर आएंगे, वहां नई दुनिया खड़ी करके आएंगे, बीज रोपित करके आ जाएंगे और जीवन में आपको भी संतोष मिलेगा। हिंदुस्तान के लोग जाना शुरू करें तो दुनिया के लोग भी आना शुरू करेंगे। हम दुनिया में जाएंगे और कहेंगे कि आपने वो देखा है? कोई हमसे पूछेगा कि आप हिन्दुस्तान से आ रहे है, आपने तमिलनाडू का वो देखा है? और हम कहेंगे कि मैं नहीं गया तो वो हमें कहेगा कि भाई कमाल है मैं तो तुम्हारे देश में तमिलनाडू के मंदिर देखने चला गया था और तुम यहां देखने आए हो। हम दुनिया में जाएं अपने देश को जानने के बाद जाएं। हम इतना काम कर सकते हैं।

मैं, मेरे किसान भाईयों से आज आग्रह करना चाहता हूं। आपसे मैं कुछ मांगना चाहता हूं। मेरे किसान के लिए, मेरे देशवासियों के लिए, ये धरती हमारी मां हैं। भारत माता की जय बोलते ही हमारे भीतर ऊर्जा का संचार होता है।वंदे मातरम बोलते ही इस धरती मां के लिए खप जाने की प्रेरणा मिलती है। एक दीर्घकालिक इतिहास हमारे सामने आता है लेकिन क्या कभी हमने इस धरती मां के स्वास्थ्य की चिंता की है। हम जिस प्रकार से केमिकल का उपयोग कर रहे हैं केमिकल का उपयोग कर रहे हैं pesticides का उपयोग कर रहे हैं। हम हमारी इस धरती मां को तबाह कर रहे हैं। इस मां के संतान के रूप में, एक किसान के रूप में मुझे मेरी धरती मां को तबाह करने का हक नहीं है। मेरी धरती मां को दुखी करने का हक नहीं है, मेरी धरती मां को बीमार बना देने का हक नहीं है।

आइए, आजादी के 75 साल होने जा रहे हैं।पूज्य बापू ने हमें रास्ता दिखाया है क्या हम 10 अपने खेत में यह chemical fertilizer को कम करेंगे, हो सके तो मुक्तिकर अभियान चलाएंगे। आप देखिए देश की कितनी बड़ी सेवा होगी। हमारी धरती मां को बचाने में, आपका कितना बड़ा योगदान होगा। वन्दे मातरम् कहकरजो फांसी के तख्त पर चढ़ गया था, उसके सपनों को पूरा करने के लिए, यह धरती मां को बचाने का आपका काम, उसका भी आशीर्वाद प्राप्त करेगा, जो कभी फांसी के तख्त पर चढ़ करके वंदे मातरम् कहा करता था। इसलिए मैं आपसे आग्रह करता हूं और मुझे विश्वास है कि मेरे देशवासी यह करके रहेंगे। मेरे किसान मेरी इस मांग को पूरा करेंगे यह मुझे पूरा विश्वास है।

मेरे प्यारे भाइयो-बहनो, हमारे देश की आज पूरी दुनिया में गूंज है। उनके सामर्थ्य की चर्चा है। लोग उनका लोहा मानते हैं। हमने नये मुकाम प्राप्त किए हैं। हमारे लिए खुशी की बात है कि हमारा चंद्रयान तेजी से चांद के उस छोर की ओर आगे बढ़ रहा है, जहां अब तक कोई नहीं गया है। हमारे वैज्ञानिकों की सिद्धि है।

उसी प्रकार से खेल के मैदानों में हम बहुत कम नजर आते थे। आज दुनिया के खेल के मैदानों में मेरे देश के 18-20 साल, 22 साल के बेटे-बेटियां हिन्दुस्तान का तिरंगा झंडा फहरा रही हैं। कितना गर्व होता है। देश के खिलाड़ी देश का नाम रोशन कर रहे हैं।

मेरे देशवासियो, हमें हमारे देश को आगे बढ़ाना है। हमें हमारे देश में बदलाव लाना है। हमें देश में नई ऊंचाइयों को पार करना है और मिल-जुलकर करना है। सरकार और जनता को मिलकर करना है। 130 करोड़ देशवासियो ने करना है। देश का प्रधानमंत्री भी आपकी की तरह इस देश का एक बालक है, इस देश का एक नागरिक है। हम सबको मिलकर करना है।

चाहे आने वाले दिनों में गांव में डेढ़ लाख wellness center , health center बनाने होंगे, हर तीन लोकसभा के बीच एक medical college हमारे नौजवानों को डॉक्टर बनने का सपना पूरा कराना है। दो करोड़ से अधिक गरीब लोगों के लिए घर बनाने हैं। हमें 15 करोड़ ग्रामीण घरों में पीने का पानी पहुंचाना है। सवा लाख किलोमीटर गांव की सड़के बनानी हैं। हर गांव को Broadband connectivity, optical fiber network से जोड़ना है। 50 हजार से ज्यादा नये start up का जाल बिछाना है। अनेक सपनों को ले करके आगे बढ़ना है। इसलिए भाइयो-बहनो, हमें देशवासियों ने मिल करके, सपनों को ले करके देश को आगे बढ़ाने के लिए चलना है और आजादी के 75 साल इसके लिए बहुत बड़ी प्रेरणा है। मैं जानता हूं कि लाल किले की प्राचीर पर समय की भी एक सीमा है। 130 करोड़ देशवासी उनके सपने भी हैं, 130 करोड़ देशवासियों की अपनी चुनौतियां भी है। हर सपने का, हर चुनौती का अपना महत्व भी है। कोई अधिक महत्वपूर्ण है कोई कम महत्पूर्ण है ऐसा नहीं है। लेकिन बारिश का मौसम है, लंबा बोलते-बोलते पूरे होने की संभावना नहीं है और इसलिए हर का अपना महत्व होने के बावजूद जितनी चीजें आज कह पाया हूं और जो नहीं कह पाया हूं वो भी महत्वपूर्ण हैं। उन बातों को लेकर हम आगे बढ़ें, देश को हमें आगे बढ़ाना है।

आजादी के 75 साल, गांधी के 150 साल और भारत के संविधान के 70 साल हो गए हैं। बाबा साहेब अम्बेडकर के सपने और यह वर्ष महत्वपूर्ण है, गुरू नानक देव जी का 550वां पर्व भी है। आइये, बाबा साहेब अम्बेडकर, गुरू नानक देव जी की शिक्षा को ले करके हम आगे बढ़ें और एक उत्तम समाज का निर्माण, उत्तम देश का निर्माण, विश्व की आशाओं-अपेक्षाओं के अनुरूप भारत का निर्माण हमें करना है।

मेरे प्यारे भाइयो-बहनो हम जानते हैं कि हमारे लक्ष्य हिमालय जितने ही ऊंचे हैं, हमारे सपने अनगिनत असंख्य तारों से भी ज्यादा हैं लेकिन हम ये भी जानते हैं कि हमारे हौसलों के उड़ान के आगे आसमान भी कुछ नहीं है।यह संकल्प हैं, हमारा सामर्थ्य हिन्द महासागर जितना अथाह है, हमारी कोशिशें गंगा की धारा जितनी पवित्र हैं, निरंतर हैं और सबसे बड़ी बात हमारे मूल्यों के पीछे हजारों साल की पुरानी संस्कृति, ऋषियों की मुनियों की तपस्या, देशवासियों का त्याग, कठोर परिश्रम - यह हमारी प्रेरणा है।

आइये, हम इन्हीं विचारों के साथ, इन्हीं आदर्शों के साथ, इन्हीं संकल्पों के साथ सिद्धि प्राप्त करने के लक्ष्य को ले करके हम चल पड़ें नया भारत निर्माण करने के लिए, अपनी जिम्मेदारियों को निभाते हुए, नया आत्मविश्वास, नया संकल्प, नया भारत बनाने की जड़ी-बूटी है। आइये, हम मिल करके देश को आगे बढ़ाएं। इसी एक अपेक्षा के साथ, मैं फिर एक बार देश के लिए जीने वाले, देश के लिए जूझने वाले, देश के लिए मरने वाले, देश के लिए कुछ कर-गुजरने वाले हर किसी को नमन करते हुए मेरे साथ बोलिय

'जय हिन्द'।
'जय हिन्द'।
भारत माता की जय,
भारत माता की जय,
वन्दे मातरम।
वन्दे मातरम।
बहुत-बहुत धन्यवाद।

■

'बेटी बचाओ' : किस किस से ?

✍ निर्मल रानी

गत पांच वर्षों से देश में 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' का नारा सरकारी स्तर पर पूरे ज़ोर शोर से प्रचारित किया जा रहा है। कन्याओं को माता पिता द्वारा 'बोझ' समझे जाने जैसी बढ़ती प्रवृति को रोकने तथा इसके चलते कन्या भ्रूण हत्या की दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही घटनाओं की वजह से देश के कई राज्यों में लड़के व लड़कियों के बिगड़ते जा रहे अनुपात को नियंत्रित करने की ग़रज़ से सरकार द्वारा माता पिता को प्रोत्साहित करने हेतु यह योजना राष्ट्रीय स्तर पर शुरू की गयी थी। कई राज्यों का यह दावा भी है कि 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' योजना के लागू होने के बाद कन्याओं के जन्म का अंतर पहले से कम भी हुआ है। केंद्र की भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाली राजग सरकार व भाजपा शासित राज्यों द्वारा 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' नारे को प्रचारित करने हेतु सैकड़ों करोड़ रूपये भी ख़र्च किये जा चुके हैं। कई मशहूर हस्तियों व अभिनेत्रियों को इस योजना का ब्रांड अम्बेस्डर भी बनाया गया। परन्तु कन्याओं के आदर व मान सम्मान को लेकर ख़ास तौर पर भाजपा के ही कई नेताओं का रवैय्या देखकर यह सवाल पैदा होता है कि भाजपा सरकार का यह नारा क्या सिर्फ़ आम जनता को सुनाने व अमल कराने के लिए ही है? आख़िर स्वयं भाजपा नेता बेटियों को बचाने हेतु आम लोगों को प्रेरित करने के लिए स्वयं कैसा चरित्र प्रस्तुत कर रहे हैं?केवल नेता ही नहीं बल्कि पिता तुल्य समझे जाने वाले अनेक धर्मगुरु भी कन्या को केवल भोग की वस्तु समझ रहे हैं। कुछ हस्तियां ऐसी भी हैं जिन्होंने भगवा धारण कर स्वयं को धार्मिक आवरण में भी लपेट रखा है और इसी बाने की बदौलत राजनीति में भी बुलंदी हासिल की है,परन्तु 'बेटी बचाओ' को लेकर उनका भी रिकार्ड नारी का शारीरिक शोषण करने वाला ही रहा है। ऐसे में 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' के नारे को किस तरह साकार किया जा सकता है ?

उन्नाव रेप मामले में सज़ा काट रहे विधायक कुलदीप सिंह सेंगर को पार्टी से निष्कासित कर भारतीय जनता पार्टी ने यह सन्देश देने की कोशिश तो ज़रूर की है कि पार्टी बलात्कारियों व हत्यारों के साथ नहीं खड़ी है। एक जनप्रतिनिधि व विधायक होने के बावजूद इस दरिंदे ने बलात्कार,फिर हत्या दर हत्या व हत्याओं की साज़िश का एक ऐसा कुचक्र चलाया कि संभवतः पूरे देश में इसकी दूसरी मिसाल देखने को नहीं मिल सकती। किस तरह फ़िल्मी अंदाज़ में इस आपराधिक मानसिकता के व्यक्ति ने आरोपी लड़की सहित उसके पूरे परिवार को कार दुर्घटना की आड़ में समाप्त करने की जो जुर्रत की यह पूरी दुनिया ने देखा। क्या ऐसे हत्यारे व बलात्कारी व्यक्ति के शक्तिशाली होने ख़ास तौर पर सत्ताधारी दल से जुड़े होने के बाद इस जैसे शख़्स से 'बेटी बचाओ' की उम्मीद की जा सकती है ? आज भी भाजपा के कई सांसद व विधायक ऐसे दुष्ट व राक्षसी प्रवृति के व्यक्ति का महिमांडन व उसकी पैरवी करते दिखाई देते हैं। इन दिनों इस से भी कहीं बुलंद राजनैतिक क़द रखने वाले पूर्व केंद्रीय गृह राज्यमंत्री एवं साधू वेशधारी चिन्मयानंद का नाम एक बार फिर चर्चा में है। ग़ौरतलब है कि जौनपुर से सांसद रह चुके स्वामी चिन्मयानंद, अटल बिहारी वाजपेयी सरकार में केंद्रीय गृह राज्यमंत्री रह चुके हैं। इन 'महानुभाव' पर अनेक बार कई महिलाएं बलात्कार व शारीरिक शोषण का आरोप लगा चुकी हैं। इनमें चिन्मयानंद की ही एक कथित शिष्या से लेकर शाहजहांपुर स्थित उन्हीं के एक विद्यालय की प्रधानाचार्य तक

शामिल है। और अब ताज़ा तरीन मामला क़ानून की एक छात्रा से जुड़ा सामने आया है जिसका आरोप है की चिन्मयानंद ने लगभग एक वर्ष तक डरा धमका कर उसके साथ बलात्कार किया। इस छात्रा ने एक वीडीओ जारी कर यह आरोप चिन्मयानंद पर लगाए थे -उसने कहा 'मैं एसएस लॉ कॉलेज में पढ़ती हूं। एक बहुत बड़ा नेता बहुत लड़कियों की ज़िंदिगी बर्बाद कर चुका है। मुझे और मेरे परिवार को भी जान से मारने की धमकी देता है। मैं इस टाइम कैसे रह रही हूं, मुझे ही पता है। मोदी जी प्लीज़... योगी जी प्लीज़ मेरी हेल्प करिए आप। वह संन्यासी, पुलिस और डीएम सबको अपनी जेब में रखता है। धमकी देता है कि कोई मेरा कुछ नहीं कर सकता। मेरे पास उसके ख़िलाफ़ सारे सबूत हैं। आपसे अनुरोध है कि मुझे इंसाफ़ दिलाएं।

परन्तु आश्चर्यजनक बात तो यह है कि जिस पार्टी ने सत्ता में आने के लिये 'बेटियों के सम्मान में, भाजपा मैदान में' जैसा लोकप्रिय प्रतीत होने वाला नारा लगवाया था उसी पार्टी ने सत्ता में आने के बाद बेटियों का सम्मान करने के बजाए बलात्कारियों व महिलाओं का शोषण करने वाले भगवा वेश धारी व शक्तिशाल लोगों के मान सम्मान की फ़िक्र करनी शुरू कर दी। गत वर्ष उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार ने इसी पूर्व गृह राज्यमंत्री स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती के विरुद्ध चल रहे बलात्कार के धारा 376 और 506 अर्थात डराने धमकाने के तहत दर्ज मुक़दमा वापस लिए जाने का आदेश ज़िला प्रशासन को जारी किया था। जबकि दूसरी ओर कथित बलात्कार पीड़िता ने राष्ट्रपति को इस सम्बन्ध में एक पत्र भेजकर सरकार के इस क़दम पर आपत्ति दर्ज कराते हुए चिन्मयानंद के ख़िलाफ़ वारंट जारी करने की मांग की थी। मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ स्वयं भी चिन्मयानंद के आश्रम में आयोजित युवा महोत्सव में भाग ले चुके हैं। इसके अलावा भी स्वामी चिन्मयानंद से मिलने उनके आश्रम पर अनेक आला अधिकारियों के आने जाने का सिलसिला बना रहता है। ऐसे में इस प्रकार के 'विशिष्ट' लोगों से बेटी की हिफ़ाज़त की उम्मीद कैसे की जाए और इनके विरुद्ध कार्रवाई करने का साहस भी कौन करे ? यही वजह है कि इस बार क़ानून की छात्रा के आरोपों के मामले में माननीय न्यायालय द्वारा स्वयं संज्ञान लेना पड़ा।

इस प्रकार के अनेक उदाहरण हैं जिनसे यह पता चलता है कि ऐसे दुश्चरित्र लोगों की सरकार द्वारा समय समय पर हौसला अफ़ज़ाई ही की गयी है। गत माह कर्नाटक में मुख्यमंत्री येदियुरप्पा के मंत्रिमंडल में तीन उप मुख्यमंत्री शामिल किये गए। इन तीन में से एक लक्ष्मण सावदी नाम के वही बीजेपी नेता हैं जिन्हें विधान सभा में पोर्न फ़िल्म देखते हुए पाया गया था। येदियुरप्पा के नए मंत्रिमंडल में उन्हें परिवाहन विभाग भी दिया गया है। इनकी नियुक्ति का सत्ता व विपक्ष दोनों ही ओर विरोध किया गया था। लक्ष्मण सावदी कर्नाटक विधान सभा का चुनाव भी हार गए थे। उसके बावजूद उन्हें परिवाहन विभाग के मंत्री व उपमुख्मंत्री पद से नवाज़ा गया। ज़रा सोचिये कि विधानसभा में बैठकर पोर्न फ़िल्म देखने में मशगूल रहने वाले नेता की मानसिक सोच कैसी होगी और यदि ऐसे व्यक्ति के हाथों में 'बेटी बचाओ मिशन की ज़िम्मेदारी सौंप दी जाए तो बेटियां बचने की क्या गारंटी हो सकती है ? निश्चित रूप से सरकार का 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' मिशन क़ाबिल-ए-तारीफ़ है। परन्तु इसको अमली जामा पहनाने के लिए यह सबसे ज़रूरी है कि सत्ता से जुड़े,शक्तिशाली व प्रतिष्ठित एवं रुतबा धारी जो लोग बेटियों को बेटियां समझने के बजाए उन्हें अपनी हवस का शिकार बनाने का एक ज़रिया मात्र समझते हैं उन्हें आम गुनहगारों से भी अधिक व त्वरित सज़ा दिलाए जाने की व्यवस्था की जाए। और यदि सत्ता प्रतिष्ठान की तरफ़ से ऐसे किसी आरोपी को उसके रूतबे को देखते हुए सम्मानित या उपकृत किया जा रहा है तो ऐसा करने वालों के विरुद्ध भी कार्रवाई की जानी चाहिए।अन्यथा 'बेटी बचाओ' का नारा बेमानी तो साबित ही होगा साथ साथ यह सवाल ज़रूर उठता रहेगा की आख़िर बेटियों की आबरू और इस्मत को किस किस से और कैसे बचाया जाए ? ■

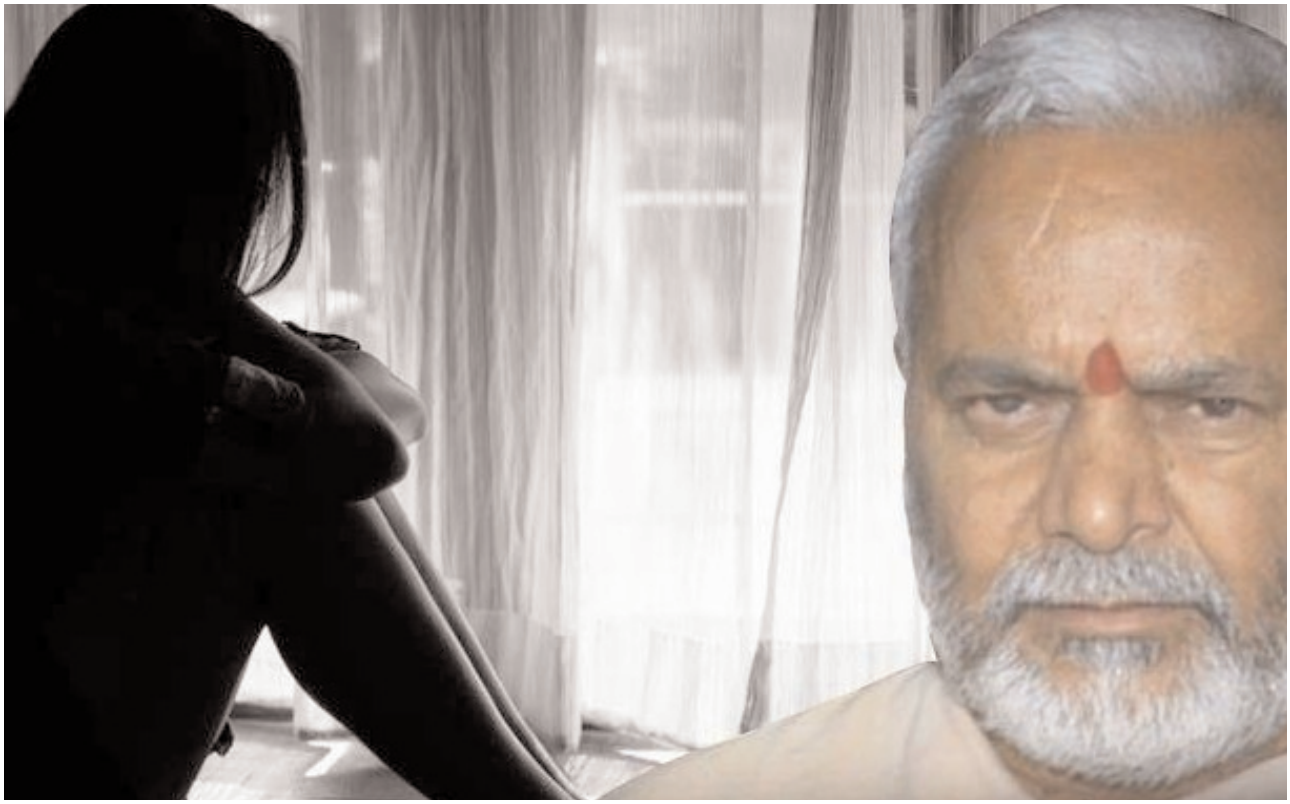

जनमत का अपमान करते ये 'थाली के बैंगन'

✍ सिमा सिंह

राजस्थान की राजनीति में गत दिनों एक बार फिर स्वार्थी व सत्ता की घोर चाहत रखने वाली राजनीति का बदनुमा चेहरा देखने को मिला। हुआ यह कि राजस्थान में बहुजन समाज पार्टी के सभी 6 के 6 विधायक कांग्रेस पार्टी में शामिल हो गए। दलबदल की इस घटना के बाद राजस्थान विधानसभा में कांग्रेस के विधायकों की संख्या अब 100 से बढ़कर 106 हो गई है। हालाँकि पहले भी राज्य में अशोक गहलोत की कांग्रेस सरकार को बसपा का बाहर से समर्थन हासिल था। क़ानूनी एतबार से इस घटना को दलबदल नहीं बल्कि एक दल के विधायकों का दूसरे दल में 'विलय' का नाम दिया जाता है। ऐसे 'विलय' जैसे फ़ैसलों में किसी प्रकार की क़ानूनी अड़चन भी नहीं होती।परन्तु क्या नैतिकता के मापदंड पर भी ऐसा तथाकथित 'विलय' या दलबदल खरा उतरता है ?आज लगभग पूरे देश में बड़े पैमाने पर ऐसी ख़बरें सुनी जा रही हैं कि कल का कांग्रेसी या सपाई या किसी अन्य दल का कोई नेता विधायक,या सांसद भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गया। ज़ाहिर है चूँकि इन दिनों भाजपा की सत्ता पर पकड़ मज़बूत है इसलिए 'माननीयों' का पलायन भाजपा की तरफ़ ही हो रहा है। दलों में तोड़ फोड़ करने तथा विपक्ष को अत्यंत कमज़ोर करदेने की सोच रखने वाले नेता चूँकि भाजपा में बहुतायत में हैं इसलिए नेताओं के भाजपा में शामिल होने की ख़बरें इन दिनों कुछ ज़्यादा ही सुनाई दे रही हैं। इन्तेहा तो यह है कि भारतीय जनता पार्टी ने बिहार व कर्नाटक जैसे राज्यों में जहाँ जनता ने उसे विपक्ष में बैठने के लिए मत दिया था वहां भी वह जोड़ तोड़ कर सत्ता में आ गयी। इससे पूर्व गोवा व मणिपुर राज्यों में भी यही खेल खेला जा चुका है।

ऐसा प्रतीत होता है कि निर्वाचित होने के बाद सत्ता पक्ष में बैठे बिना 'माननीय' की राजनीति ही अधूरी है। ज़ाहिर है सत्ता की पंक्ति में खड़े होने के बाद निर्वाचित 'माननीयों' के मंत्री बनने की संभावनाएं प्रबल हो जाती हैं। और यही लगभग प्रत्येक नेता की तमन्ना भी होती है कि वह चुनाव भी जेते और फिर उसे मंत्रिमंडल में भी शामिल किया जाए। आश्चर्य की बात तो यह है कि दलबदल या विचार परिवर्तन के बाद भी ऐसे माननीय बड़ी ही बेशर्मी के साथ अपनी छाती चौड़ी कर पुनः अपने उन्हीं मतदाताओं के पास वोट मांगने जाते हैं जिनसे पिछली बार किसी दूसरे दल के उम्मीदवार के रूप में वोट माँगा था। और अक्सर जनता उन्हें पुनः दूसरे दल का प्रत्याशी होने के बावजूद जिता भी देती है। इधर 'नेताजी' के पास भी अपनी इस दलबदल या विचारधारा के परिवर्तन का एक बहुत ही सधा हुआ जवाब तैयार रहता है। वे अपने मतदाताओं को समझाते हैं कि 'यह दलबदल या निष्ठा परिवर्तन केवल जनता की भलाई के लिए किया गया है ताकि क्षेत्र का विकास हो सके। और ज़ाहिर है प्रगति व विकास कार्यों के लिए सत्ता का साथ या संरक्षण ज़रूरी होता है'। ऐसे तर्कों को सुनकर भले ही जनता स्वयं को राजनैतिक दृष्टि से ठगा हुआ क्यों

न महसूस करे परन्तु 'क्षेत्र के विकास' के तर्क को सुनकर वह भी यह जानते हुए भी ख़ामोश हो जाती है कि 'नेताजी' द्वारा उसे ठगा ही गया है।

ख़बरों के मुताबिक़ मध्य प्रदेश में भी इन दिनों एक हाई प्रोफ़ाइल राजनैतिक ड्रामे की स्क्रिप्ट लिखी जा रही है। कोई आश्चर्य नहीं कि मध्य प्रदेश की जनता जिसने राज्य की शिवराज सिंह चौहान की भाजपा सरकार को सत्ता से हटाया था और कमल नाथ के नेतृत्व में कांग्रेस की सरकार बनाए जाने की राह आसान की थी वहां भी कुछ ऐसा ही राजनैतिक ड्रामा देखने को मिले जिसकी मध्य प्रदेश की जनता को उम्मीद भी न हो। ऐसे दलबदलुओं के पास सिद्धांत अथवा विचारधारा नाम की कोई चीज़ ही नहीं होती। बल्कि इनके लिए इससे भी महत्वपूर्ण इनका राजनैतिक भविष्य होता है। मान लीजिये की अगर इन्हें इस बात का आभास हो जाए कि उनकी पार्टी इस बार उन्हें चुनाव मैदान में उतारने नहीं जा रही है। और किसी और नेता को प्रत्याशी बनाए जाने की संभावना है। उसी समय से 'थाली के ये बैंगन' अपने राजनैतिक भविष्य की चिंता करने लगते हैं और टिकट हेतु अन्य दलों की और ताकने झाँकने लगते हैं। यदि कोई जीत भी जाय और विपक्ष में है तो वह मंत्री बनने की शर्त पर दल बदल कर लेता है या क़ानूनी अड़चनों से बचने के लिए अपनी पार्टी में विभाजन करवा देता है।

इसी प्रकार कई बड़े नेता गठबंधन में शामिल होने के लिए अवसरवादिता की पूरी परख रखते हैं। कब संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन का हिस्सा बनना है और कब राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन में शामिल होना है ये हुनर व 'दूरदर्शिता' इन्हें बखूबी आती है। लोक जान शक्ति पार्टी के नेता राम विलास पासवान ऐसे 'दूरदर्शी' नेताओं के लिए एक 'आदर्श' नेता हैं। इन्हें राजनीति का 'मौसम वैज्ञानिक' भी कहा जाता है। देश में कई नेता ऐसे भी हैं जिन्होंने सत्ता में रहते हुए अपने पदों का भरपूर दुरूपयोग किया। अकूत संपत्ति अर्जित की और घोर अनियमिताओं का सहारा लेते हुए खूब मनमानी की। ऐसे नेताओं के सर पर सी बी आई या अन्य जांच एजेंसियों की नज़रें रहती हैं। उन्हें भय रहता है कि कहीं हमारा रुतबा और आज़ादी ख़त्म न हो जाए और कहीं हम सलाख़ों के पीछे न डाल दिए जाएं। ऐसे नेता भी सत्ता पक्ष के नेताओं से अपने रुसूख़ के आधार पर सांठ गाँठ कर अपना 'राजनैतिक धर्म परिवर्तन' कर लेते हैं। वैसे भी हमारे देश में स्वार्थी व रीढ़ विहीन नेताओं की संख्या बहुत ज़्यादा है। बेशक वे खादी के सफ़ेद कपड़ों में लिपटे रहते हैं परन्तु उन्हें इस सफेदी व खादी के महत्व का ज्ञान ही नहीं। लोकसेवा,वैचारिक व सैद्धांतिक सोच,दक्षिण पंथ,वामपंथ जैसी बातों की इनको समझ ही नहीं है। आज का कौन सा कांग्रेसी कल भाजपाई बन जाए कुछ नहीं कहा जा सकता।

दलबदल करना या घटक बदलना बेशक नेताओं का अधिकार क्षेत्र है। परन्तु अपने मतदाताओं से छल व धोखा करने का अधिकार उन्हें हरगिज़ नहीं है। यह क़ानून के ख़िलाफ़ भले ही न हो पर नैतिकता के बिल्कुल विरुद्ध ज़रूर है। यह सरासर अपने मतदाताओं की उस राय की मुख़ालिफ़त है जो उन्होंने चुनाव में अपने नेता के पक्ष में मतदान कर व्यक्त की है।यदि किसी निर्वाचित माननीय के लिए दल बदल करना उसकी मजबूरी है भी तो उसे या तो पहले अपने पद से त्याग पात्र देदेना चाहिए या फिर किसी भी तरीक़े से अपने मतदाताओं की रॉय लेकर ही उसे दलबदल या घटक परिवर्तन करना चाहिए। दूसरी तरफ़ मतदाताओं को भी ऐसे दलबदलू,सिद्धांतविहीन व बिना 'वैचारिक रीढ़ की हड्डी' वाले नेताओं को चुनाव में ऐसा सबक़ सिखाना चाहिए ताकि वे राजनैतिक दलबदल करना तो क्या राजनीति के मैदान से ही ख़ुद को दूर करने की बात सोचने के लिए मजबूर हो जाएं। जनता को यह भी महसूस करना चाहिए कि ऐसा नेता उनके चुनाव क्षेत्र को भी बदनाम करते हैं। जब जनता इन 'थाली के बैंगनों' को उनकी औक़ात दिखने लगेगी निश्चित रूप से मौक़ा परस्ती की सियासत को लगाम लगने लगेगी अन्यथा 'थाली के ये बैंगन' हमेशा अपनी सुविधानुसार दलबदल भी करते रहेंगे और मतदाताओं को अपना ग़ुलाम समझते रहेंगे। ■

असंगठित जनता को लूटते संगठित व्यवसायी ?

✍ विभा तिवारी

लगभग दस बारह वर्ष पूर्व आपने मोबाईल नेटवर्क उपलब्ध करने वाली एयरटेल जैसी कई कम्पनीज़ के ऑफ़र्स में लाइफ़ टाइम ऑफ़र दिए जाने के बारे में ज़रूर सुना होगा। मेरे जैसे करोड़ों देशवासियों ने हर महीने मोबाईल टाक टाईम चार्ज करवाने की झंझट से बचने के लिए कंपनी के लाइफ़ टाइम ऑफ़र को स्वीकार करते हुए उसके द्वारा मांगे गए एक हज़ार रूपये भी दे दिए थे। इसके कुछ समय पश्चात् इस प्रकार का लाइफ़ टाइम ऑफ़र स्वीकार करने वालों के मोबाईल फ़ोन पर उन कम्पनीज़ द्वारा इस आशय के सन्देश भेजे गए कि आप का लाइफ़ टाइम कनेक्शन 2030 या किसी पर 2032 या 2033 या 34 आदि तक वैध रहेगा। इस प्रकार की जानकारी भी दी गयी। इस ऑफ़र की घोषणा व इसकी बिक्री को लगभग 10 वर्ष बीत चुके हैं। इसलिए हमें यह जानना ज़रूरी है कि क्या लाइफ़ टाइम ऑफ़र देने वाली सभी कम्पनीज़आज भी सही सलामत भारतीय बाज़ारों में क़ायम रहकर लाइफ़ टाइम ऑफ़र उपलब्ध कराने के अपने वचन पर क़ाएम हैं?वह सभी कम्पनीज़आज भी भारतीय बाज़ारों में जीवित नज़र आ रही हैं? इसी प्रकार अपना मोबाईल पोर्ट करने अर्थात उसी पुराने नंबर को बरक़रार रखते हुए किसी अन्य मोबाईल नेटवर्क कंपनी में अपना कनेक्शन स्थानांतरित करने की व्यवस्था थी। वह नई मोबाईल नेटवर्क कंपनी अपनी शर्तों के अनुसार तथा अपने निर्धारित रेट पर नेटवर्क की सेवाएं उपलब्ध कराती थीं। परन्तु भारतीय बाज़ार का उतार चढ़ाव तथा अपने घाटे मुनाफ़े का अपने तरीक़े से आंकलन करने के बाद गत दो दशकों में नेटवर्क सेवाएं उपलब्धकरने वाली अनेक कम्पनीज़ विशाल भारतीय बाज़ार के क्षितिज पर पहले तो सितारों की तरह चमकीं और कुछ ही समय के बाद सितारों की ही तरह आँखों से ओझल भी हो गयीं।

ऐसे में सवाल यह कि कोई भी नेटवर्क सेवाएं उपलब्ध कराने वाली कम्पनी भारतीय बाज़ार में टिकी रहे या भारतीय बाज़ार को छोड़ जाए। अथवा नेटवर्क सेवाएं उपलब्ध कराने वाली किसी दूसरी कम्पनी में उसका विलय हो जाए। परन्तु एक ग्राहक से कंपनी द्वारा किये गए उस वादे की वैधानिक स्थिति क्या होगी जिसके तहत उसने ग्राहक को लुभाया और तरह तरह की लालच देकर कनेक्शन लेने हेतु वातावरण तैयार किया ? गत दो दशकों के दौरान भारत में मोबाईल नेटवर्क मुहैय्या कराने वाली अनेक कम्पनीज़ आईं और चली गयीं। उनकी शर्तें व ग्राहकों के साथ किये गए उनके सभी क़रार भी धराशायी हो गए। अब न तो कोई लाइफ़ टाइम कनेक्शन रह गया है न ही पिछली कंपनी की शर्तों व रेट पर कोई नई कम्पनी सुविधाएं दे रही है। सब की अपनी अपनी शर्तें हैं आपको उसे मानना ही पड़ेगा। मोबाईल नेटवर्क मुहैय्या कराने वाली अनेक कम्पनीज़ के अपने अपने नियम हैं वे पोर्ट करने वाली किसी अन्य कंपनी के नियमों को मानने के लिए बाध्य नहीं हैं। अब लाइफ़ टाईम ऑफ़र के नाम पर जनता से लूटे गए सैकड़ों करोड़ रुपयों की भी कोई जवाबदेही किसी भी कंपनी की नहीं है। अब यदि आप नियमित रूप से अपना मोबाईल कंपनी के पैकेज के अनुरूप प्रत्येक माह चार्ज करा रहे हैं फिर तो ग़नीमत है अन्यथा आपकी पैकेज की तिथि समाप्त होते ही आने व जाने वाली सभी कॉल्स कंपनी बंद कर देती है। और यदि इनकमिंग कॉल्स की व्यवस्था को जीवित रखना चाहते हैं तो प्रत्येक माह किसी कंपनी का 35 रु तो किसी का 23 रु प्रति माह के हिसाब से ज़रूर चार्ज करना पड़ेगा अन्यथा आपके हाथों का मोबाईल संचार सुविधाएं मुहैय्या करा पाने में पूरी तरह असमर्थ है। भले ही आप ने लाइफ़ टाइम सदस्य के रूप में किसी कम्पनी को एक हज़ार रूपये क्यों न दे रक्खे हों।

यहाँ महीने के नाम पर 30 या 31 दिन गिनने की भी ग़लती मत करें। इन संगठित व्यवसायियों ने लूट खसोट की अपनी सुविधा के मद्देनज़र महीने का निर्धारण भी मात्र 28 दिनों का कर रखा है। गोया हर महीने दो या तीन दिन के फ़ालतू पैसे महीने भर के पैकेज के नाम पर प्रत्येक ग्राहक से ठगे जा रहे हैं। हमें एक वर्ष में बारह महीने की यदि आय होती है तो इन कम्पनीज़ ने साल के 12 नहीं बल्कि 13 महीने या इससे भी कुछ अधिक निर्धारित कर दिए हैं। और असंगठित ग्राहक लूटा भी जा रहा है और तमाशबीन भी बना हुआ है। आपकी कॉल ड्राप होती है या सही सिग्नल नहीं मिलते अथवा बातचीत के दरम्यान काल काट जाती है अथवा रेकार्डेड यंत्र आपको कॉल कनेक्ट करने के बजाए और कुछ बोलता रहता है तो इसकी ज़िम्मेदारी भी कोई कम्पनी नहीं लेती सिवाए इसके की आप सम्बंधित कंपनी

के ग्राहक सेवा केंद्र पर फ़ोन करें और यहाँ बैठा कोई युवक या युवती आपको बातों बातों में ही अपनी मीठी व सुरीली भाषा से ही संतुष्ट कर दे और अंत में भी आप से यही पूछे कि और कोई सेवा बताएं या काल करने हेतु धन्यवाद कर आपकी शिकायत का 'सुखद अंत' कर दे। वैसे भी जबसे देश के सबसे बड़ा सरकारी संचार संस्थान बी एस एन एल की तरफ़ से सरकार ने जान बूझ कर आँखें फेरनी शुरू की हैं तभी से निजी कम्पनीज़ के हौसले बुलंद हो चुके हैं। अनेक निजी कम्पनीज़ के इस क्षेत्र से ग़ाएब हो जाने के बावजूद जिओ,एयरटेल, आइडिया,व वोडाफ़ोन जैसी कई कम्पनीज़ अपने कारोबार में निरंतर विस्तार भी कर रही हैं। यहाँ यह बताने की ज़रुरत नहीं कि इन कम्पनीज़ के स्वामी सरकार के मुखियाओं से अपने 'मधुर सम्बन्ध' रखते हैं लिहाज़ा इन्हें सरकार का पूरा संरक्षण भी हासिल होता है। इतना अधिक कि सरकार अपने संचार संस्थान बी एस एन एल के आधुनिकीकरण पर या इसके कर्मचारियों की मांगों पर गंभीरता पूर्वक ध्यान देने के बजाए संचार क्षेत्र की निजी कम्पनीज़ के समक्ष आने वाली परेशानियों से शीघ्रता से निपटती है। जिओ के बाज़ार में उतरने के समय पूरे देश ने देखा कि किस प्रकार जिओ के विज्ञापन में बड़े पैमाने पर देश के प्रधानमंत्री के चित्र का इस्तेमाल किया गया। जैसे कि जिओ निजी संचार संस्थान न होकर कोई सरकारी संचार संस्थान हो। इस बात को लेकर उस समय थोड़ा बहुत हो हल्ला भी हुआ था परन्तु जो कुछ करना या होना था वह हो चुका था। देश को जिओ पर सरकरी संरक्षण होने का सन्देश सफलतापूर्वक दिया जा चुका था। आज पूरे देश में व्यापक स्तर पर इसका फैला नेटवर्क जिओ पर सरकारी संरक्षण का सुबूत है।

इसी प्रकार के और भी कई ऐसे निजी यहाँ तक कि कई सरकारी क्षेत्र भी ऐसे हैं जहाँ जनता के पैसों की मनमानी तरीक़े से लूट खसोट सिर्फ़ इसलिए की जाती है क्योंकि आम लोग असंगठित हैं,विभिन्न वर्गों में बंटे हुए हैं। जनता को अपने हितों से अधिक चिंता अपने धर्म व जाति,संस्कृति व भाषा आदि की सताने लगी है। और निःसंदेह जनता की इन्हीं कमज़ोरियों का फ़ायदा संगठित संस्थानों या संस्थाओं के लोग बड़ी ही आसानी से उठा रहे हैं। ■

हमारे प्रेरक ग़ज़नवी नहीं बल्कि मोहम्मद के घराने वाले हैं

✍ तनवीर जाफ़री

पाकिस्तान ने अपनी रक्षा प्रणाली में जिन मिसाइलों को 'सुसज्जित' कर रखा है उनमें से कुछ मिसाइलों के नाम हैं- बाबर, गौरी और ग़ज़नी' । पाकिस्तान द्वारा अपनी मिसाइलों का इस प्रकार का नामकरण किया जाना ज़ाहिर है उसके इरादों,नीयत व उसकी आक्रामकता को दर्शाता है।पाकिस्तान द्वारा यह नाम अनायास ही नहीं रखे गए बल्कि सही मायने में पाकिस्तान इसी प्रकार के आक्रांताओं व लुटेरे शासकों से ही प्रेरित व प्रभावित रहा है। जबकि भारत में इन शासकों की गिनती लुटेरे आक्रांताओं में की जाती है। ख़ास तौर पर महमूद ग़ज़नवी को तो भारत में आक्रमण के दौरान लूटपाट मचाने व सोमनाथ के प्राचीन मंदिर तोड़ने वाले एक आक्रामक शासक के रूप में जाना जाता है। ग़ौर तलब है कि ग़ज़नवी ने सबसे बड़ा आक्रमण 1026 ई. में काठियावाड़ के सोमनाथ मंदिर पर था। विध्वंसकारी महमूद ने सोमनाथ मंदिर का शिवलिंग तोड़ दिया था और मंदिर को ध्वस्त कर दिया था।इस हमले में हज़ारों लोग मरे गए थे जबकि ग़ज़नवी के लुटेरे सैनिक मंदिर का सोना और भारी ख़ज़ाना लूटकर ले गए थे। अकेले सोमनाथ से उसे अब तक की सभी लूटों से अधिक धन मिला था। ग़ज़नवी जैसे लुटेरे आक्रांताओं ने भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में अपने ऐसे ही लूट पाट के कारनामों से इस्लाम व मुसलमानों की छवि को धूल धूसरित करने का काम किया था। यही वह दौर था जबकि सन 61 हिजरी में करबला में यज़ीद के लश्कर की तर्ज़ पर सम्प्रदाए के नाम पर अपने इस्लामी साम्राज्य को बढ़ाने की चेष्टा करते हुए लूटपाट,क़त्लो ग़ारत तथा धर्मस्थलों को तोड़ने जैसी अनेक इबारतें लिखी गयीं। कहना ग़लत नहीं होगा कि ऐसे ही शासकों ने अन्य सम्प्रदाये के लोगों के दिलों में मुसलमानों के प्रति नफ़रत पैदा की तथा इस्लाम धर्म की छवि धूमिल की।

जिस प्रकार यज़ीद के समर्थक उसके प्रशंसक व उसे अपना प्रेरणा स्रोत मानने वाले लोग 61 हिजरी के दौर में करबला की घटना के समय मौजूद थे उसी तरह यज़ीद व यज़ीदियत के रस्ते पर चलने वाले आतंकी सरग़नाओं के समर्थक व उनके प्रशंसक आज भी मौजूद हैं। यज़ीद भी तलवार के बल पर इस्लामी हुकूमत को फैलाने का दावा तो करता था मगर हक़ीक़त में वह इस्लाम का इतना बड़ा दुश्मन था जिसने रसूल-ए-पाक हज़रत मुहम्मद के परिवार के लोगों को ही करबला (इराक़) में शहीद कर पूरे इस्लामी जगत के चेहरे पर कला धब्बा लगाने की कोशिश की। इसी साम्रज्ज्वादी सोच का प्रतिनिधित्व अलक़ायदा, दाइश,आई एस व तालिबान जैसे इनके अनेक सहयोगी संगठन भी कर रहे हैं। देखने में रंग रूप व पहनावे में चूँकि यह भी कट्टर मुसलमान ही प्रतीत होते हैं लिहाज़ा इस्लाम विरोधी शक्तियों को इनकी हर 'कारगुज़ारियों' को मुसलमानों व इस्लाम से जोड़ने में ज़्यादा वक़्त नहीं लगता। निश्चित रूप से पाकिस्तान की तबाही व वहां अल्पसंख्यकों के साथ वहां होने वाले ज़ुल्मो जब्र का मुख्य कारण ही यही है कि पाकिस्तान इस्लाम के वास्तविक नायकों अर्थात नबी, पैग़म्बर, ख़लीफ़ा, इमाम से ज़्यादा ग़ज़नवी, अब्दाली, लाडेन, जवाहरी, मसूद अज़हर व हाफ़िज़ सईद जैसे उन लोगों से प्रेरित होता है जो इस्लाम व मुसलमानों को हमेशा हीकलंकित करते रहे हैं।

अभी पिछले दिनों एक बार फिर कश्मीर के ताज़ा तरीन सुरते-ए-हाल के सन्दर्भ में बात करते हुए पाकिस्तान के साम्प्रदायिक संगठन जमात-ए-इस्लामी प्रमुख सिराज उल हक़ ने अपनी गिनती 'ग़ज़नवी की औलादों' में की है। ख़बरों के मुताबिक़ जमात प्रमुख सिराज उल हक़ ने ये भी कहा कि 'कश्मीर पाकिस्तान के लिए ज़िंदगी और मौत का सवाल है। उन्होंने बड़े ही गौरवान्वित लहजे में अपने लिए यह भी कहा कि वो 'महमूद ग़ज़नवी की औलाद' हैं। वे स्वयं को किस रिश्ते से ग़ज़नवी की औलाद बता रहे हैं मुझे नहीं मालूम। क्योंकि शाब्दिक अर्थ के लिहाज़ से तो विलादत देने वाले को वालिद और उससे पैदा होने वाली संतान को औलाद कहा जाता है। हो सकता है उनका शजरा ग़ज़नवी से मिलता भी हो परन्तु यदि वे महज़ एक मुसलमान होने के नाते उस आक्रांता से अपना रिश्ता जोड़ रहे हैं तो उन्हें यह बताना ज़रूरी है कि यह लुटेरे और आक्रांता कभी भी भारतीय मुसलमानों के नायक अथवा प्रेरणा स्रोत नहीं रहे। यह क्या कोई भी मुस्लिम सुल्तान या शासक,बादशाह अथवा नवाब कभी भी इस्लाम मजहब का नायक कभी भी न हुआ है न हो सकता है न ही उसे इस्लामी नायक व मुसलमानों का प्रेरणास्रोत माना जा सकता है। भले ही उसने नमाज़,रोज़ा,हज आदि का पालन भी क्यों न किया हो। इस्लाम पैग़म्बर हज़रत मोहम्मद व उनके परिजनों हज़रत अली ,बीबी फ़ातिमा ,हज़रत इमाम हसन व हज़रात इमम हुसैन जैसे हज़रत मुहम्मद के घराने वालों से प्रेरणा हासिल करने वाला मजहब है। इस्लाम, पैग़म्बरों,इमामों व मुहम्मद के घराने वालों को अपना आदर्श मानने वाला मजहब है। इस्लाम उस त्याग,तपस्या और क़ुर्बानी का मजहब है जो करबला में हज़रत इमाम हुसैन की शहादत की शक्ल में सिर चढ़ कर बोला। इस्लाम हुसैनियत के बल पर ज़िंदा है यज़ीदियत के बल पर नहीं। यज़ीदियत के लक्षण तो यही हैं जो ग़ज़नवी,अब्दाली,लाडेन,जवाहरी,मसूद अज़हर व हाफ़िज़ सईद जैसे लोगों में और इनके चहेतों में दिखाई दे रहे हैं।

यहाँ पाकिस्तान के जमात प्रमुख सिराज उल हक़ के कश्मीर के सन्दर्भ में दिए गए बयान के विषय में यह बताना भी ज़रूरी है कि कश्मीर में कश्मीरियों के साथ उनकी 'ग़ज़नवीयत' से भरी हमदर्दी कश्मीर और कश्मीरियत को नुकसान तो ज़रूर पहुंचा सकती है फ़ायदा हरगिज़ नहीं। कश्मीर के विषय पर भारत में ही सरकार की कश्मीर नीति से असहमति रखने वालों द्वारा सरकार की हर संभव आलोचना हो रही है। कश्मीरियों और कश्मीरियत का साथ देने वाले लोग भारतीय समाज में बड़ी संख्या में हैं। परन्तु पाकिस्तान के लोगों की हमदर्दी ख़ास तौर पर उनकी हमदर्दी का 'ग़ज़वियाना' अंदाज़ कश्मीरी लोगों के लिए नुक़्सानदे होगा। जहाँ तक कश्मीर के विषय पर भारतीय मुसलमानों के पक्ष का प्रश्न है तो पिछले दिनों जमीयत उलेमा-ए-हिंद के महासचिव महमूद मदनी गत 12 सितंबर को जमीयत उलेमा-ए-हिंद के इस प्रस्ताव के पारित होने की घोषणा कर चुके हैं कि 'कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है, जम्मू-कश्मीर के लोग भी भारतीय ही हैं। वे हमसे किसी प्रकार अलग नहीं हैं।' महमूद मदनी यह भी स्पष्ट कर चुके हैं कि बावजूद इसके कि 'पाकिस्तान वैश्विक स्तर पर ये बात उछालने की कोशिश कर रहा है कि भारतीय मुसलमान भारत के ख़िलाफ़ हैं। हम पाकिस्तान की इस कोशिश का विरोध करते हैं। भारत के मुसलमान अपने देश के साथ हैं। हम अपने देश की सुरक्षा और एकता के साथ कोई समझौता नहीं करेंगे। भारत हमारा देश है और हम इसके साथ खड़े रहेंगे।' मदनी ने ये भी कहा कि देश में रहते हुए बहुत से मुद्दों पर हमारी असहमति हो सकती हैं, लेकिन जब देश की बात आती है तो हम सब एक हैं।'

अतः पाकिस्तानी नेताओं और 'ग़ज़नवी की औलादों' को कश्मीरी मुसलमानों के हक़ में घड़ियाली आंसू बहाने के प्रदर्शन से बाज़ आना चाहिए और अपने देश के अल्पसंख्यकों की सुरक्षा पर अपनी ऊर्जा ख़र्च करनी चाहिए। यदि वे अपनी ग़ज़नवीयत भरी सोच का इस्तेमाल पाकिस्तान तक ही सीमित रखें तो ज़्यादा बेहतर है। उनकी ख़ामोशी में ही कश्मीरियों का हित निहित है। ■

सनातन धर्म की रक्षा के लिए

भदरी नरेश का योगी से टकराव

✍ सौरभ सिंह सोमवंशी

उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ के मुख्यमंत्रित्व काल में भदरी नरेश राजा उदय प्रताप सिंह के ऊपर अधिक संख्या में भगवा झंडे लगा देने के कारण कुंडा कोतवाली में एफआर करवाई गई है। उनको दो समुदायों के मध्य दंगा कराने का आरोपी बनाया गया है। संपूर्ण भारतवर्ष के तमाम राजनेताओं में हिंदुत्व के सबसे बड़े समर्थक के रूप में योगी आदित्यनाथ का नाम लिया जाता है। उसके बावजूद उनके ऊपर एफ आई आर दर्ज करवाना प्रशासन के ऊपर कई प्रश्न खड़ा कर चुका है।

क्या है मामला-

कई वर्ष पहले मोहर्रम के जुलूस के दौरान कुंडा के एक गांव में एक बंदर की कुछ लोगों ने जुलूस के भीड़ में हत्या कर दी थी, इसके बाद राजा उदय प्रताप सिंह ने बंदर को सनातन धर्म और संस्कृति के अनुसार क्रिया कर्म किया तथा उसी बंदर की याद में एक मंदिर का निर्माण करवाया और प्रतिवर्ष वह मुहर्रम के दिन ही बंदर की पुण्यतिथि मनाते हैं और एक विशाल भंडारे का आयोजन किया करते हैं। यह भंडारा पिछली सरकारों के दौरान पुलिस प्रशासन की चौकसी से होता रहा है कभी किसी प्रकार का विवाद नहीं हुआ परंतु लखनऊ की गद्दी पर जबसे योगी आदित्यनाथ के मुख्यमंत्री के रूप में सत्तारूढ़ हुई है तब से हर मुहर्रम के 2 दिन पहले ही राजा उदय प्रताप सिंह के भंडारे पर पाबंदी लगा दी जाती है और उनको उनके ही राजमहल में नजरबंद कर दिया जाता है। इस वर्ष भी उनको मुहर्रम के एक दिन पहले शाम 5 बजे से मुहर्रम की रात 10 बजे तक के लिए नजरबंद कर दिया गया था। इस दौरान प्रतापगढ़ के जिला अधिकारी और पुलिस अधीक्षक नजरबंदी के दौरान ही मुहर्रम के पहले की रात उनको लेकर भंडारा स्थल यानि की मंदिर के पास गए और वहां से भगवा झंडों को हटाने के लिए कहा राजा उदय प्रताप सिंह के करीबी निर्भय सिंह ने झंडा हटाने के लिए स्पष्ट रूप से मना कर दिया। इसके बाद मोहर्रम के दिन उनके नजरबंदी के दौरान आरक्षण समीक्षा मोर्चा के राष्ट्रीय संयोजक पत्रकार वीरेंद्र सिंह अपने कुछ साथियों और पत्रकारों के साथ प्रयागराज से उनसे मिलने पहुंचे तभी एडिशनल एसपी ओपी पांडे से भी उनकी तीखी नोकझोंक हुई । दूसरे दिन समाचार पत्रों में प्रकाशित किया गया कि राजा उदय प्रताप सिंह के ऊपर दो पक्षों के मध्य दंगा कराने के प्रयास में गैर जमानती धाराओं में मुकदमा दर्ज कर दिया गया है, वैसे नजरबंदी का यह कार्य और भंडारे पर पाबंदी 2017 से लगातार हो रही है परंतु अबकी बार मामला काफी चर्चा में इसलिए आ गया क्योंकि एफ0आई0 आर0 दर्ज होने पर उनके सुपुत्र कुंवर रघुराज प्रताप सिंह राजा भैया के दल जनसत्ता दल (लोकतांत्रिक) के द्वारा प्रत्येक जिलों में भाजपा सरकार के द्वारा किए गए इस कदम का खुलकर विरोध किया जा रहा है और हर जिले में सरकार के पुतले का दहन और धरना प्रदर्शन भी किया जा रहा है और राजा उदय प्रताप सिंह को सनातन धर्म का असली रक्षक बताया जा रहा है। जनसत्ता दल के वरिष्ठ नेता और पूर्व सांसद अक्षय प्रताप सिंह उर्फ गोपाल जी ने इस बात का ऐलान कर दिया है कि गैर जमानती धाराओं में नामजद किए गए 87 वर्षीय राजा उदय प्रताप सिंह को गिरफ्तार किए जाने से पहले पुलिस को जनसत्ता दल के कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार करना होगा दूसरी तरफ कुंडा के कोतवाल ने मामले की विवेचना करने से स्पष्ट रूप से मना कर दिया है।

क्या बोले राजा उदय प्रताप सिंह-

मीडिया कर्मियों के सामने बहुत कम आने वाले राजा उदय प्रताप ने इस मामले पर कहा कि बड़े दुख की बात है कि हिंदुत्ववादी सरकार में भंडारे पर रोक सिर्फ इसलिए लगाई जा रही है ताकि मुहर्रम का जुलूस शांति के साथ निकल सके जबकि पिछली सरकारें मुहर्रम और भंडारा दोनों शांतिपूर्वक संपन्न करा लेती थी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मानद पदाधिकारी रह चुके राजा उदय प्रताप सिंह ने बताया कि वे राम मंदिर आंदोलन के दौरान कई बार जेल जा चुके हैं साथ ही साथ उन्होंने सनातन धर्म के पतन पर भी चिंता जताई। उन्होंने यहां तक कहा कि कोई विकल्प ना होने के कारण हिंदू समाज भले ही भारतीय जनता पार्टी के साथ है लेकिन सच्चाई यही है कि यह सरकारें हमारे साथ नहीं है। उन्होंने कहा कि प्रशासन के इस रवैया के कारण हिंदुओं और मुसलमानों के मध्य खाई और गहरी होगी।

योगी आदित्यनाथ के हिंदुत्व पर प्रश्न!

राजा उदय प्रताप सिंह के भंडारे पर रोक से भारतीय जनता पार्टी के हिंदुत्व पर प्रश्न चिन्ह लग रहा है, अमेठी, कौशांबी, हमीरपुर, कौशांबी, आगरा, एटा, फतेहपुर प्रतापगढ़,व रायबरेली जैसे तमाम जिलों में विभिन्न संगठनों ने सरकार का पुतला फूंका और योगी आदित्यनाथ के हिंदुत्व पर प्रश्नचिन्ह खड़ा किया समाजवादी पार्टी ने भी कानून व्यवस्था के नाम पर भंडारे पर रोक को प्रदेश सरकार की नाकामी करार दिया है। आरक्षण समीक्षा मोर्चा के राष्ट्रीय संयोजक वीरेंद्र सिंह ने कहा है कि यदि हिंदुत्ववादी सरकार के दौरान में भंडारा नहीं होगा तो भंडारा कब होगा? उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी की सरकार के दौरान उसे नमाज वादी पार्टी का खिताब देने वाले योगी आदित्यनाथ मुख्यमंत्री के तौर पर भंडारे को क्यों रुकवा रहे हैं, जबकि राजा उदय प्रताप सिंह हमेशा सनातन धर्म की रक्षा के लिए तैयार रहे हैं उन्होंने राजा उदय प्रताप सिंह के द्वारा कश्मीरी पंडितों की मदद और राम मंदिर आंदोलन के दौरान कारसेवकों के लिए भोजन और जलपान की व्यवस्था की चर्चा की और उन्हें सनातन धर्म का सच्चा हितैषी बताया। पत्रकार वीरेंद्र सिंह ने बताया कि राजा उदय प्रताप सिंह ने प्रयागराज के झूसी स्थित अपना बड़ा राजमहल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को दान कर दिया है।जब इस तरह का व्यवहार सरकार उनके साथ कर रही है तो बाकियों के साथ व्यवहार कैसा होगा ? यह समझा जा सकता है।

कौन हैं राजा उदय प्रताप सिंह?

राजा उदय प्रताप सिंह प्रतापगढ़ के भदरी रियासत के राजा हैं, भदरी रियासत 14 कोस यानी लगभग 43 किलोमीटर की परिधि में फैली हुई है। राजा उदय प्रताप सिंह के पिता त्रिलोचन सिंह थे। उनके बड़े भाई राजा बजरंग बहादुर सिंह ने राजा उदय प्रताप सिंह को गोद लिया था । बजरंग बहादुर सिंह हिमाचल प्रदेश के गवर्नर और पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपति भी रह चुके थे। बजरंग बहादुर सिंह भारत छोड़ो आंदोलन और असहयोग आंदोलन में शामिल रह चुके थे। उन्होंने ही हिंद फ्लाइंग क्लब की स्थापना की थी जिस पर बाद में चलकर लखनऊ का अमौसी एयरपोर्ट बना । आजादी के पहले ही उनके पास चार हवाई जहाज थे। राजा उदय प्रताप सिंह के सुपुत्र कुंवर रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भैया उत्तर प्रदेश की 5 सरकारों में कैबिनेट मंत्री रह चुके हैं इसके अलावा वह 1993 से लगातार कुंडा से निर्दलीय विधायक चुने जाते रहे हैं। 2017 के विधानसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक वोटो से जितने का रिकार्ड कायम किये थे।विदित हो कि विगत चुनाव में 1 लाख 4 हजार के मतों से राजा भैय्या विजयी हुए थे। उन्होंने पिछले वर्ष अपने राजनीतिक दल जनसत्ता दल लोकतांत्रिक का गठन किया है। राजा उदय प्रताप सिंह प्रतिदिन प्रयागराज लखनऊ मार्ग पर कुंडा हरनामगंज रेलवे स्टेशन पर यात्रियों के लिए जलपान की व्यवस्था कराते हैं इसके लिए उन्होंने 15 व्यक्तियों की नियुक्ति भोजन बनाने के लिए और वितरण के लिए 75 व्यक्तियों की नियुक्ति की है। कभी कभी प्रयागराज आकर संगम क्षेत्र मे भी अन्न दान करते है। राजा उदयप्रताप सिंह सारे भोज्य पदार्थों को स्वयं अपनी निगरानी में राजमहल भदरी में बनवाते राजमहल भदरी में आटा गूंथने की मशीन, सब्जी काटने की मशीन, और रोटी बनाने तक की मशीन उपलब्ध है। राजा उदय प्रताप सिंह ने भारत के प्रतिष्ठित दून स्कूल के अलावा जापान विश्वविद्यालय से एग्रीकल्चर में ग्रेजुएशन किया है वह बड़े पर्यावरण के प्रेमी के रूप में जाने जाते हैं ।भदरी रियासत के अंतर्गत कोई भी व्यक्ति पेड़ नहीं काट सकता है इसके अलावा किसी भी बाजार में पॉलिथीन की बिक्री नहीं होती है। कहा जाता है कि पर्यावरण के प्रेमी राजा उदय प्रताप सिंह 'प्रकृति' नामक संस्था के माध्यम से पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक करने का कार्य किया करते हैं। इसके अलावा वह राजनीति से काफी दूर रहते हैं हालांकि उनके सुपुत्र रघुराज प्रताप सिंह उत्तर प्रदेश की राजनीति के धुरी रह चुके हैं। मोदी सरकार द्वारा एससी एसटी एक्ट 2018 संशोधन बिल का राजा उदय प्रताप सिंह ने प्रयागराज में आकर जोरदार विरोध किया था। यह विरोध प्रदर्शन आरक्षण समीक्षा मोर्चा के राष्ट्रीय संयोजक पत्रकार वीरेंद्र सिंह के नेतृत्व में हुआ था। इसी के बाद यह आंदोलन पूरे देश में फैल गया था। राजा उदय प्रताप सिंह जी आरक्षण के मुद्दे पर समाज के गरीब गुरबे को आरक्षण दिए जाने के हिमायती हैं पर अमीरों के नही। राजा उदय प्रताप सिंह जी सर्वप्रथम अपना इस मुद्दे पर साक्षात्कार पत्रकार वीरेंद्र सिंह को ही दिया था। एक कार्यक्रम के तहत यह प्रयागराज में आए थे और गाड़ी में चलते चलते उन्होंने प्रथम इंटरव्यू आरक्षण के मुद्दे पर दिये थे जो पूरे देश में वायरल हुआ था। उन्होंने कहा था कि समाज में सरकार द्वारा कुछ वर्गों को इतनी सहूलियत दी जाती है जबकि समाज के कुछ वर्गों के साथ सरकार बहुत नाइंसाफी करती है।राजा उदय प्रताप सिंह जी अपने प्रथम साक्षात्कार में पत्रकार वीरेंद्र सिंह से कहा था कि हम प्रमोशन में आरक्षण के घोर विरोधी हैं।

■

निर्भीक पत्रकारिता का सर्वोच्च स्वर - बी बी सी

✍ संजय गुप्ता

इस समय विश्व का अधिकांश भाग हिंसा, संकट, सत्ता संघर्ष, साम्प्रदायिक व जातीय हिंसा तथा तानाशाही आदि के जाल में बुरी तरह उलझा हुआ है। परिणाम स्वरूप अनेक देशों में आम लोगों के जान माल पर घोर संकट आया हुआ है। मानवाधिकारों का घोर हनन हो रहा है। लाखों लोग विस्थापित होकर अपने घरों से बेघर होने के लिए मजबूर हैं। ऐसे कई देशों में बच्चों व महिलाओं की स्थिति ख़ास तौर पर अत्यंत दयनीय है।सीरिया,यमन व अफ़ग़ानिस्तान जैसे देश तो लगभग पूरी तरह तबाह हो चुके हैं। ऐसे में किस देश की आम जनता पर क्या गुज़र रही है इसकी सही जानकारी जुटा पाना भी एक बड़ी चुनौती बन गया है। ले देकर मीडिया ही एक ऐसा स्रोत है जिससे किसी भी घटना अथवा विषय की सही जानकारी हासिल होने की उम्मीद लगाई जा सकती है। परन्तु दुर्भाग्यवश संकटग्रस्त विभिन्न देशों का मीडिया भी अपनी निष्पक्षता व विश्वसनीयता खो चुका है या खोता जा रहा है। अनेक देशों का मीडिया या तो सत्ता के हाथों की कठपुतली बन गया है या सैन्य नियंत्रण का शिकार है अथवा तथाकथित राष्ट्रवाद का चोला ओढ़ कर पत्रकारिता के अपने वास्तविक दायित्व को भूल चुका है। विश्व के अनेक मीडिया संस्थान ऐसे भी हैं जो पत्रकारिता से अधिक व्यवसायिकता को महत्वपूर्ण मानते हुए सत्ता प्रतिष्ठान के विरुद्ध लिखने या बोलने का साहस ही नहीं जुटा पा रहे हैं। भले ही सत्ता द्वारा मानवाधिकारों का कितना ही हनन क्यों न किया जा रहा हो। अनेक मीडिया संस्थान ऐसे भी हैं जो सत्ता की चाटुकारिता की पराकाष्ठा तक पहुँच चुके हैं और उनके पास जनता से जुड़े वास्तविक मुद्दे उठाने का मानो वक़्त ही नहीं है। वे इसके बजाए धर्म,जाति,भाषा और राष्ट्रवाद व संस्कृति जैसे मुद्दे प्राथमिकता से उठाते हैं ताकि जनता का ध्यान जनसरोकार से जुड़े मुद्दों से भटकाकर भावनात्मक विषयों में उलझा कर रखा जाए। ज़ाहिर है ऐसे में दुनिया को अनेक संकटग्रस्त देशों व क्षेत्रों के आम लोगों की सही स्थिति व दशा का ज्ञान नहीं हो पाता।

विश्व में बढ़ते जा रही पूर्वाग्रही व पक्षपातपूर्ण पत्रकारिता का आलम यह है कि अनेक पक्ष के लोगों ने अपनी मनमानी ÷डफ़ली÷ बजाने के लिए अपने कई निजी टी वी चैनल शुरू कर दिए हैं तथा अपने 'प्रवक्ता' रुपी कई अख़बार व पत्रिकाएं प्रकाशित कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त सत्ता का गुणगान करने व पूर्वाग्रही विचार रखने वाले अनेक कथित लेखकों को भी मैदान में उतारा गया है जो सत्ता के गुणगान करने तथा सत्ता के आलोचकों पर हमलावर होने जैसी अपनी 'सरकारी ज़िम्मेदारी' निभा रहे हैं। इसी प्रकार मुख्य धारा के कई टी वी चैनल्स के अनेक एंकर टी वी पर युद्धोन्माद फैलाने व साम्प्रदायिकता परोसने के विशेषज्ञ बन गए हैं। झूठी ख़बरें तक प्रकाशित करना इनके लिए साधारण सी बात है। पत्रकारिता पर छाते जा रहे इस गंभीर संकट का एक दुष्प्रभाव यह भी पड़ रहा है कि ईमानदार, अच्छे, ज्ञानवान व पत्रकारिता के मापदंडों पर खरे उतरने वाले अनेक ऐसे पत्रकार जो अपने मीडिया संस्थान के स्वामी के साथ अपने ज़मीर का सौदा नहीं कर सके और पत्रकारिता को व्यवसायिकता पर तरजीह देने का साहस किया ऐसे अनेक पत्रकार बड़े बड़े चाटुकार व सत्ता की गोद में खेलने वाले मीडिया संस्थानों से नाता तोड़ कर अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए हुए हैं और पत्रकारिता जैसे पवित्र व ज़िम्मेदाराना पेशे की अस्मिता की रक्षा करने में लगे हैं। हालांकि ऐसे पत्रकारों को इसका ख़मियाज़ा भी भुगतना पड़ता है। कहीं तो वह पक्ष पत्रकार की जान का दुश्मन बन जाता है जिसको यह महसूस होता है कि इसकी निष्पक्ष पत्रकारिता उसे बेनक़ाब कर रही है तो कभी संकटग्रस्त क्षेत्रों से सही ख़बर जुटाने के दौरान किसी पत्रकार को अपनी जान भी गंवानी पड़ती है।

मीडिया पर छाए अनिश्चितता के इस दौर में भी राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कुछ मीडिया संस्थान ऐसे भी हैं जो पत्रकारिता की अपनी ज़िम्मेदारियों को बखूबी निभा रहे हैं। यदि आज के दौर में इस तरह के ज़िम्मेदार मीडिया हॉउस न हों तो कोई भी ऐसा दूसरा स्रोत नहीं जो हमें संवेदनशील स्थानों की सही जानकरी दे सके। ऐसे ही एक कर्तव्यनिष्ठ मीडिया घराने का नाम है बी बी सी। 1922 में सर्वप्रथम ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कंपनी के नाम से स्थापित तथा अपनी स्थापना के मात्र 5 वर्षों बाद अर्थात 1927 में ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कार्पोरेशन के नाम से जाना जाने वाला मीडिया संस्थान अपनी स्थापना के समय से ही अपनी विश्वसनीयता,निर्भीकता तथा बेबाकी के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध रहा है। बी बी सी 'सबसे तेज़ ' की नीति पर चलने के बजाए 'सबसे विश्वसनीय' होने की नीति पर चलता रहा है। जनभागीदारी के आधार पर चलने वाला यह संस्थान हमेशा ही दबाव मुक्त रहा है। बेशक निष्पक्ष और बेलाग लपेट की पत्रकारिता करने की जितनी क़ुर्बानी बी बी सी को देनी पड़ी है उतनी किसी दूसरे मीडिया घराने के लोगों को नहीं देनी पड़ीं। आज भी बी बी सी सीरिया, अफ़ग़ानिस्तान, इराक़, फ़िलिस्तीन, पाकिस्तान, म्यांमार, यमन, कश्मीर तथा ब्लूचिस्तान जैसे संवेदनशील इलाक़ों की रिपोर्टिंग पूरी ईमानदारी व ज़िम्मेदारी के साथ करने का प्रयास कर रहा है। हालांकि बी बी सी को पत्रकारिता के वास्तविक सिद्धांतों पर चलने का ख़मियाज़ा भी भुगतना पड़ रहा है। अकेले अफ़ग़ानिस्तान में ही 1990 से शुरू हुए गृह युद्ध में अब तक बीबीसी के पांच पत्रकारों की हत्या हो चुकी है। गत वर्ष कश्मीर में आतंकवादियों ने बी बी सी के ही शुजात बुख़ारी की हत्या कर दी थी। बी बी सी के कई पत्रकार ख़तरनाक जगहों से रिपोर्टिंग करते हुए भी अपनी जानें गँवा चुके हैं।

दरअसल जिस पक्ष को निष्पक्ष व ज़िम्मेदार पत्रकारिता नहीं भाती वही पक्ष बी बी सी का बैरी हो जाता है। उदाहरण के तौर पर पिछले दिनों अफ़ग़ानिस्तान पर एक विस्तृत रिपोर्टिंग करते हुए बी बी सी ने यह दावा किया कि अफ़ग़ानिस्तान में पिछले महीने एक हज़ार तालिबानी लड़ाके मारे गए।परन्तु तालिबान और अफ़ग़ान सरकार दोनों ने ही मारे गए लोगों के बीबीसी के आंकड़ों की वैधता पर सवाल उठाए। तालिबान ने कहा कि वो पिछले महीने एक हज़ार लड़ाकों के मारे जाने के बीबीसी के दावों को पूरी तरह ख़ारिज करता है और इसे निराधार मानता है। इनदिनों कश्मीर में धारा 370 की समाप्ति के बाद राज्य में पैदा हालात की रिपोर्टिंग भी बी बी सी द्वारा बड़े ही बेबाक तरीक़े से की जा रही है। हालाँकि अपनी नियमित प्रेस कांफ़्रेंस में भारत सरकार का पक्ष अपनी सुविधा व नीतियों के अनुरूप रखा जा रहा है परन्तु बी बी सी सरकारी पक्ष रखने के साथ साथ अपने सूत्रों से जुटाई गई आम जनता से जुड़ी वह ख़बरें भी प्रसारित कर रहा है जिसे सरकारी पक्ष प्रसारित करना या कराना नहीं चाहता। कश्मीर संबंधी कई रिपोर्ट्स में सरकार व बी बी सी के दावों में परस्पर विरोधाभास भी दिखाई दिया है। 'सरकारी भाषा' बोलने वाले कई पत्रकार बी बी सी की इस ज़िम्मेदाराना पत्रकारिता को 'भारत विरोधी पत्रकारिता' का नाम भी दे रहे हैं। मज़े की बात तो यह है कि यही बी बी सी जब ब्लोचिस्तान या पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों पर हो रहे ज़ुल्म के मुद्दे उठता है उस समय उन लोगों को बी बी सी की पत्रकारिता 'भारत विरोधी' नहीं महसूस होती बल्कि 'आदर्श पत्रकारिता' लगती है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि चाटुकार व दलाल मीडिया के वर्तमान दौर में निःसंदेह बी बी सी निष्पक्ष व निर्भीक पत्रकारिता का आज भी सर्वोच्च स्वर है। ■

मेट्रो के उद्घाटन में भाजपा का मुँह बंद किया कमलनाथ ने

✍ देवदत्त दुबे

कमलनाथ को जब कांग्रेस पार्टी ने प्रदेश अध्यक्ष बनाया था तब भाजपा नेता उन्हें के उद्योगपति कहते हुए थकते नहीं थे लेकिन धीरे धीरे कमलनाथ विकास की इबारत तो लिख ही रहे हैं समय-समय पर भाजपा नेताओं को आईना भी दिखा रहे।

दरअसल किसी भी नेता की असलियत तब पता चलती है जब वह किसी महत्वपूर्ण पद पर पहुंचता है विपक्ष में रहते हुए या संगठन की नेतागिरी करते हुए यह समझ पाना मुश्किल होता है की पावर आने पर नेता क्या काम कर पाएंगे बहुत कम नेता ऐसे होते हैं जो पद पर आने के बाद उम्मीदों से ज्यादा काम करके दिखा पाते अन्यथा बातें बहुत की जाती हैं लेकिन काम बहुत कम कर पाते हैं ऐसे नेता राय सभी दलों में पाए जाते हैं।

कई बार ऐसा भी होता है कि काम करने के लिए अवसर नहीं मिलता और जिस तरह की ही राजनीतिक दलों में गुटबाजी चल रही है उसमें कई बार मंत्रियों को काम करने नहीं दिया जाता क्योंकि मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री अपने पास नियंत्रण रखते हैं लेकिन जिन नेताओं के पास विजन होता है कार्य करने की ललक होती है वे जहां भी रहते हैं वहां काम करते हैं और बखान करने में विश्वास नहीं रखते लेकिन जब कोई किसी काम की श्रेय लेने की कोशिश करता है तो उसे जवाब देने में भी पीछे नहीं हटते ऐसा ही कुछ मुख्यमंत्री कमलनाथ इस समय कर रहे हैं।

बहरहाल गुरुवार को भोपाल मेट्रो के उद्घाटन के अवसर पर भाजपा और कांग्रेस में श्रेय लेने की होड़ देखी गई। कांग्रेस के तमाम नेताओं ने जहां तथ्य और तर्क रखकर मेट्रो का पूरा श्री मुख्यमंत्री कमलनाथ को दिया।

वही महापौर आलोक शर्मा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को मेट्रो का श्रेय देने की कोशिश की लेकिन उनके भाषण के दौरान ही कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने हल्ला करना शुरु कर दिया और आलोक शर्मा ने आनन-फानन में अपना भाषण भी समाप्त कर दिया इसके बाद कांग्रेस की तरफ से नगरी प्रशासन मंत्री जयवर्धन सिंह और जनसंपर्क मंत्री पीसी शर्मा ने वह सब बातें बताएं जो मेट्रो लाने के लिए कमलनाथ को श्रेय दे रही थी लेकिन असलियत या तो कमलनाथ बता सकते थे या पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल गौर जो अब इस दुनिया में नहीं है या फिर पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान जोकि मंच पर नहीं थे ऐसे में प्राय आरोप-प्रत्यारोप से दूर रहने वाले मुख्यमंत्री कमलनाथ ने मेट्रो की पूरी कहानी बताई।

उन्होंने कहा कि वे जब केंद्र में मंत्री थे तब वे जयपुर मेट्रो का उद्घाटन करने गए थे तब उनके मन में विचार आया था की जब जयपुर बेंगलुरु मैं मेट्रो शुरू हो सकती है तो भोपाल में क्यों नहीं हो सकती और जयपुर से दिल्ली लौट कर

मैंने बाबूलाल गौर को फोन लगाया कि भोपाल में मेट्रो के लिए क्यों नहीं शुरुआत करते तब बाबूलाल गौर ने कहा कि हमारे पास तो डीपीआर बनाने के लिए पैसा नहीं है तब उन्होंने गौर से कहा कि वे प्रस्ताव भेजे राशि में स्वीकृत करूंगा और तब भोपाल के लिए 5 करोड़ रुपए स्वीकृत किए उन्होंने आलोक शर्मा की ओर मुखातिब होते हुए थे यह सब कहानी बताई और यह भी कहा कि भाजपा नेता जाएं और दिल्ली से राशि स्वीकृत करके लाए। फिर 3 साल में मेट्रो भोपाल में शुरू हो जाएगी यही नहीं उन्होंने भोपाल तालाब के लिए भी राशि स्वीकृत करने की बातें साझा की कमलनाथ ने यहां पर उन भाजपा नेताओं के मुंह बंद कर दिए जो भोपाल तालाब और मेट्रो के लिए भाजपा नेताओं के प्रयासों की चर्चा करते थे। या श्रेय लेते थे यही नहीं पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने तो कमलनाथ को पाउडर बाबूलाल गौर से भी बड़ा बुलडोजर कमलनाथ को बताया। उन्होंने कहा कमलनाथ जी जो काम हाथ में ले लेते हैं वह पूरा करके ही छोड़ते हैं।

कुल मिलाकर मेट्रो के उद्घाटन के अवसर पर मुख्यमंत्री कमलनाथ ने जहां मेट्रो का शुरू से लेकर अब तक के काम का श्रेय लिया वहीं भाजपा नेताओं के मुंह बंद भी कर दिए। वैसे तो मुख्यमंत्री कमलनाथ के खाते में लगातार उपलब्धियां जा रही हैं, या उनके नाम की पट्टी का महत्वपूर्ण उपलब्धियों में लग रही है मुख्यमंत्री बनने के बाद नए मंत्रालय के भवन में सबसे पहले उनकी पट्टी का लगी जिसकी नीव खोदने से लेकर भव्य इमारत के बनने तक पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मॉनिटरिंग की इसी तरह मेट्रो पर चौहान ने इंदौर और भोपाल में खूब भाषण दिए लेकिन दोनों जगह पट्टी का मुख्यमंत्री कमलनाथ की लगी जाहिर है मुख्यमंत्री कमलनाथ के खाते में एक-एक करके ऐसी उपलब्धियां आ रही है जो कि वर्षों तक याद की जाएंगी इतिहास में दर्ज रहेंगे शिलालेख को कोई कितना भी झूठ लाए झुठला नहीं पाएगा। ■

मध्यप्रदेश में हनी मनी का सन्नाटा

✍ मध्य प्रदेश ब्यूरो

मध्यप्रदेश में हनी ट्रैप कांड के उजागर होने के बाद जहां चाय चौपाल से लेकर मंत्रालय तक मैं खुसर पुसर हो रही है वही एक के बाद एक सेक्स रैकेट उजागर हो रहे हैं ऐसा लगता है जैसे मध्य प्रदेश को सेक्स हब बनाने में कुछ अफसरों कुछ नेताओं और कुछ पत्रकारों ने कोई कसर नहीं छोड़ी है मध्य प्रदेश देश का हृदय स्थल है जिसे कभी औद्योगिक हब तो कभी एजुकेशन हब तो कभी पर्यटन का हब बनाने की बातें की गई लेकिन पिछले दिनों जिस तरह से एक के बाद एक सेक्स रैकेट उजागर हो रहे हैं और उसमें अधिकारी नेता व्यापारी और पत्रकारों की शामिल होने की चर्चाएं आ रही है उससे लगता है मध्य प्रदेश को बदनाम करने में किसी ने कोई कसर नहीं छोड़ी है हनी ट्रैप मामले में जिस तरह से एक के बाद एक खुलासे हो रहे हैं। उससे लगता है की मध्य प्रदेश मैं कुछ लोगों की काली करतूतों का जाल देश के अन्य राज्यों में भी फैल चुका था। यदि इंदौर के हरभजन सिंह ने इसका भंडाफोड़ नहीं किया होता तो ना जाने और कितने लोग इस हनी मनी के जाल में फंसते । हनी ट्रैप कांड मैं नित नए खुलासे हो रहे हैं सरकार ने एसआईटी गठित की और 24 घंटे के अंदर ही उसके मुखिया को बदल दिया क्योंकि क्योंकि यह मामला बेहद गंभीर होता जा रहा है इसमें जो लोग शामिल हैं वे इतने रसूखदार है कि वे मामले को दबाने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं इसमें जिस तरह से अधिकारियों व नेताओं की संलिप्तता नजर आ रही है उससे से अंदाज लगाना मुश्किल है कि आखिर यह हनी मनी का खेल प्रदेश में कब से चल रहा था और इसका नेटवर्क कहां कहां तक फैल गया है। पिछले 3 दिनों में ही बड़े बड़े सेक्स रैकेट का खुलासा हुआ है जिसमें सांची के पास की होटल में लड़के और लड़कियां बरामद हुये है उनकी संख्या एक दर्जन से ज्यादा है इसी तरह अयोध्या नगर थाने के अंतर्गत महंगी गाड़ियां और मलाईदार लोगों को फँसाने का जो कांड हो जाकर हुआ है उसमें व्यापारियों को अच्छा खासा ब्लैकमेल किया गया है। यहां पर अयोध्या नगर थाने के तत्कालीन थाना प्रभारी और 3 सिपाही भी गैंग में शामिल बताए जाते यहां की ब्लैकमेलर गैंग अपने हुस्न के जाल में लगभग एक दर्जन व्यापारियों को शिकार बनाकर वसूली कर चुकी है समाज में बदनामी के डर से व्यापारी गैंग के इशारे पर नाचते गए और रकम देकर ब्लैकमेल होते रहे।

इधर मंगलवार को पुलिस ने क्राइम ब्रांच के साथ मिलकर कोलार दानिश कुंज में एक सेक्स रैकेट को पकड़ा है जिसमें 9 युवतियां और 11 युवक शामिल थे यहां पर मुंबई और नागपुर से युवतियां बुलाई जाती है । एसपी शैलेंद्र चौहान का मानना है इस रैकेट के तार इंदौर हनी ट्रैप कांड से भी जुड़े हो सकते हैं। कुल मिलाकर अस्मत के बदले किस्मत बदलने वालों ने लगता है। कहीं कोई संकोच नहीं किया है बड़ी बेशर्मी से युवतियों का इस्तेमाल किया गया है । सेक्स के बदले फायदे दिए गए हैं। जब एसआईटी एक के बाद एक इन मामलों की परतें खोलेगी तब पता चलेगा कि आखिर यह बीमारी कहां तक फैल गई है। यदि नेताओं और अफसरों पर सत्ता और पैसे का नशा सवार नहीं होता तो फिर यह बीमारी प्रदेश में इस कदर नहीं फैल पाती। प्रदेश में इस समय हनी मनी का सन्नाटा है गली कूचे से लेकर मंत्रालय तक खुसर पुसर हो रही है और एक दूसरे से पूछ रहे हैं और किस-किस के नाम सामने आ रहे हैं इस कांड में कौन-कौन शामिल थे लेकिन हनी ट्रैप कांड मैं अभी तक बड़े नाम उजागर नहीं किए गए हैं। लेकिन प्रदेश में जगह-जगह जिस तरह से सेक्स रैकेट का भंडाफोड़ हो रहा है उससे प्रदेश में काली करतूत करने वालों का जाल महानगरों से लेकर छोटे-छोटे कस्बों तक फैल गया है जिस पर लगाम लगाना बहुत जरूरी है अन्यथा कितने लोग ब्लैकमेल होते रहेंगे और कितने युवा युवतियां अपना भविष्य बर्बाद करते रहेंगे कहा नहीं जा सकता है। ■

ना उम्मीदी के बीच उम्मीद की फसल उगाते 'नाथ'

✍ मध्य प्रदेश ब्यूरो

मध्यप्रदेश में कांग्रेस के सबसे वरिष्ठ और अनुभवी नेता मुख्यमंत्री कमलनाथ भले ही चौतरफा चुनौतियों से घिरे हो। सरकार का सकारात्मक संदेश नहीं बन पा रहा हूं लेकिन कमलनाथ इस ना उम्मीदी के बीच उम्मीद की फसल उगाने के लिए भरपूर प्रयास कर रहे हैं। किसी भी सरकार के प्रति दल के प्रति या व्यक्ति के प्रति कोई परफेक्शन बन जाता है तब उसको तोड़ना बड़ा मुश्किल होता है राजनीति में दलों के प्रति नेताओं के प्रति समय-समय पर अलग-अलग धारणाएं बनती रही और फिर उसको तोड़ने में बहुत ज्यादा शक्ति और बहुत ज्यादा समय लगता है। जैसा कि एक समय ब्राह्मण, मुस्लिम, दलित, आदिवासी, कांग्रेस का पक्का वोट बैंक हुआ करता था । लेकिन विपक्षी दलों ने धीरे-धीरे प्रयास करते करते इस वोट बैंक में सेंध लगाई जिसके कारण पूरे देश में कांग्रेस कमजोर हो गयी है। इसी तरह व्यक्ति विशेष के प्रति भी धारणा बन जाती हैं जो बड़ी मुश्किल से बदल पाते है। इसी के कारण राजनीति में मीडिया का महत्त्व बना हुआ है। क्योंकि इतने बड़े देश में कोई किसी को करीब से नहीं जान पाता लेकिन मीडिया में आने वाली खबरों से वह धारणा बनाता है। कभी किसी की पॉजिटिव पब्लिसिटी होती है कभी किसी की नेगेटिव और इसी के आधार पर एक माहौल बनता है यही कारण है की राजनीतिक दल और उनके नेता अपनी सकारात्मक छवि बनाने के लिए मीडिया मैनेजमेंट पर खासा जोर देते है बहरहाल 15 वर्षो के बाद जब प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनी तब से सरकार बनाने के लिए चार निर्दलीयों के साथ-साथ दो बसपा और एक सपा के विधायक का भी सहयोग लेना पड़ा और यहीं से विपक्षी दल भाजपा ने सरकार को अल्प मत कहना लंगड़ी लूली सरकार कहना और कभी भी गिर जाने वाली सरकार बताना शुरू कर दिया फिर जैसे तैसे सरकार ने निर्णय लेने शुरू किए तो निर्णय ऊपर प्रश्न चिन्ह खड़े करने शुरू किए तबादला उद्योग से लेकर अवैध रेत उत्खनन किसानों की अधूरी कर्ज मुक्ति कुछ ऐसे मुद्दे अल्प समय में ही उभर कर आए। जिससे सरकार की नकारात्मक छवि बनने लगी रही सही कसर कांग्रेस के नेताओं ने आपस में बयानबाजी करके पूरी कर दी वैसे भी कमलनाथ सरकार को प्रदेश का खजाना खाली मिला था ऐसे माहौल में प्रदेश में जो एक वातावरण बना वह इस बात को लेकर बन गया कि यह सरकार कब तक चलेगी और जब सरकार के बारे में ऐसी धारणा बन जाए तो फिर अधिकारी कर्मचारी से लेकर फूल छाप कांग्रेसी तक सरकार की मजबूती के लिए आगे नहीं आते। अनुभवी नेता मुख्यमंत्री कमलनाथ ने हार नहीं मानी है और वे इन सब बातों से बेखबर केवल इस बात पर लगे हुए हैं कि कैसे अपनी गुल्लक को वे एक-एक करके उपलब्धियों से भरे । जिससे लोगों की कार्यकर्ताओं की इस सरकार के प्रति उम्मीद बने । लेकिन यह काम बेहद कठिन है एक तरफ उन्हें पार्टी में समन्वय बनाना है तो दूसरी ओर अधिकारियों के बीच सामान्य से बना कर सरकार के कार्यों को आम जनता तक पहुंचाना है। और ऐसा संदेश बनाना है जिसमें कम से कम यह उम्मीद तो बन ही जाए यह सरकार पूरे 5 साल चलेगी और इस सरकार में ऐसे काम हों। ठोस प्रयास होंगे जो पिछले वर्षों में नहीं हो पाए कुल मिलाकर माना जा रहा है की पार्टी का प्रदेश अध्यक्ष सर्वसम्मति से बनवाने के बाद यदि वे नगरी निकाय और पंचायती चुनाव में पार्टी को सफलता दिला पाते हैं तो फिर वे पार्टी के अंदर बाहर अपनी स्वीकार्यता बढ़ा पाएंगे क्योंकि इस समय जो भी विधायक है चाहे वह सत्ता पक्ष के वहां विपक्ष के कोई चुनाव नहीं चाहता है कांग्रेस विधायकों को जहां फिर से चुनाव जीतने की मुश्किलें दिखाई दे रही हैं वहीं भाजपा विधायकों को इस बात का खटका है कि अगली बार टिकट मिलेगा कि नहीं ।

जब विधायक सरकार को चलाने के पक्ष में रहते हैं तब उस सरकार को गिराना बड़ा मुश्किल होता है। मुख्यमंत्री कमलनाथ को कुछ ऐसे काम जरूर तेजी से करने होंगे जिससे लोगों को उम्मीद बनने लगे कि सरकार हमारे लिए चिंतित है । यह सरकार हमारे हितों में काम करेगी खासकर बेरोजगारी की समस्या पर तेजी से काम करने की जरूरत है। इस समय प्रदेश का युवा बेरोजगारी के कारण या तो नशे की गिरफ्त में हो रहा है या फिर अवसाद की स्थिति में पहुंच रहा है। जब किसी परिवार का युवा इस स्थिति में हो तो फिर उस परिवार में कोई खुश नहीं रह पाता है । यदि मुख्यमंत्री कमलनाथ बेरोजगारों को रोजगार दिलाने में सफल हो गए जिन नौकरियों की वर्षों से उम्मीद लगाए उनमें नियुक्तियां शुरू कर दी तो फिर उम्मीदों के अंकुर पौधे तो बनेंगे फसल भी लहराए बिना नहीं रह सकती। ■

काँग्रेस गाँधी पथ का अनुगमन

✍ भोपाल ब्यूरो

महात्मा गांधी के 150 में जन्म वर्ष आयोजन के बहाने कांग्रेस पार्टी युवा पीढ़ी को गांधी जी के व्यक्तित्व से परिचय कराएगी एवं उसे जीवन में अपनाएं इसके लिए गांधीजी के विचारों पर केंद्र स्थाई कार्यक्रम एवं अभियान चलाया जाएगा। आयोजन समिति की बैठक में देशभर से गांधी जी के विचारों को जीवन में उतारने वाले लोगों के साथ मुख्यमंत्री कमलनाथ ने बैठक की। दरअसल परंपरागत राजनीतिक मुद्दों की चमक फीकी पड़ जाने से अब नई पीढ़ी को नए सिरे से गांधी के विचारों से अवगत कराने के लिए कांग्रेस पार्टी ने अभियान चलाने का निर्णय लिया है । क्योंकि गांधी को देखने वाले समझने वाले और उनके रास्ते पर चलने वाले एक वह पीढ़ी धीरे धीरे खत्म हो चली है और उसी के कारण कांगेस भी कमजोर होती गई कांग्रेस की सबसे बड़ी पूंजी गांधी है। गांधी विचारधारा है और गांधी पथ का अनुगमन है। गांधीजी के जो प्रयोग है पीढ़ी को प्रभावित कर सकते हैं और कांग्रेसी जुड़ सकते हैं क्योंकि कांग्रेस ना तो कट्टर हिंदुत्व की तरफ जा सकती है। और ना ही कट्टर जातिवाद का सहारा ले सकती है कांग्रेस के पास केवल एक ही रास्ता है कि वह गांधी जी को आगे करके अपना खोया हुआ जनाधार वापस में प्राप्त करें। यही कारण है कि राष्ट्रीय स्तर पर पार्टी ने जहां गांधीजी के 150 में जन्म वर्ष को मनाने का निर्णय लिया है वही कांग्रेस शासित राज्य भी इस जन वर्ष के बहाने विभिन्न कार्यक्रम करके पार्टी को कार्यकर्ताओं को एक विशेष अभियान से जोड़कर आम जनता के बीच प्रभावी छवि बनाने का अवसर बना रही है। तो प्रदेश में कांग्रेस सरकार ने राम वन गमन पथ को बनाने का निर्णय लिया है। लेकिन वैचारिक रूप से पार्टी गांधी पथ का अनुगमन ही करना चाहेगी। इसी के चलते पार्टी ने पूरे वर्ष प्रदेश में स्थाई कार्यक्रम एवं अभियान चलाने का निर्णय लिया है। मंत्रालय में मुख्यमंत्री कमलनाथ की अध्यक्षता में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के 150 में जन्म वर्ष आयोजन समिति की बैठक हुई जिसमें मुख्य मंत्री ने कहा कि गांधीजी के विचार उनके दर्शन और सिद्धांतों को न केवल घर-घर तक पहुंचाना है बल्कि युवा पीढ़ी को गांधी जी के व्यक्तित्व और कृतिक से परिचय कराना है। उन्होंने कहा कि गांधीजी के विचार और उनकी प्रसंगिकता हमारे देश में सदैव रही है आज है और आगे भी रहेगी उन्होंने कहा कि जिस दौर में आज भारत गुजर रहा है उसमें यह सबसे ज्यादा जरूरी है कि हम गांधी जी के सिद्धांतों और उनके द्वारा स्थापित मूल्यों को जन-जन तक पहुंचाएं उसे लोग अपनाएं। बैठक में पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने आजादी में गांधी जी द्वारा अपनाए गए लड़ाई के प्रमुख शास्त्र जिनमें उन्होंने युवाओं महिलाओं आदिवासियों दलितों में नई चेतना जागृत करने खादी को लेकर जो उनका दर्शन था उसे जन जन तक पहुंचाने का सुझाव दिया। बैठक में महाराष्ट्र के वर्धा से आए सुमन बरन गांधीजी और पर्यावरण पर प्रकाश डाला चिंतक डॉक्टर एसएन सुब्बाराव ने सांप्रदायिक सद्भाव और देश की अखंडता को मजबूत बनाने वाले कार्यक्रम को करने पर जोर दिया। पूर्व महाधिवक्ता आनंद मोहन माथुर ने महापुरुषों पर लघु पुस्तकें बांटने को कहा जबकि गांधीवादी नेता पी राजगोपाल ने शांति और अहिंसा का एक मंत्रालय गठित करने पर बल दिया। चंद्रिका प्रसाद द्विवेदी ने बड़वानी जिले में आए गांधी के स्मारक को अन्य स्थान पर भव्य रूप में स्थापित करने और वास्तविक रूप में ग्राम स्वराज्य लागू करने युवा पीढ़ी को भ्रमित करने वाले इतिहास और उन्हें प्रदूषित करने वाली विचारधारा से मुक्त करने का अभियान चलाने का सुझाव दिया। हरदेनिया ने गांधी जी की शिक्षा संस्कृति महिलाओं और विश्व शांति को लेकर पहुंचे इनके अलावा करुणाकर त्रिवेदी, चिन्मय मिश्रा, घनश्याम सक्सेना, मीनाक्षी नटराजन ने भी अपने विचार रखे। बैठक में मंत्री विजय लक्ष्मी साधो, डॉक्टर गोविंद सिंह, पीसी शर्मा, प्रभु राम चौधरी, हर्ष यादव, कमलेश्वर पटेल आदि उपस्थित थे। लगभग सभी सदस्यों ने गांधी जी द्वारा सांप्रदायिक सद्भाव राष्ट्र की एकता सभी वर्गों के कल्याण और धर्म के प्रति उनके विचारों उनके दर्शन सिद्धांतों और मूल्यों को शहरों से लेकर गांव-गांव तक कैसे पहुंचाएं इसके बारे में महत्वपूर्ण सुझाव दिए। सभी सदस्यों ने एक स्वर में कहा कि आज के दौर में महात्मा गांधी के विचार और सिद्धांत की सबसे ज्यादा जरूरत है। इसके कुछ दिन पहले कांग्रेस पार्टी के विचार विभाग ने भी गांधी जीके 150 में जन्म वर्ष को विशेष रुप से मनाने का निर्णय लिया था जिसमें प्रदेश मैं भोपाल सागर दमोह जबलपुर इंदौर छिंदवाड़ा मंडला सिवनी बालाघाट और नरसिंहपुर जैसे स्थानों पर गांधी जी आए थे इन स्थानों को आकर्षक एवं पर्यटन के रूप में विकसित करने की योजना बनाई है। विचार विभाग कांग्रेस के प्रदेश उपाध्यक्ष भूपेंद्र गुप्ता का कहना है कि सरकार के सहयोग से हम इन स्थानों को आकर्षण का केंद्र बनाएंगे। कुल मिलाकर भाजपा के हिंदुत्व का मुकाबला कांग्रेस पार्टी गांधी विचारधारा पर फोकस बनाकर करेगी इसमें साफ्ट हिंदुत्व का तड़का रहेगा तो युवाओं को विशेष रूप से आकर्षित करने की योजनाएं कार्यक्रम और अभियान रहेगा। सरकार और संगठन साथ साथ मिलकर गांधी पथ का अनुगमन करेंगे लेकिन वैचारिक और व्यवहारिक रूप में कितना गांधीजी को उतार पाएंगे यह आने वाला वक्त ही बताएगा। ■

भाजपा दबाव प्रभाव से मुक्त होंगे संगठन के चुनाव

✍ देवदत्त दुबे

प्रदेश में 15 वर्षों तक लगातार भाजपा सत्ता में रही जिसके कारण पार्टी के संगठन के चुनाव मैं दबाव प्रभाव खूब चला एक तरह से मनोनयन होता रहा और अंत में जिसे मुख्यमंत्री ने चाहा वही प्रदेश अध्यक्ष बना लेकिन इस बार प्रदेश में भाजपा सत्ता में नहीं है तब पार्टी के कर्मठ कार्यकर्ताओं को उम्मीद बनी है उन्हें भी संगठन में पद पाने का मौका मिलेगा। राजनीतिक दल पार्टी के अंदर लोकतंत्र होने की कितने भी बातें करें लेकिन होता वही हैं जो दमदार नेतृत्व चाहता है। जहां भी दल सत्ता में होता है उस राज्य में मुख्यमंत्री के अनुरूप ही संगठन चुनाव की जमावट बूथ से लेकर प्रदेश तक होती आई है क्योंकि विधायक और मंत्री को इस काम में लगा दिया जाता है । कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में अपनी पसंद के संगठन पदाधिकारियों को निर्वाचित करवाएं लेकिन इससे धीरे-धीरे संगठन कमजोर हो जाता है। सदस्यता और निर्वाचन प्रक्रिया होने का फर्जीवाड़ा भी होने लगता है। लेकिन जब प्रदेश में दल सप्ताह में नहीं होता है तब संगठन के चुनाव दबाव प्रभाव से मुक्त होते हैं और कर्मठ एवं सक्रिय कार्यकर्ताओं को संगठन में मौका मिलने के अवसर बढ़ जाते हैं बहरहाल मध्यप्रदेश में संगठन चुनाव को लेकर सर गर्मी शुरू हो गई है लगभग 65000 से भी अधिक बूथों पर 22 सितंबर से 28 सितंबर के बीच बूथ समितियों का निर्वाचन हो जाना है और इसके लिए लगभग डेढ़ लाख कार्यकर्ताओं को तैयार किया जा रहा है। जो कि चुनाव कराएंगे इस बार संगठन की तरफ से सलाह दी गई है की बूथ कमेटियों पर ऐसे लोगों को चुने जिनका सामाजिक आधार हो जिनकी सक्रियता हो जो लोगों के सुख-दुख में शामिल होते हो और पूरी कोशिश की चुनाव आम सहमति से हो किसी भी प्रकार की मतदान कराने की नौबत ना आने पाए। पार्टी ने प्रदेश में संगठन के चुनाव कराने के लिए हेमंत खंडेलवाल को प्रदेश चुनाव अधिकारी और बृजेश लुणावत को सह चुनाव अधिकारी बनाया है। लंबे समय से संगठन से जुड़े बृजेश लुणावत संगठन के निर्देशों के तहत पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं तक संगठन की मंशा के मुताबिक चुनाव कराने की व्यवस्था देख रहे हैं जिसमें वे मंडल और जिले के पदाधिकारियों से फीडबैक लेकर चुनाव अधिकारी को पहुंचाते। लुणावत का मानना है कि पार्टी में चुनाव आपसी सहमति और रजामंदी से हो जाते हैं क्योंकि जब चार बड़े नेता बैठते हैं तो आपस में चर्चा करके जो योग्य होता है उसे चुन लिया जाता है। इसके बावजूद यदि कहीं चुनाव की भी नौबत आती है तो किसी भी प्रकार का दबाव प्रभाव नहीं है। जिसके पक्ष में सदस्य होंगे चुना जायेगा। प्रदेश चुनाव अधिकारी हेमंत खंडेलवाल का कहना है कि इस बार के चुनाव में बदलाव हुआ है कि पहले पर ग्राम पंचायत वार्ड स्तर पर चुनाव होते थे। जबकि इस बार पोलिंग बूथ स्तर पर चुनाव कराए जाएंगे प्रदेश में चुनाव प्रक्रिया शुरू हो गई है अब पूरी उम्मीद है कि आम सहमति से चुनाव संपन्न हो जाएंगे।

वैसे तो संगठन चुनाव मैं बड़े नेता कोई रुचि नहीं दिखा रहे लेकिन अंदर ही अंदर प्रदेश में नए सिरे से समीकरण बनाने की प्रक्रिया चल रही है जिसमें ऐसे कार्यकर्ताओं और नेताओं की तलाश की जा रही है जो गुटी राजनीति से दूर पार्टी के लिए समर्पित भाव से समय दे सकें क्योंकि प्रदेश में विपक्षी दल होने के नाते पार्टी को अभी संघर्ष तो करना

ताजा खबरो के लिए लॉगिन करें

www.sampurnamaya.in

संपूर्ण माया

भारत का सर्वाधिक बिकने वाला

मासिक हिन्दी समाचार पत्रिका

के साथ जुड़ने के लिए आपका स्वागत है

- यदि आप के शहर या नजदीकी बुक स्टाल पर संपूर्ण माया उपलब्ध नहीं है
- कोई लेख संपूर्ण माया में प्रकाशित कराना चाहते हैं
- संपूर्ण माया में छपे किसी विज्ञापन के बरे में जानना चाहते हैं
- प्रत्रिका विक्रेता हैं और संपूर्ण माया के विक्रेता बनना चाहते हैं
- अपने शहर से संपूर्ण माया प्रत्रिका के संवाददाता बनना चाहते हैं
- संपूर्ण माया प्रत्रिका के लिए विज्ञापन दिलवाने के लिए जुडना चाहते हैं

तो कर सकते हैं संपर्क

फोन: 7905230036 ईमेल : sampoornamaya@gmail.com

पता : संपुर्ण माया. 1/ए. हशिमपुर रोड टैगोर टाउन इलाहाबाद–211002

संपूर्ण माया नीचे लिखे राज्यों मे उपलब्ध है

उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, छत्तीसढ, मध्य प्रदेश, महाराष्ट, गुजरात
राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश उत्तराखंड, जम्मू कश्मीर, व दिल्ली

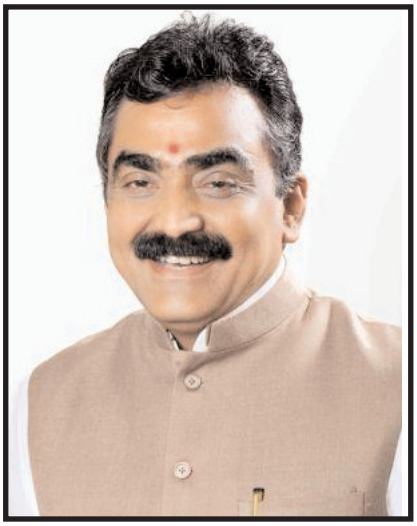

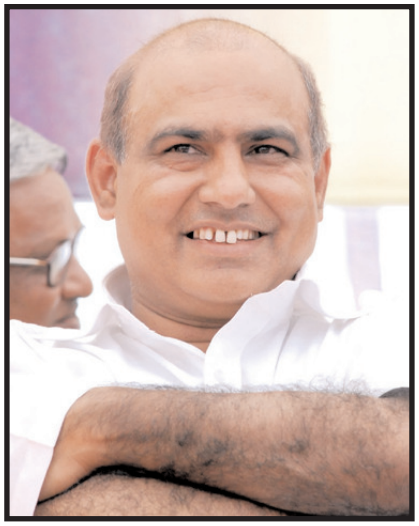

ही है और फिर कभी भी चुनाव का सामना करना पड़ सकता है। प्रदेश में पार्टी की सत्ता होने के कारण पिछले 15 वर्षों में अधिकांश पदाधिकारी सुविधा भोगी हो गए हैं। जिसके कारण कर्मठ और समर्पित कार्यकर्ता धीरे-धीरे घर बैठ गया यहां तक कि विधानसभा चुनाव के दौरान वह केवल वोट डालने तक ही सीमित रहा और शायद यही कारण है की पार्टी को प्रदेश में सत्ता गंवानी पड़ी आज भाजपा के कार्यकर्ता जब कांग्रेस कार्यकर्ताओं और नेताओं की धमक शासकीय कार्यालय में देखते हैं तो वे अपने शासनकाल को याद करके दुखी हो रहे हैं कि उनके शासन में उनकी कभी ऐसी धमक नहीं बन पायी क्योंकि अनुशासन बनाए रखने का चाबुक उनके ऊपर हमेशा हावी रहा और अधिकारी कर्मचारी भी अफसरशाही के कारण को भी महत्त्व नहीं देते थे कई बार मुख्यमंत्री चौहान ने विधायकों से वन टू वन चर्चा भी की और उनके समस्याएं सुनी लेकिन कार्यकर्ताओं की ऐसी समस्याएं सुनने वाला कोई दिखाई नहीं देता था हालांकि उन विधानसभा क्षेत्रों में कार्यकर्ताओं नेताओं की जलवे रहे जहां के मंत्री सरकार में महत्वपूर्ण स्थिति बनाए रखें कुल मिलाकर प्रदेश में भाजपा के संगठन चुनाव भले ही किसी दबाव और प्रभाव के साए में नहीं हो रहे हो लेकिन पार्टी नेता अपने समर्थकों को निर्वाचित कराने के लिए जोड़ तोड़ दो अंदर ही अंदर कर रहे हैं। प्रदेश में 11 सितंबर को घंटा नाद आंदोलन करके प्रदेश अध्यक्ष राकेश सिंह ने अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज करा दी है आंदोलन की समाप्ति के बाद प्रदेश कार्यालय में संगठन मंत्री सुहास भगत के साथ लगभग ढाई घंटे तक एकांत में हुई चर्चा को भी राजनीतिक समीक्षक संगठन चुनाव से जोड़कर देख रहे हैं क्योंकि पार्टी 15 दिसंबर तक नया प्रदेश अध्यक्ष चुन लेगी। 11से 31 अक्टूबर के बीच मंडल स्तर के और 11 नवंबर से 30 नवंबर के बीच जिला स्तर के चुनाव संपन्न हो जाएंगे। जाहिर है बिना किसी शोर-शराबे के शुरू हो चुके संगठन के चुनाव दबाव और प्रभाव से मुक्त होंगे लेकिन नेताओं की रुचि अपने अपने प्रभाव वाले इलाकों में असर जरूर दिखाएगी। ■

माना जा रहा है प्रदेश के अधिकांश जिलों में जो चुनाव अधिकारी बनाए गए हैं वे पूर्व मुख्यमंत्री चौहान के समर्थक माने जाते हैं वैसे भी मुख्यमंत्री बनने के पहले शिवराज सिंह चौहान की संगठन में खासी रुचि रही है एक बार तो हुई विक्रम वर्मा के खिलाफ प्रदेश अध्यक्ष के चुनाव में खड़े भी हो गए थे हालांकि जीत नहीं पाए थे मुख्यमंत्री बनने के बाद अधिकांश प्रदेश अध्यक्ष शिवराज समर्थक ही रहे हैं इस बार चुकी वे मुख्यमंत्री नहीं है लेकिन वे तब भी चाहेंगे की उनका कोई समर्थक ही प्रदेश अध्यक्ष बने जबकि प्रदेश के दूसरे बड़े नेता नेता प्रतिपक्ष गोपाल भार्गव हमेशा से ही संगठन की राजनीति से और पार्टी के अंदर गुटी राजनीति से हमेशा दूर रहे हैं और इस बार भी संगठन चुनाव में कोई रुचि नहीं ले रहे। ■

अध्यक्ष पद के लिए कई नेताओं के नाम चर्चा में

✍ राम प्रताप मिश्र

उत्तराखंड भाजपा को नया प्रदेश अध्यक्ष जल्द ही मिल जाएगा। इसके लिए जिला स्तर से चुनावी प्रक्रिया आरंभ हो चुकी है। पहली कड़ी में लगभग 10 लाख से अधिक सदस्य बनाए जा चुके हैं जबकि 15 लाख से अधिक पुराने सदस्य है। यह संख्या 25 लाख से अधिक हो जाती है जो पार्टी की अपेक्षा के अनुरूप है। पिछले दिनों केन्द्रीय चुनाव अधिकारी एवं पूर्व केन्द्रीय कृषि मंत्री डॉ. राधा मोहन सिंह देहरादून प्रवास पर आए और उन्होंने यह संख्या घोषित की। यह चुनावी प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है। वर्तमान प्रदेश अध्यक्ष एवं सांसद श्री अजय भट्ट 31 दिसंबर 2015 को निर्विरोध प्रदेश अध्यक्ष बने थे, उससे पहले वर्तमान पौड़ी सांसद तीरथ सिंह रावत प्रदेश अध्यक्ष थे। तीरथ सिंह रावत के उत्तराधिकारी के रूप में जो प्रमुख नाम सामने आए थे उनमें कई युवा चेहरे भी थे लेकिन इन सभी चेहरों को दरकिनार कर तत्कालीन सांसद एवं पूर्व मुख्यमंत्री मेजर जनरल भुवनचंद्र खंडूरी के प्रमुख लोगों में शामिल अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के पूर्णकालिक रहे तीरथ सिंह रावत को प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया।

तीरथ सिंह रावत का उत्तराखंड भाजपा अध्यक्ष पद पर तीन वर्षीय कार्यकाल समाप्त होने के बाद से पार्टी की राज्य इकाई को एक ऐसे नेता की तलाश थी जो वर्ष 2017 की शुरूआत में होने वाले राज्य विधानसभा चुनावों में पार्टी की नैया पार लगा सके। उस समय अजय भट्ट का नाम प्रमुख रूप से सामने आया। अजय भट्ट उत्तराखंड की अंतरिम सरकार के स्वास्थ्य मंत्री के रुप में अपनी छाप छोड़ चुके थे। अपनी ईमानदारी तथा नियमों के पालन के लिए माने जाने वाले अजय भट्ट को अध्यक्ष पद का उम्मीदवार बनाया गया और उन्हीं के नाम पर आम सहमति बनी और निर्विरोध अध्यक्ष बन गए। उस समय भाजपा ने भाजपा राष्ट्रीय परिषद के लिये भी पांच नेताओं के नाम पर मुहर लगा दी थी। सांसद अजय टम्टा और सांसद महारानी माला राज्यलक्ष्मी शाह के अलावा पूर्व सांसद बलराजी पासी, मनोहरकांत ध्यानी और वरिष्ठ नेता मोहन लाल बौंठियाल राष्ट्रीय परिषद में उत्तराखंड के प्रतिनिधित्व का अवसर मिला। प्रदेश अध्यक्ष अजय भट्ट के नेतृत्व में 2017 विधानसभा का चुनाव भारी मतों से जीता और पार्टी को 57 सीटें मिली जो अजय भट्ट की ऐतिहासिक उपलब्धि मानी जा रही है। इसी प्रकार 2019 के संसदीय चुनाव में भी प्रदेश अध्यक्ष रहते हुए अजय भट्ट के नेतृत्व में पांचों संसदीय सीटें जीती। इससे पहले भी पांचों संसदीय सीटों पर भाजपा का ही कब्जा था लेकिन स्थानीय निकाय चुनाव तथा अन्य चुनाव में जिस ढंग से भाजपा ने अभूतपूर्व बढ़त प्राप्त की उसका पूरा श्रेय अजय भट्ट के खाते में गया।

एक बार फिर संगठन चुनाव की बेला आ गई है। इस बार सांसद एवं प्रदेश अध्यक्ष अजय भट्ट अध्यक्ष पद के उम्मीदवार होंगे इसमें आशंका बनी हुई है, इसका कारण उनका नैनीताल-ऊधमसिंह नगर का सांसद होना है जिसके कारण उनकी व्यस्तता काफी बढ़ी है। प्रदेश अध्यक्ष एवं सांसद अजय भट्ट के उत्तराधिकारी के रूप में कई नाम सामने आ रहे हैं इनमें अधिकांश युवा चेहरे भी शामिल है। ऐसे ही नामों में जहां पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष एवं बीस सूत्रीय कार्यक्रम क्रियान्वयन समिति के अध्यक्ष नरेश बंसल का नाम शामिल है, वहीं पार्टी उपाध्यक्ष ज्योति प्रसाद गैरोला भी दावेदारों में शामिल हो सकते है। श्री गैरोला भी सरकार में दायित्व निभा रहे हैं। इसी कड़ी में युवा विधायक पुष्कर सिंह धामी का नाम भी शामिल किया गया है। पिछले दिनों उत्तराखंड के चुनाव अधिकारी के लिए नामों की तलाश की जा रही थी उस समय विधायक पुष्कर सिंह धामी का नाम इस लिए छोड़ दिया कि वह अध्यक्ष पद के दावेदार हो सकते हैं। उनके स्थान पर विधायक बलवंत सिंह भौर्याल को चुनाव अधिकारी बनाया गया। इसी कड़ी में कुमाऊं के ब्राह्मण नेता सुरेश जोशी एवं प्रकाष हर्बोला का नाम भी शामिल है। सुरेश जोशी पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता व पूर्व महामंत्री के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

पूर्व सांसद बलराज पासी एक लंबे अर्से से अध्यक्ष पद के सहज दावेदार माने जाते रहे हैं, उन्होंने एक बार पंडित नारायण दत्त तिवारी को हराया था जिसके कारण पूर्व सांसद के रूप में उनके नाम की भी चर्चा है। वायुसेना से सेवामुक्त राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुड़े केदार जोशी का नाम भी अध्यक्ष पद के दावेदारों में शामिल है। वर्तमान में श्री जोशी कुमाऊं मंडल विकास निगम के अध्यक्ष है जबकि पूर्व विधायक युवा नेता कैलाश शर्मा जो वर्तमान में प्रदेश उपाध्यक्ष का नाम भी चर्चा में है। इसी कड़ी में सौम्य नेता कैलाश पंत, विधायक नवीन दुमका के नाम भी चर्चा में है। अध्यक्ष कौन बनेगा यह तो पार्टी संगठन का ही निर्णय होगा लेकिन जो भी अध्यक्ष बनेगा उसके लिए पार्टी को आगे बढ़ाना और पुरानी ऊंचाइयों को प्राप्त करना निश्चित रुप से कठिन काम होगा। इसके दूसरे शब्दों में कहे तो वर्तमान समय मे भाजपा प्रदेश अध्यक्ष का ताज केवल सुविधा नहीं वरन् कांटों का ताज है। तेज तर्रार अध्यक्ष हुआ तो पार्टी में अपनी पैठ बनाकर पार्टी को और ऊंचाइंयां देगा और यदि सामान्य रहा तो पार्टी को निश्चित रुप से अपेक्षित ऊंचाइयां मिलने में मुश्किल होगी। ■

हरीश रावत पर सीबीआई का शिकंजा

नेताओं में छटपटाहट

आरोप-प्रत्यारोप प्रारम्भ

✍ राम प्रताप मिश्र

नौ साल नली में रहने के बाद भी कुत्ते की दुम टेड़ी की टेड़ी रहती है। कांग्रेस का यही हाल है। पार्टी के नेता आकंठ भ्रष्टाचार में डूबने के बाद भी चोरी ऊपर से सीना जोरी की कहावत को चरितार्थ करते हैं, जहां केन्द्रीय स्तर पर कांग्रेस के बड़े नेता या तो जेल पहुंच चुके हैं या जेल जाने को तैयार है, वहीं उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत भी इसी श्रेणी में आ गए हैं। देर से ही सही ऐसे लोगों की कलई खुलती ही है। कम से कम कांग्रेस के साथ यह कहावत पूरी तरह चरितार्थ हो रही है। पिछले कई वर्षों से कांग्रेस के नेताओं पर भ्रष्टाचार के आरोप लगते रहे हैं और उनमें अधिकांश साबित भी हुए हैं। कांग्रेस के तमाम बड़े नेता इन आरोपों की गिरफ्त में है। राष्ट्रीय स्तर पर इसका प्रमाण जहां पी चिदंबरम, डी शिवकुमार हैं वहीं उत्तराखंड के दिग्गज नेता हरीश रावत भी इसी घेरे में आ गए हैं, जिन पर लगातार आरोप-प्रत्यारोप लग रहे हैं। हालांकि कांग्रेसके तमाम बड़े नेता इसे राजनीतिक चश्मे से देख रहे हैं, लेकिन राजनीतिक चश्मे से यदि न देखा जाए तो इन बातों में काफी सत्यता दिखती है। अब केन्द्रीय जांच ब्यूरो ने उत्तराखंड के इस वरिष्ठ नेता को अपनी गिरफ्त में लेने की तैयारी शुरू कर दी है। ऐसी राजनीतिक क्षेत्रों में है।

सीबीआई उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत के खिलाफ 2016 में हुए स्टिंग विडियो प्रकरण पर प्राथमिकी दर्ज करने जा रही है। इस विडियो में रावत सत्ता में बने रहने के लिए अपने खिलाफ बगावत करने वाले विधायकों का समर्थन हासिल करने के लिए कथित रूप से हॉर्स ट्रेडिंग करते हुए दिखे थे। यह मामला वर्षों पूर्व सुर्खियों में रहा और उससे पहले कांग्रेस टूट गई थी। कांग्रेस के नौ विधायक भाजपा में शामिल हो गए थे। इन विधायकों में तत्तकालीन मंत्री एवं वरिष्ठ नेता डॉ. हरक सिंह रावत, पूर्व मुख्यमंत्री विजय बहुगुणा, श्रीमती अमृता रावत, सुबोध उनियाल, उमेश शर्मा काऊ, प्रदीप बत्रा समेत नौ लोग शामिल थे जिन्होंने पार्टी के विरुद्ध बजट सत्र में विरोध किया था और तत्कालीन विधानसभा अध्यक्ष गोविंद सिंह कुंजवाल ने उन्हें दल बदल का दोषी मानते हुए सदस्यता से बेदखल कर दिया था। यह मामला उस समय तो दब गया था लेकिन वर्षों बाद अब सीबीआई ने इस मामले को उठाया है। सीबीआई की ओर से उत्तराखंड उच्च न्यायालय में न्यायमूर्ति आरसी खुल्बे की कोर्ट को बताया कि वह पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत के विरुद्ध विडियो मामले में प्राथमिकी दर्ज करेगी। अदालत द्वारा इस मामले में विवरण मांगे जाने के दौरान एजेंसी ने यह सूचना दी।

वर्ष 2016 में प्रदेश में राष्ट्रपति शासन के दौरान एक विडियो सामने आया था जिसमें रावत सत्ता में बने रहने के लिए बीजेपी के साथ चले गए असंतुष्ट विधायकों को समर्थन दोबारा हासिल करने के लिए कथित तौर पर हॉर्स ट्रेडिंग करते दिखाई दे रहे हैं। मामले में सुनवाई की अगली तारीख 20 सितंबर तय की गई है।

इस संदर्भ में पूर्व हरीश रावत मानते हैं कि वह इस मामले पर हार नहीं मानेंगे। पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत ने अपने ऊपर लगे सभी आरोपों को खारिज कर दिया। उनका कहना हैं कुछ लोग उनकी राजनीति को बर्बाद करना चाहते हैं लेकिन हरीश रावत का कहना है कि वह किसी भी कीमत पर टूटेंगे नहीं बल्कि इस अभियान के विरुद्ध लगातार लड़ाई लड़ते रहेंगे। इससे पहले कर्नाटक कांग्रेस के दिग्गज नेता डी के शिवकुमार को मंगलवार रात मनी लॉन्ड्रिंग केस में ईडी ने गिरफ्तार कर लिया। ईडी के अधिकारी मानते हैं कि डी के शिव कुमार को धनशोधन रोकथाम अधिनियम (पीएमएलए) के तहत गिरफ्तार किया गया। कांग्रेस नेता को हिरासत में लेकर पूछताछ करने की जरूरत है, इसलिए उन्हें गिरफ्तार किया गया है। वहीं पूर्व वित्तमंत्री चिदंबरम आईएनएक्स मीडिया भ्रष्टाचार मामले में पहले से ही सीबीआई की हिरासत में हैं और अब उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत सीबीआई का रूझान इस बात का प्रमाण है कि कहीं न कहीं उन्हें अपने कर्मों का दंड मिलेगा ही।

पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत के प्रकरण पर मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत का कहना है कि हरीश रावत ब्लैकमेलरों को साथ रखेंगे तो कैसे बच पाएंगे। पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत ने कहा था कि 'मेरे घर में डकैती, मुझ पर ही इल्जाम' की बात कहते हुए निशाना साधते हुए कहा कि राजनीतिक और सामाजिक जीवन में रहने वालों को मर्यादाओं में रहना चाहिए। नहीं तो किसी के भी साथ ऐसी स्थिति आ सकती है। ब्लैकमेलरों को जो अपने साथ रखेगा, उसका यही नतीजा होगा। उन्होंने कहा कि हरीश रावत को बोलने से पहले यह सोचना चाहिए कि ऐसी स्थिति आखिर क्यों आई है?

इसी संदर्भ में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं सांसद अजय भट्ट ने भी पूर्व सीएम हरीश रावत पर हमला बोला। अजय भट्ट ने उन आरोपों को निराधार बताया, जिसमें उन्होंने कहा था कि उन्हें फंसाने के पीछे भाजपा सरकारें हैं। भट्ट बोले- गैरकानूनी काम करने वालों तक कानून खुद पहुंच जाता है। हरीश रावत भी उससे नहीं बच पाए। भट्ट ने साफ कहा कि उनके खिलाफ तत्कालीन राज्यपाल ने सीबीआई जांच की सिफारिश की थी। जांच हुई और उनके किए गलत काम सामने आ गए। अब इसमें भाजपा का क्या दोष है।

इसी संदर्भ में कांग्रेस प्रदेश उपाध्यक्ष सूर्यकांत धस्माना का कहना है कि भाजपा सत्ता का दुरूपयोग कर रही है। कांग्रेस ने साफ किया कि प्रदेश अध्यक्ष प्रीतम सिंह के नेतृत्व में पूरी पार्टी रावत के साथ खड़ी है। कांग्रेस ने केंद्र सरकार पर मनमानी का आरोप लगाते हुए सड़कों पर उतरने की चेतावनी दी। पार्टी के उपाध्यक्ष सूर्यकांत धस्माना ने कहा कि कांग्रेस की आवाज दबाने को केंद्र सरकार खुलेआम केंद्रीय एजेंसियों का दुरुपयोग कर रही है। कांग्रेसियों को कहीं सीबीआई, तो कहीं ईडी, इनकम टैक्स के जरिए डराया-धमकाया जा रहा है। हरीश रावत पर सीबीआई की घेरेबंदी, उल्टा चोर कोतवाल को डांटे वाली कहावत को चरितार्थ कर रही है। सबको पता है कि मार्च 2016 में बीजेपी की केंद्र सरकार के इशारे पर कांग्रेस के 10 विधायकों को खरीदा गया। भाजपा ने राज्य की चुनी कांग्रेस सरकार को गिराया। कांग्रेस को इस मामले में हाईकोर्ट व सुप्रीमकोर्ट से न्याय मिला था। कांग्रेस की सरकार न सिर्फ बहाल हुई, बल्कि सदन में बहुमत भी हासिल किया। ऐसे में हरीश रावत के स्तर से विधायकों की खरीद-फरोख्त कहां हुई। ■

'मन की बात'

प्रधानमंत्री के सम्बोधन का मूल पाठ

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार। हमारा देश, इन दिनों एक तरफ वर्षा का आनंद ले रहा है, तो दूसरी तरफ, हिंदुस्तान के हर कोने में किसी ना किसी प्रकार से, उत्सव और मेले, दीवाली तक, सब-कुछ यही चलता है और शायद हमारे पूर्वजों ने, ऋतु चक्र, अर्थ चक्र और समाज जीवन की व्यवस्था को बखूबी इस प्रकार से ढाला है कि किसी भी परिस्थिति में, समाज में, कभी भी लल्नेस ना आये। पिछले दिनों हम लोगों ने कई उत्सव मनाये। कल, हिन्दुस्तान भर में श्री कृष्ण जन्म-महोत्सव मनाया गया। कोई कल्पना कर सकता है कि कैसा व्यक्तित्व होगा, कि, आज हजारों साल के बाद भी, हर उत्सव, नयापन लेकर के आता है, नयी प्रेरणा लेकर के आता है, नयी ऊर्जा लेकर के आता है और हजारों साल पुराना जीवन ऐसा, कि जो आज भी समस्याओं के समाधान के लिए, उदाहरण दे सकता हो, प्रेरणा दे सकता हो, हर कोई व्यक्ति, श्री कृष्ण के जीवन में से, वर्तमान की समस्याओं का समाधान ढूंढ सकता है। इतना सामर्थ्य होने बावजूद भी कभी वो रास में रम जाते थे, तो कभी, गायों के बीच तो कभी ग्वालों के बीच, कभी खेल-कूद करना, तो कभी बांसुरी बजाना, ना जाने विविधताओं से भरा ये व्यक्तित्व, अप्रतिम सामर्थ्य का धनी, लेकिन, समाज-शक्ति को समर्पित, लोक-शक्ति को समर्पित, लोक-संग्राहक के रूप में, नये कीर्तिमान को स्थापित करने वाला व्यक्तित्व। मित्रता कैसी हो, तो, सुदामा वाली घटना कौन भूल सकता है और युद्ध भूमि में, इतनी सारी महानताओं के बावजूद भी, सारथी का काम स्वीकार कर लेना। कभी चट्टान उठाने का, कभी, भोजन के पत्तल उठाने का काम, यानी हर चीज में एक नयापन सा महसूस होता है और इसलिए, आज जब, मैं, आपसे बात कर रहा हूँ, तो, मैं, दो मोहन की तरफ, मेरा ध्यान जाता है। एक सुदर्शन चक्रधारी मोहन, तो दूसरे चरखाधारी मोहन। सुदर्शन चक्रधारी मोहन यमुना के तट को छोड़कर के, गुजरात में समुन्द्र के तट पर जा करके, द्वारिका की नगरी में स्थिर हुए और समुन्द्र के तट पर पैदा हुए मोहन, यमुना के तट पर आकर के, दिल्ली में, जीवन के, आखिरी सांस लेते हैं। सुदर्शन चक्रधारी मोहन ने उस समय की स्थितियों में, हजारों साल पहले भी, युद्ध को टालने के लिए, संघर्ष को टालने के लिए, अपनी बुद्धि का, अपने कर्तव्य का, अपने सामर्थ्य का, अपने चिंतन का भरसक उपयोग किया था और चरखाधारी मोहन ने भी तो एक ऐसा रास्ता चुना, स्वतंत्रता के लिए, मानवीय मूल्यों के जतन के लिए, व्यक्तित्व के मूल तत्वों को सामर्थ्य दे - इसके लिए आजादी के जंग को एक ऐसा रूप दिया, ऐसा मोड़ दिया जो पूरे विश्व के लिए अजूबा है, आज भी अजूबा है। निस्वार्थ सेवा का महत्व हो, ज्ञान का महत्व हो या फिर जीवन में तमाम उतार-चढ़ाव के बीच मुस्कुराते हुए आगे बढ़ने का महत्व हो, ये हम, भगवान कृष्ण के सन्देश से सीख सकते हैं और इसीलिये तो श्रीकृष्ण, जगतगुरु के रूप में भी जाने गए हैं ङ्क ÷कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम।

आज जब हम, उत्सवों की चर्चा कर रहे हैं, तब, भारत एक और बड़े उत्सव की तैयारी में जुटा है और भारत ही नहीं, पूरी दुनिया में भी उसकी चर्चा है। मेरे प्यारे देशवासियो, मैं बात कर रहा हूँ महात्मा गाँधी की 150वीं जयन्ती। 2 अक्टूबर, 1869, पोरबन्दर, समुद्र के तट पर, जिसे आज हम कीर्ति मंदिर कहते हैं, उस छोटे से घर में एक व्यक्ति नहीं,

एक युग का जन्म हुआ था, जिसने, मानव इतिहास को नया मोड़ दिया, नये कीर्तिमान स्थापित करवा दिए। महात्मा गाँधी से एक बात हमेशा जुड़ी रही, एक प्रकार से उनके जीवन का वो हिस्सा बनी रही और वह थी - सेवा, सेवा-भाव, सेवा के प्रति कर्तव्य-परायणता । उनका पूरा जीवन देखें, तो, साउथ अफ्रीका में उन समुदायों के लोगों की सेवा की जो नस्लीय भेद-भाव का सामना कर रहे थे। उस युग में, वो बात छोटी नहीं थी जी। उन्होंने उन किसानों की सेवा की जिनके साथ चम्पारण में भेद-भाव किया जा रहा था, उन्होंने उन मिल मजदूरों की सेवा की जिन्हें उचित मजदूरी नहीं दी जा रही थी, उन्होंने, ग़रीब, बेसहारा, कमजोर और भूखे लोगों की सेवा को, अपने जीवन का परम कर्तव्य माना। रक्त-पित्त के सम्बन्ध में कितनी भ्रमणाएँ थी, उन भ्रमणाओं को नष्ट करने के लिये स्वयं रक्त-पित्त से ग्रस्त लोगों की सेवा खुद करते थे और स्वयं के, जीवन में, सेवा के माध्यम से, उदाहरण प्रस्तुत करते थे। सेवा, उन्होंने शब्दों में नहीं - जी करके सिखायी थी। सत्य के साथ, गांधी का जितना अटूट नाता रहा है, सेवा के साथ भी गाँधी का उतना ही अनन्य अटूट नाता रहा है। जिस किसी को, जब भी, जहाँ भी जरुरत पड़ी, महात्मा गाँधी सेवा के लिए हमेशा उपस्थित रहे। उन्होंने ना केवल सेवा पर बल दिया बल्कि उसके साथ जुड़े आत्म-सुख पर भी जोर दिया। सेवा शब्द की सार्थकता इसी अर्थ में है कि उसे आनंद के साथ किया जाए - सेवा परमो धर्मः। लेकिन, साथ-साथ उत्कृष्ट आनंद, 'स्वान्तः सुखायः' इस भाव की अनुभूति भी' सेवा में, अन्तर्निहित है। ये, बापू के जीवन से हम भली-भांति समझ सकते हैं। महात्मा गाँधी, अनगिनत भारतीयों की तो आवाज बने ही, लेकिन, मानव मूल्य और मानव गरिमा के लिए, एक प्रकार से, वे, विश्व की आवाज बन गये थे। महात्मा गाँधी के लिए, व्यक्ति और समाज, मानव और मानवता, यही सब कुछ था। चाहे, अफ्रीका में फानी एण्ड फर्म हो, या टोलिस्टो फर्म साबरमती आश्रम हो या वर्धा सब स्थानों पर, अपने एक अनोखे अंदाज में, समाज संवर्धन कम्यूनिटी मोबीलिशन पर उनका हमेशा बल रहा। ये मेरा बहुत ही सौभाग्य रहा है, कि, मुझे, पूज्य महात्मा गाँधी से जुड़ी कई महत्वपूर्ण जगहों पर जाकर के नमन करने का अवसर मिला है। मैं कह सकता हूँ कि गाँधी, सेवा-भाव से संगठन-भाव को भी बल देते रहते थे। समाज-सेवा और समाज-संवर्धन कम्यूनिटी सर्विस और कम्यूनिटी मोबीलिशन यह वो भावना जिसे हमें अपने व्यवहारिक जीवन में लाना है। सही अर्थों में, यही महात्मा गाँधी को सच्ची श्रद्धांजलि है, सच्ची कार्यांजलि है। इस प्रकार के अवसर तो बहुत आते हैं, हम जुड़ते भी हैं, लेकिन क्या गाँधी 150 ? ऐसे ही आकर के चला जाये, हमें मंजूर है क्या ? जी नहीं देशवासियो। हम सब, अपने आप से पूछें, चिंतन करें, मंथन करें, सामूहिक रूप से बातचीत करें। हम समाज के और लोगों के साथ मिलकर के, सभी वर्गों के साथ मिलकर के, सभी आयु के लोगों के साथ मिलकर के गाँव हो, शहर हो, पुरुष हो, स्त्री हो, सब के साथ मिलकर के, समाज के लिये, क्या करें ङ्क एक व्यक्ति के नाते, मैं उन प्रयासों में क्या जोडूं। मेरी तरफ से वैल्यू एडिशन क्या हो? और सामूहिकता की अपनी एक ताकत होती है। इस पूरे, गाँधी 150, के कार्यक्रमों में, सामूहिकता भी हो, और सेवा भी हो। क्यों ना हम मिलकर के पूरा मोहल्ला निकल पड़े। अगर हमारी फुटबाल की टीम है, तो फुटबाल की टीम, फुटबाल तो खेलेंगे ही लेकिन एक-आध गाँधी के आदर्शों के अनुरूप सेवा का काम भी करेंगे। हमारी लेडीज क्लब है। आधुनिक युग के लेडीज क्लब के जो काम होते हैं वो करते रहेंगे, लेकिन, लेडीज क्लब की सभी सखियाँ मिलकर के कोई ना कोई एक सेवा कार्य साथ मिलकर के करेंगे। बहुत कुछ कर सकते हैं। किताबें इकट्ठी करें पुरानी, ग़रीबों को बांटें, ज्ञान का प्रसार करें, और मैं मानता हूँ शायद 130 करोड़ देशवासियों के पास, 130 करोड़ कल्पनायें हैं, 130 करोड़ उपक्रम हो सकते हैं। कोई सीमा नहीं है जो मन में आये - बस सदइच्छा हो, सदहेतु हो, सदभाव हो और पूर्ण समर्पण भाव की सेवा हो और वो भी स्वांतः सुखायः - एक अनन्य आनंद की अनुभूति के लिये हो।

मेरे प्यारे देशवासियो, कुछ महीने पहले, मैं, गुजरात में दांडी गया था। आजादी के आंदोलन में 'नमक सत्याग्रह', दांडी, एक बहुत ही बड़ा महत्वपूर्ण टर्निंग प्वाइंट है। दांडी में, मैंने, महात्मा गाँधी को समर्पित अति-आधुनिक एक म्यूजियम का उद्घाटन किया था। मेरा, आपसे जरूर आग्रह है, कि, आप भी, आने वाले समय में महात्मा गाँधी से जुड़ी कोई न कोई एक जगह की यात्रा जरूर करें। यह, कोई भी स्थान हो सकता है । जैसे पोरबंदर हो, साबरमती आश्रम हो, चंपारण हो, वर्धा का आश्रम हो और दिल्ली में महात्मा गाँधी से जुड़े हुए स्थान हो, आप जब, ऐसी जगहों पर जाएँ, तो, अपनी तस्वीरों को सोशल मीडिया पर साझा जरुर करें, ताकि, अन्य लोग भी उससे प्रेरित हों और उसके साथ अपनी भावनाओं को व्यक्त करने वाले दो-चार वाक्य भी लिखिए। आपके मन के भीतर से उठे हुए भाव, किसी भी बड़ी साहित्य रचना से, ज्यादा ताक़तवर होंगे और हो सकता है, आज के समय में, आपकी नज़र में, आपकी कलम से लिखे हुए गाँधी का रूप, शायद ये अधिक रिवलेंट भी लगे। आने वाले समय में बहुत सारे कार्यक्रमों, प्रतियोगिताओं, प्रदर्शनियों की योजना भी बनाई गई है। लेकिन इस संदर्भ में एक बात बहुत रोचक है जो मैं आपसे साझा करना चाहता हूँ। वेनिस वीनेल नाम का एक बहुत प्रसिद्ध आर्ट शॉप है। जहाँ दुनिया भर के कलाकार जुटते है। इस बार इण्डिया पोवलेशन में गाँधी जी की यादों से जुड़ी बहुत ही अच्छी प्रदर्शनी लगाई गई। इसमें हरिपुरा पैनल विशेष रूप से दिलचस्प थे। आपको याद होगा कि गुजरात के हरीपुरा में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ था जहाँ पर सुभाष चन्द्र बोस के प्रेसिडेंट इलेक्ट होने की घटना इतिहास में दर्ज है। इन आर्ट पैनल्स का एक बहुत ही खूबसूरत अतीत है। कांग्रेस के हरिपुरा सीजन से पहले 1937-38 में महात्मा गाँधी ने शांति निकेतन कला भवन के तत्कालीन प्रिन्सिपल नन्द लाल बोस को आमन्त्रित किया था। गाँधी जी चाहते थे कि वे भारत में रहने वाले लोगों की जीवनशैली को कला के माध्यम से दिखाए और

उनकी इस आर्ट वर्क का प्रदर्शन अधिवेशन के दौरान हो। ये वही नन्द लाल बोस है जिनका आर्ट वर्क हमारे संविधान की शोभा बढ़ाता है। संविधान को एक नई पहचान देता है। और उनकी इस कला साधना ने संविधान के साथ-साथ नन्द लाल बोस को भी अमर बना दिया है। नन्द लाल बोस ने हरिपुरा के आस-पास के गाँव का दौरा किया और अंत में ग्रामीण भारत के जीवन को दर्शाते हुए कुछ आर्ट कैनवस बनाये। इस अनमोल कलाकारी की वीनस में जबरदस्त चर्चा हुई। एक बार फिर गाँधी जी की 150वीं जन्म जयंती पर शुभकामनाओं के साथ, हर हिन्दुस्तानी से कोई न कोई संकल्प की, मैं अपेक्षा करता हूँ। देश के लिए, समाज के लिए, किसी और के लिए कुछ न कुछ करना चाहिए। यही बापू को अच्छी, सच्ची, प्रमाणिक कार्यांजलि होगी।

माँ भारती के सपूतों, आपको याद होगा कि पिछले कुछ सालों में हम 2 अक्टूबर से पहले लगभग 2 सप्ताह तक देशभर में 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान चलाते है। इस बार ये 11 सितम्बर से शुरू होगा। इस दौरान हम अपने-अपने घरों से बाहर निकल कर श्रमदान के ज़रिये महात्मा गाँधी को कार्यांजलि देंगे। घर हो या गलियाँ, चौक-चौराहे हो या नालियाँ, स्कूल, कॉलेज से लेकर सभी सार्वजनिक स्थलों पर स्वच्छता का महा अभियान चलाना है। इस बार प्लास्टिक पर विशेष जोर देना है 15 अगस्त को लाल किले से मैंने ये कहा कि जिस उत्साह व ऊर्जा के साथ सवा-सौ करोड़ देशवासियों ने स्वच्छता के लिए अभियान चलाया। खुले में शौच से मुक्ति के लिए कार्य किया। उसी प्रकार हमें साथ मिलकर सिंगल यूज प्लास्टिक के इस्तमाल को खत्म करना है। इस मुहीम को लेकर समाज के सभी वर्गों में उत्साह है। मेरे कई व्यापारी भाइयों-बहनों ने दुकान में एक तख्ती लगा दी है, एक प्लेकार्ड लगा दिया है। जिस पर यह लिखा है कि ग्राहक अपना थैला साथ ले करके ही आये। इससे पैसा भी बचेगा और पर्यावरण की रक्षा में वे अपना योगदान भी दे पायेंगे। इस बार 2 अक्टूबर को जब बापू की 150वीं जयंती मनायेंगे तो इस अवसर पर हम उन्हें न केवल खुले में शौच से मुक्त भारत समर्पित करेंगे बल्कि उस दिन पूरे देश में प्लास्टिक के खिलाफ एक नए जन-आंदोलन की नींव रखेंगे। मैं समाज के सभी वर्गों से, हर गाँव, कस्बे में और शहर के निवासियों से अपील करता हूँ, करबद्ध प्रार्थना करता हूँ कि इस वर्ष गाँधी जयंती, एक प्रकार से हमारी इस भारत माता को प्लास्टिक कचरे से मुक्ति के रूप में हम मनाये। 2 अक्टूबर विशेष दिवस के रूप में मनायें। महात्मा गाँधी जयंती का दिन एक विशेष श्रमदान का उत्सव बन जाए। देश की सभी नगरपालिका, नगरनिगम, जिला-प्रशासन, ग्राम-पंचायत, सरकारी-गैरसरकारी सभी व्यवस्थाएँ, सभी संगठन, एक-एक नागरिक हर किसी से मेरा अनुरोध है कि प्लास्टिक कचरे के कलेक्शन और स्टोरेज के लिए उचित व्यवस्था हो। मैं कार्पोरेट सेक्टर से भी अपील करता हूँ कि जब ये सारा प्लास्टिक कचरा इकठ्ठा हो जाए तो इसके उचित निस्तारण हेतु आगे आयें, डिस्पोजल की व्यवस्था हो। इसे खत्म किया जा सकता है। इसे ईंधन बनाया जा सकता है। इस प्रकार इस दिवाली तक हम इस प्लास्टिक कचरे के सुरक्षित निपटारे का भी कार्य पूरा कर सकते है। बस संकल्प चाहिए। प्रेरणा के लिए इधर-उधर देखने की जरुरत नहीं है गाँधी से बड़ी प्रेरणा क्या हो सकती है।

मेरे प्यारे देशवासियों, हमारे संस्कृत सुभाषित एक प्रकार से ज्ञान के रत्न होते हैं। हमें जीवन में जो चाहिए वो उसमे से मिल सकता है। इन दिनों तो मेरा संपर्क बहुत कम हो गया है लेकिन पहले मेरा संपर्क बहुत था। आज मैं एक संस्कृत सुभाषित से एक बहुत महत्वपूर्ण बात को स्पर्श करना चाहता हूँ और ये सदियों पहले लिखी गई बातें हैं, लेकिन

आज भी, इसका कितना महत्व है। एक उत्तम सुभाषित है और उस सुभाषित ने कहा है ङ्क

'पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम्'
मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा प्रदीयते'

यानि कि पृथ्वी में जल, अन्न और सुभाषित - यह तीन रत्न है। मूर्ख लोग पत्थर को रत्न कहते हैं। हमारी संस्कृति में अन्न की बहुत अधिक महिमा रही है। यहाँ तक कि हमने अन्न के ज्ञान को भी विज्ञान में बदल दिया है। संतुलित और पोषक भोजन हम सभी के लिए जरुरी है। विशेष रूप से महिलाओं और नवजात शिशुओं के लिए, क्योंकि, ये ही हमारे समाज के भविष्य की नींव है। 'पोषण अभियान' के अंतर्गत पूरे देशभर में आधुनिक वैज्ञानिक तरीकों से पोषण को जन-आन्दोलन बनाया जा रहा है। लोग नए और दिलचस्प तरीकों से कुपोषण से लड़ाई लड़ रहे हैं। कभी मेरे ध्यान में एक बात लाई गई थी। नाशिक के अन्दर 'मुट्ठी भर धान्य' एक बड़ा आन्दोलन हो गया है। इसमें फसल कटाई के दिनों में आंगनवाड़ी सेविकाएँ लोगों से एक मुट्ठी अनाज इकठ्ठा करती हैं। इस अनाज का उपयोग, बच्चों और महिलाओं के लिए गर्म भोजन बनाने में किया जाता है। इसमें दान करने वाला व्यक्ति एक प्रकार से जागरुक नागरिक समाज सेवक बन जाता है। इसके बाद वो इस ध्येय के लिए खुद भी समर्पित हो जाता है। उस आन्दोलन का वो एक सिपाही बन जाता है। हम सभी ने परिवारों में हिंदुस्तान के हर कोने में अन्न प्राशन संस्कार के बारे में सुना है। ये संस्कार तब किया जाता है जब बच्चे को पहली बार ठोस आहार खिलाना शुरू करते हैं। लिक्वेड फूड नही सॉलिड फूड । गुजरात ने 2010 में सोचा कि क्यूँ न 'अन्न प्राशन संस्कार' के अवसर पर बच्चों को कम्प्लेमेंट्री फूड दिया जाये ताकि लोगों को, इसके बारे में जागरुक किया जा सके। यह एक बहुत ही शानदार पहल है जिसे, हर कहीं, अपनाया जा सकता है। कई राज्यों में लोग तिथि भोजन अभियान चलाते हैं। अगर परिवार में जन्मदिन हो, कोई शुभदिन हो, कोई स्मृति दिवस हो, तो परिवार के लोग, पौष्टिक खाना, स्वादिष्ट खाना बनाकर के आंगनवाड़ी में जाते हैं, स्कूलों में जाते हैं और परिवार के लोग खुद बच्चों को परोसते हैं, खिलाते हैं। अपने आनंद को भी बाँटते हैं और आनंद में इज़ाफा करते हैं। सेवाभाव और आनंदभाव का अद्भुत मिलन नज़र आता है। साथियों, ऐसी कई सारी छोटी-छोटी चीजें हैं जिससे हमारा देश कुपोषण के खिलाफ़ एक प्रभावी लड़ाई लड़ सकते हैं। आज, जागरूकता के आभाव में, कुपोषण से ग़रीब भी, और संपन्न भी, दोनों ही तरह के परिवार प्रभावित हैं। पूरे देश में सितम्बर महीना 'पोषण अभियान' के रूप में मनाया जाएगा। आप जरुर इससे जुड़िये, जानकारी लीजिये, कुछ नया जोड़ियें। आप भी योगदान दीजिये। अगर आप एकाध व्यक्ति को भी कुपोषण से बाहर लाते हैं मतलब हम देश को कुपोषण से बाहर लाते हैं।

'हेलो सर, मेरा नाम सृष्टि विद्या है। सर मैंने 12 अगस्त को आपका एपीसोड देखा था बीयर गर्ली के साथ, जिसमें आप आये थे। तो सर मुझे वो आपका एपीसोड देखकर बहुत अच्छा लगा। तो ये सुनकर अच्छा लगा कि आपको हमारे प्रकृति जीवन इन्वायरमेंट की कितनी ज्यादा फ़िक्र है, कितनी ज्यादा केयर है और सर मुझे बहुत अच्छा लगा आपको इस नये रूप में, एक एडवान्चर रूप में देख के। तो सर, मैं जानना चाहूंगी कि आपको इसके दौरान अनुभव कैसा रहा और सर आखिरी बात में एक बात और जोड़ना चाहूंगी कि आपका फिटनेस लेवल देख कर हम जैसे यूथ बहुत ज्यादा इम्प्रेश हुए हैं।

सृष्टि जी आपके फ़ोन कॉल के लिए धन्यवाद्। आपकी ही तरह हरियाणा में, सोहना से, के.के.पाण्डेय जी और सूरत की ऐश्वर्या शर्मा जी के साथ, कई लोगों ने डिस्कवरी चैनल पर दिखाये गये 'मेन्स आफ विल्ड' के बारे में जानना चाहा है। इस बार जब 'मन की बात' के लिए मैं सोच रहा था तो मुझे पक्का भरोसा था कि इस विषय में बहुत सारे सवाल आयेंगे और हुआ भी ऐसा ही और पिछले कुछ हफ़्तों में मैं जहाँ भी गया लोगों से मिला हूँ वहाँ 'मेन्स आफ विल्ड' का भी ज़िक्र आ ही जाता है। इस एक एपीसोड से मैं न सिर्फ हिंदुस्तान दुनिया भर के युवाओं से जुड़ गया हूँ। मैंने भी कभी सोचा नही था कि युवा दिलों में इस प्रकार से मेरी जगह बन जायेगी। मैंने भी कभी सोचा नही था कि हमारे देश के और दुनिया के युवा कितनी विविधता भरी चीजों की तरफ ध्यान देते हैं। मैंने भी कभी सोचा नही था कि कभी दुनिया भर के युवा के दिल को छूने का मेरी ज़िन्दगी में अवसर आयेगा। और होता क्या है ? अभी पिछले सप्ताह मैं भूटान गया था। मैंने देखा है कि प्रधानमंत्री के रूप में मुझे जब से जहाँ भी जाने का अवसर मिला और अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कारण से स्थिति ये बन गई है कि दुनिया में जिस किसी के पास जाता हूँ बैठता हूँ तो कोई - न - कोई पाँच-सात मिनट तो योग के संबंध में मेरे से सवाल-जवाब करते ही करते हैं। शायद ही दुनिया का कोई बड़ा ऐसा नेता होगा जिसने मेरे से योग के संबंध में चर्चा न की हो और ये सारी दुनिया में मेरा अनुभव आया है। लेकिन इन दिनों एक नया अनुभव आ रहा है। जो भी मिलता है, जहाँ भी बात करने का मौका मिलता है। वे विल्ड लाइफ के विषय में चर्चा करता है, इन्वायरमेंट के सम्बन्ध में चर्चा करता है। ञ्जद्बद्दद्गह्, स्ह्लश्ठ्ठ, जीव-सृष्टि और मैं हैरान हूँ कि लोगों की कितनी रूचि होती है। इस कार्यक्रम को 165 देशों में उनकी भाषा में प्रसारित करने की योजना बनाई है। आज जब पर्यावरण, एक वैश्विक मंथन का दौर चल रहा है। मुझे आशा है कि ऐसे में यह कार्यक्रम भारत का सन्देश, भारत की परंपरा, भारत के संस्कार यात्रा में प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता, इन सारी बातों से विश्व को परिचित कराने में ये बहुत मदद करेगा ऐसा मेरा पक्का विश्वास बन गया है और हमारे भारत में निर्णय की दिशा में उठाये गए कदमों को अब लोग जानना चाहते हैं। लेकिन एक और बात है कुछ लोग संकोच के साथ भी मुझे एक बात जरुर पूछते हैं कि मोदी जी बताइये आप हिन्दी बोल रहे थे और हिंदी जानते नहीं हैं तो इतना तेजी से आपके बीच सवांद कैसे होता था ? ये क्या बाद में

दृस्रद्बह्ल किया हुआ है ? ये इतना बार-बार सूटिंग हुआ है ? क्या हुआ है ? बड़ी जिज्ञासा के साथ पूछते हैं। देखिये, इसमें कोई रहस्य नहीं है। कई लोगों के मन में ये सवाल है, तो मैं इस रहस्य को खोल ही देता हूँ। वैसे वो रहस्य है ही नहीं। तो यह है साथ बातचीत में भरपूर इस्तेमाल किया गया। जब मैं कुछ भी बोलता था तो तुरंत ही अंग्रेजी में अनुवाद होता था। सिमूल्टनियस इंटरप्रेशन होता था और कान में एक कार्डलेस छोटा सा इंस्ट्रूमेंट लगा हुआ था। तो मैं बोलता था हिंदी लेकिन उसको सुनाई देता था अंग्रेजी और उसके कारण संवाद बहुत आसान हो जाता था और टेक्नोलॉजी का यही तो कमाल है। इसके बाद बड़ी संख्या में लोग मुझे जिम कॉर्बेट, नेशनल पार्क के विषय में चर्चा करते नजर आए हैं। आप लोग भी नेचर और विल्ड लाइफ प्रकृति और जन्य-जीवों से जुड़े स्थलों पर जरुर जाएं। मैंने पहले भी कहा है, मैं जरुर कहता हूँ आपको। अपने जीवन में नार्थ ईस्ट जरुर जाइये। क्या प्रकृति है वहाँ। आप देखते ही रह जायेंगें। आपके भीतर का विस्तार हो जाएगा। 15 अगस्त को लाल किले से मैंने आप सभी से आग्रह किया था कि अगले 3 वर्ष में, कम-से-कम 15 स्थान और भारत के अन्दर 15 स्थान और पूरी तरह 100प्रतिशत पर्यटक के लिए ही ऐसे 15 स्थान पर जाएं, देखें, अध्ययन करें, परिवार को लेकर जाएं, कुछ समय वहाँ बिताएं। विविधिताओं से भरा हुआ देश आपको भी ये विविधिताएं एक शिक्षक के रूप में, आपको भी, भीतर से विविधिताओं से भर देंगे। आपका अपने जीवन का विस्तार होगा। आपके चिंतन का विस्तार होगा। और मुझपे भरोसा कीजिए हिंदुस्तान के भीतर ही ऐसे स्थान हैं जहाँ से आप नई स्फूर्ति, नया उत्साह, नया उमंग, नई प्रेरणा ले करके आएंगें और हो सकता है कुछ स्थानों पर तो बार-बार जाने का मन आपको भी होगा, आपके परिवार को भी होगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, भारत में पर्यावरण की देखभाल की चिंता स्वाभाविक नजर आ रही है। पिछले महीने मुझे देश में टाईगर केन्सस जारी करने का सौभाग्य मिला था। क्या आप जानते हैं कि भारत में कितने बाघ हैं ? भारत में बाघों की आबादी 2967 है। कुछ साल पहले इससे आधे भी बड़ी मुश्किल से थे हम। बाघों को लेकर 2010 में रूस के हुआ था। इसमें दुनिया में बाघों की घटती संख्या को लेकर चिंता जाहिर करते हुए एक संकल्प लिया गया था। यह संकल्प था। 2022 तक पूरी दुनिया में बाघों की संख्या को दोगुना करना। लेकिन यह न्यू है हम लक्ष्यों को जल्दी से जल्द पूरा करते हैं। हमनें 2019 में ही अपने यहाँ टाईगर की संख्या दोगुनी कर दी। भारत में सिर्फ बाघों की संख्या ही नहीं बल्कि प्रोडक्टेड एरियास और कम्यूनिटी रिजर्व की संख्या भी बढ़ी हैं। जब मैं बाघों का डाटा रिलीज कर रहा था तो मुझे गुजरात के गीर के शेर की भी याद आई। जब मैंने वहाँ मुख्यमंत्री का दायित्व संभाला था। तब गीर की जंगलों में शेरों का आदत सिकुड़ रहा था। उनकी संख्या कम होती जा रही थी। हमनें गीर में एक के बाद एक कई कदम उठाए। 2007 में वहाँ महिला गार्ड को तैनात करने का फैसला लिया। पर्यटन को बढ़ाने के लिए इन्फ्राट्रक्चर में सुधार किए। जब भी हम प्रकृति और वन्य-जीवों की बात करते हैं तो केवल कनर्वशेसन की ही बात करते हैं। लेकिन, अब हमें से आगे बढ़ कर सोचना ही होगा। हमारे शास्त्रों में इस विषय में भी बहुत अच्छा मार्गदर्शन मिला है। सदियों पहले हमारे शास्त्रों में हमनें कहा है

निर्वनो बध्यते व्याघ्रो, निर्व्याघ्रं छिद्यते वनम।
तस्माद् व्याघ्रो वनं रक्षेत, वनं व्याघ्रं न पालयेत्

अर्थात, यदि वन न हों तो बाघ मनुष्य की आबादी में आने को मजबूर हो जाते हैं और मारे जाते हैं और यदि जंगल में बाघ न हों तो मनुष्य जंगल काटकर उसे नष्ट कर देता है इसलिए वास्तव में बाघ वन की रक्षा करता है, न कि, वन बाघ की - कितने उत्तम तरीके से विषय को हमारे पूर्वजों ने समझाया है। इसलिए हमें अपने वनों, वनस्पतियों और वन्य जीवों का न केवल संरक्षण करने की आवश्यकता है बल्कि ऐसा वातावरण भी बनाना होगा जिससे वे सही तरीके से फल-फूल सकें।

मेरे प्यारे देशवासियो, 11 सितम्बर, 1893 स्वामी विवेकानंद जी का ऐतिहासिक भाषण कौन भूल सकता है। पूरे विश्व की मानव जाति को झकझोर करने वाला भारत का ये युवा सन्यासी दुनिया के अन्दर भारत की एक तेजस्वी पहचान छोड़ करके आ गया। जिस गुलाम भारत की तरफ दुनिया बड़ी विकृत भाव से देख रही थी। उस दुनिया को 11 सितम्बर, 1893 स्वामी विवेकानंद जैसे महापुरुष के शब्दों ने दुनिया को भारत की तरफ देखने का नज़रिया बदलने के लिए मजबूर कर दिया। आइये, स्वामी विवेकानंद जी ने जिस भारत के रूप को देखा था। स्वामी विवेकानंद जी ने भारत के जिस सामर्थ्य को जाना था। हम उसे जीने की कोशिश करें। हमारे भीतर है, सबकुछ है। आत्मविश्वास के साथ चल पड़ें।

मेरे प्यारे देशवासियो, आप सभी को याद होगा कि 29 अगस्त को 'राष्ट्र खेल दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर हम देश भर में 'फिट इण्डिया मूवमेंट' लान्च करने वाले हैं। खुद को फिट रखना है। देश को फिट बनाना है। हर एक के लिए बच्चे, बुजुर्ग, युवा, महिला सब के लिए ये बड़ा अभियान होगा और ये आपका अपना होगा। लेकिन उसकी बारीकियां आज मैं बताने नहीं जा रहा हूँ। 29 अगस्त का इंतजार कीजिये। मैं खुद उस दिन विस्तार से विषय में बताने वाला हूँ और आपको जोड़े बिना रहने वाला नहीं हूँ। क्योंकि आपको मैं फिट देखना चाहता हूँ। आपको जागरूक बनाना चाहता हूँ और फिट इण्डिया के लिए देश के लिए हम मिल करके कुछ लक्ष्य भी निर्धारित करें।

मेरे प्यारे देशवासियो, मुझे आपका इंतजार रहेगा 29 अगस्त को फिट इण्डिया में। सितम्बर महीने में 'पोषण अभियान' में। और विशेषकर 11 सितम्बर से 02 अक्टूबर 'स्वच्छता अभियान' में। और 02 अक्टूबर सिंगल यूज प्लास्टिक से मुक्ति पाने के लिए हम सब, घर, घर के बाहर सब जगह से पूरी ताकत से लगेंगे और मुझे पता है ये सारे अभियान में तो धूम मचा देंगे। आइये, एक नए उमंग, नए संकल्प, नई शक्ति के साथ चल पड़ें।

मेरे प्यारे देशवासियो, आज 'मन की बात' में इतना ही। फिर मिलेंगे। मैं आपकी बातों का, आपके सुझावों का इंतजार करूँगा। आइये, हम सब मिल करके आजादी के दीवानों के सपनों का भारत बनाने के लिए गांधी के सपनों को साकार करने के लिए चल पड़ें 'स्वान्तः सुखायः'। भीतर के आनंद को सेवा भाव से प्रकट करते हुए चल पड़ें। ■

भोपाल में वृक्षारोपण की संवेदनशील

✍ कल्पना श्रीवास्तव

जीवन के लिए प्रकृति का सानिध्य जितना जरूरी है उतना ही प्रकृति के संरक्षण के लिए संवेदनशीलता का होना भी जरूरी है लेकिन जिस निर्ममता से प्रकृति के साथ मानव रवैया अपनाए हुए हैं। उसे अब जीवन के लिए जरूरी पानी और हवा भी शुद्ध रूप में नहीं मिल रहे हैं। खासतौर पर महानगरों की स्थिति दिनोंदिन भयावह होती जा रही है इन परिस्थितियों में आजादी के बाद भोपाल संभाग की पहली महिला कमिश्नर बनी कल्पना श्रीवास्तव भोपाल के लिए शुभंकर साबित हो रही है जिन्होंने न केवल 11 लाख पौधों को लगाने का लक्ष्य रखा है। साथ ही भोपाल वासियों को पर्यावरण के प्रति सचेत और जागरूक भी किया है। यदि यह अभी शुरू नहीं होता तो शायद फिर देर हो जाती लेकिन देर आए दुरुस्त आए की तर्ज पर भोपालवासी पौधा लगाने में रुचि लेने लगे हैं जिससे एक बार फिर उम्मीद बनी है कि ताल-तलैया और हरियाली के लिए जाने जाना वाला भोपाल अपने स्वरूप को बनाए रखने में कामयाब होगा।

दरअसल किसी भी महत्वपूर्ण पद पर बैठा व्यक्ति यदि संवेदनशील हो तो फिर उसके नतीजे ऐसे ही आते हैं जैसे आईएएस अधिकारी के रूप में कल्पना श्रीवास्तव जहां-जहां पदस्थ रहीं वहां-वहां उन्होंने उपलब्धियों को ऊंचाईयां दी। इसके लिए उन्हें विभिन्न पुरस्कार और सम्मान तो मिले ही लेकिन सबसे बड़ी बात उन्होंने हर बार सरकार और आम जनता का दिल भी जीता। कल्पना श्रीवास्तव जब महिला एवं बाल विकास विभाग की आयुक्त थी तब उन्होंने लाडली लक्ष्मी योजना का प्रारूप तैयार किया जो कि बाद में प्रदेश में ही नहीं बल्कि पूरे देश में सराही गई। यही नहीं कल्पना श्रीवास्तव को प्रदेश में लगभग 18 हजार बाल विवाह रोकने का भी यश मिला है।

प्रदेश में बाल विवाह रोकने और लाडो अभियान लागू करने के लिए कामनवेल्थ अवॉर्ड कुआलालंपुर में मलेशिया के उप प्रधानमंत्री ने दिया जो कि मध्यप्रदेश को पहली बार मिला।

इसके लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी उन्हें सम्मानित किया। कल्पना श्रीवास्तव जब पंजीयन विभाग की प्रमुख थीं तब रियल स्टेट का कारोबार अपने मंदी के सबसे बुरे दौर से गुजर रहा था। इसके बावजूद उन्होंने 43 करोड़ के लक्ष्य को पार करते हुए 48 करोड़ की वसूली की थी और सरकार का खाली खजाना भरा था। इसके बाद अल्प समय में ही उन्होंने आरजीपीवी की कुलपति रहते हुए विद्यार्थियों के हित में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए। भोपाल कमिश्नर बनते ही उन्होंने हमीदिया अस्पताल के हालात सुधारने के प्रयास शुरू कर दिए हैं।

बहरहाल, भोपाल का तापमान जब पिछली गर्मी के दिनों में 45 डिग्री को पार कर रहा था तब सभी चिंतित हो रहे थे क्योंकि वर्ष 2010 के बाद से ही भोपाल का पारा साल दर साल बढ़ता जा रहा है क्योंकि भोपाल की हरियाली 66 प्रतिशत से घटकर मात्र 11 प्रतिशत ही रह गई है। कल्पना श्रीवास्तव भी भोपाल की घटती हरियाली से ना केवल चिंतित हुई वरण उन्होंने हरा-भरा भोपाल बनाने का संकल्प भी ले लिया और ग्रीन भोपाल, कूल भोपाल का अभियान शुरू कर दिया। उन्होंने इस अभियान में सरकार के साथ-साथ निजी संस्थाओं और स्वयंसेवी संस्थाओं को भी जोड़ा जिससे ऐसी जागरूकता आई कि भोपालवासियों ने अपने घर-आंगन, ऑफिस और जिसको जहां भी खाली स्थान मिला, वहां पर पौधे रोपने लगा। अब तक लगभग 8 लाख पौधे भोपाल शहर में रोपे जा चुके हैं। देखते ही देखते ग्रीन भोपाल, कूल भोपाल को व्यापक जन समर्थन मिलने लगा। सरकार ने जहां इसे पूरे प्रदेश में अभियान के रूप में चलाने के निर्देश दिए और मुख्य सचिव की अध्यक्षता में एक कार्य दल भी गठित किया गया। मुख्य सचिव एस.आर. मोहंती ने तो साफ तौर पर निर्देश जारी कर दिए कि किसी भी प्रोजेक्ट के लिए अब पेड़ नहीं काटे जाएंगे। तत्कालीन राज्यपाल आनंदी पटेल ने अभियान को आगे बढ़ाते हुए पूरे प्रदेश के सभी सरकारी स्कूलों में पीपल का एक पौधा लगाने के लिए निर्देश दिए थे। धीरे-धीरे यह अभियान भोपाल तक ही सीमित न होकर पूरे प्रदेश में फैल गया और जनप्रतिनिधि एवं कलेक्टर अपने-अपने जिलों में पौधारोपण को महत्त्व दे रहे हैं। अभियान की सफलता से कल्पना श्रीवास्तव उत्साहित हैं। वे कहती हैं कि प्रत्येक व्यक्ति का यह सामाजिक एवं नैतिक दायित्व है। आगे आने वाली पीढ़ी की चिंता करें। पेड़-पौधे हैं तो ही धरती पर जीवन है। यदि पौधे नहीं रहेंगे तो फिर कोई भी नहीं रह पाएगा। वे अपने घर के बगीचे की तरह भोपाल को हरा-भरा देखना चाहती है। कुल मिलाकर भोपाल के व्यवस्थित विकास के लिए महेश नीलकंठ बुच को जिस तरह से आज भी याद किया जाता है उसी तरह भोपाल की हरियाली बढ़ाने के लिए कल्पना श्रीवास्तव को वर्षों तक याद किया जाएगा क्योंकि उन्होंने पौधा लगाने से ज्यादा भोपाल के नागरिकों को जागरूक और सचेत जो कर दिया है। भोपाल को राजधानी बने 63 सालों के बाद ग्रीन भोपाल, कूल भोपाल एक जनांदोलन का रूप ले चुका है और यह कहना बिल्कुल सही है कि प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता की कल्पना अब साकार हो रही है। तभी तो पत्रकार और पर्यावरण प्रेमी मिलिंद कुलकर्णी का कहना है कि कमिश्नर कल्पना श्रीवास्तव की प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता इसी बात से समझी जाती है कि उन्होंने पेड़ों को नुकसान पहुंचाने वालों के खिलाफ भी अभियान चला दिया है। यहां तक कि पेड़ों पर पोस्टर बैनर लगाने में जो कील ठोकी जाती है उस पर भी अब प्रतिबंध लग गया है। ■

हेल्दी हार्ट के लिए खुद से करें छह वादे

✍ शरद मिश्रा

कॉर्डियो वस्कुलर डिजीज यानी हृदय रोग भारत में मृत्यु दर का एक प्रमुख कारण है। भारतीयों में आनुवंशिक संरचना के कारण हृदय रोग का खतरा अधिक है। इसके मुख्य कारणों में से एक लगातार जीवनशैली में होते रहने वाला बदलाव है जिससे कई भारतीय गुजरते हैं। इन बदलावों में शारीरिक गतिविधियों का न होना, खराब आहार व्यवस्था, चीनी और नमक अधिक खाना और ट्रांस फैट का उच्च मात्रा में सेवन करना शामिल है।

ऐसे में इन 6 चीजों का पालन कर अपने दिल को हीरो बनाने और हेल्दी रखने का संकल्प लें...

पहला वादा : खानपान को लेकर सचेत रहें

प्रतिज्ञा लें कि आप अपने खानपान को लेकर सचेत रहेंगे। भोजन में हेल्दी चीजें जैसे बादाम, ताजे फल, ओट्स आदि को शामिल करें और अनहेल्दी स्नैकिंग से बचें। सही खानपान के महत्व पर जोर देते हुए बॉलिवुड ऐक्ट्रेस सोहा अली खान कहती हैं, अपने आहार में छोटे-छोटे बदलाव करें जैसे- अधिक प्रोसेस्ड और तले हुए खाद्य पदार्थों की जगह सूखे, नमकीन बादाम का सेवन करना, जो न केवल आपका पेट भरेगा बल्कि आपके संपूर्ण स्वास्थ्य में भी सहायक होगा।

दूसरा वादा : हर दिन करें एक्सर्साइज

अपने डॉक्टर यानी फिजिकल ट्रेनर से सलाह लेकर दैनिक दिनचर्या में कुछ एक्सर्साइजेज को शामिल करें और ऐक्टिव लाइफस्टाइल अपनाएं। चाहे वह तेज चलना हो, हल्की जॉगिंग करनी हो, जिम जाना हो, तैराकी, जुंबा या योग जो भी हो, एक ऐसी फिटनेस गतिविधि चुनिए जो आपको बहुत अच्छा महसूस कराए। फिटनेस फ्रीक और सुपरमॉडल मिलिंद सोमन कहते हैं, मुझे दौड़ना और तैरना पसंद है- और मैं दोनों के बीच अपने समय को संतुलित करने की कोशिश करता हूं। इन दोनों एक्सर्साइज को आप डेली रुटीन में आसानी से शामिल कर सकते हैं।

तीसरा वादा : अपने कलेस्ट्रॉल लेवल को लेकर जागरुक बनें

अपने एलडीएल यानी बैड कलेस्ट्रॉल के लेवल को लेकर अधिक सावधान और जागरूक बनें जिससे कि आप अपने हृदय की बेहतर सेहत के लिए समय पर बदलाव कर सकें। माधुरी रुइया, डाय ऐंड न्यूट्रिशन कंसल्टेंट बताती हैं, ÷किसी व्?यक्?ति के कलेस्ट्रॉल लेवल का जायजा लेना और उसे संतुलित करने का सक्रिय प्रयास करना, समग्र हृदय स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण कदम है। इसके लिए अत्यधिक सैचुरेटेड फैट वाले भोजन का सेवन कम करें और इनकी जगह बादाम, योगर्ट या फलों का सेवन करें।

चौथा वादा : वजन पर नजर रखें

पेट की चर्बी का संबंध अक्सर बढ़े हुए बल्ड शुगर लेवल, हाई ब्लड प्रेशर और ट्राइग्लिसराइड्स के उच्च स्तर से होता है जो हृदय रोग को बढ़ाने के अहम जोखिम कारक हैं। ऐसे में अपने परिवार और अपने वजन के बारे में जागरूक बनें। मैक्स हेल्थकेयर दिल्ली की रीजनल हेड रितु समादार बताती हैं, अपने हृदय को स्वस्थ रखने के लिए, अपना वजन कम रखना जरूरी है। जो लोग अपने वजन को बनाए रखने की दिशा में काम कर रहे हैं, उनके लिए बादाम एक अच्छा स्नैकिंग विकल्प है। एक अध्ययन से पता चला है कि हर रोज 42 ग्राम बादाम खाने से एलडीएल कलेस्ट्रॉल में काफी सुधार के अलावा पेट की चर्बी और कमर के आकार में कमी आती है।

पाँचवा वादा : हाल के सर्वेक्षण के अनुसार, 86प्रतिशत के वैश्विक औसत की तुलना में लगभग 89त्न भारतीयों ने तनाव का सामना करने की बात कही है। सर्वेक्षण बताता है कि समग्र कल्याण के लिए, अपने तनाव को नियंत्रण में रखने की दिशा में काम करना जरूरी है। इसके लिए उन चीजों को समय दें जिनसे आपको खुशी मिलती हो। न्यूट्रिशन और वेलनेस कंस्लटेंट शीला कृष्णास्वामी कहती हैं, इस वर्ल्ड हार्ट डे पर खुद को चुनें। मेडिटेशन करें, पेंटिंग करें, किताब पढ़ें, दोस्तों और परिवार वालों के साथ वक्त बिताएं ताकि आपका तनाव कम हो सके। बेवजह का स्ट्रेस भी दिल की बीमारी को बढ़ाता है।

छठा वादा : स्मोकिंग को कहें ना स्मोकिंग यानी धूम्रपान की वजह से भी हार्ट डिजीज का खतरा कई गुना बढ़ जाता है क्योंकि सिगरेट के धुएं में मौजूद केमिकल्स हार्ट के ब्लड वेसल्स की दीवार को नुकसान पहुंचाते हैं जिससे हार्ट अटैक का खतरा रहता है। हाई ब्लड प्रेशर के बाद स्मोकिंग दिल की बीमारी होने का सबसे बड़ा कारण है। जर्नल ऑफ अमेरिकन मेडिकल असोसिएशन की मानें तो अगर आप सिगरेट पीना छोड़ दें तो 5 साल के अंदर आपको हृदय रोग होने का खतरा 39 प्रतिशत तक कम हो सकता है। ■

कामकाजी महिलाएं हैं ज्यादा मोटापे का शिकार

जानें क्या है वजह और सॉल्यूशन

✍ शोभा सिंह

भारत के 63प्रतिशत कर्मचारी मोटापे का शिकार हैं, यह पता चला है हाल ही में आए एक सर्वे में। हेल्थ और फिटनेस ऐप हेल्दी फाई मी ने कॉरपोरेट इंडिया के फिटनेस लेवल पर एक सर्वे किया, जिसमें 63 प्रतिशत कार्यकारी (एग्जिक्यूटिव) 23 से अधिक बॉडी मास इंडेक्स (बीएमआई) के साथ अधिक वजन वाले हैं। इस रिपोर्ट में 12 महीने की अवधि के दौरान 20 से अधिक कंपनियों में करीब 60,000 कर्मचारियों की ऐक्टिविटीज और फूड हैबिट्स पर नजर रखी गई। यह सर्वे दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु, चेन्नई, हैदराबाद, कोलकाता जैसे महानगरों के साथ झागड़िया, खंडाला व वापी जैसे दूरस्थ स्थानों में कारखानों में काम करने वाले कर्मचारी, सेल्स प्रफेशनल, आईटी प्रोफेशनल और बैंकर्स पर भी किया गया।

सर्विस सेक्टर में काम करने वाले हैं कम ऐक्टिवइस स्टडी के अनुसार, प्रॉडक्शन से जुड़े सेक्टरों में काम करने वाले लोग सर्विस सेक्टर में काम करने वाले लोगों से ज्यादा ऐक्टिव होते हैं। जबकि स्टडी में इस बात का भी खुलासा है कि कॉरपोरेट जगत में काम करने वाले कर्मचारी वीकेंड के दिनों में ज्यादा सुस्त हो जाते हैं। स्टडी की मुताबिक, इन दिनों ये लोग जिम जाना छोड़ देते हैं। फिर होता यह है कि कैलरी बर्न होने की क्वांटिटी 300 से घट कर 200 तक पहुंच जाती है।

ऑफिस में खुद को रखें फिट

'हेल्दी मी' के सीईओ और को-फांउडर तुषार वशिष्ठ के मुताबिक, जिस तरह से आंकड़ें सामने आ रहे हैं, यह बिल्कुल भी एक बेहतर संकेत नहीं है। आज सर्विस सेक्टर में काम करने वाले अधिकतर कर्मचारी फिट नहीं हैं। एक्सपर्ट बताते हैं कि नियम से एक्सरसाइज और फिजिकल ऐक्टिविटी जैसे कि रोजाना टहलना, दौड़ना, तैराकी आपको फिट रख सकता है। इसके अलावा आप ऑफिस में कुछ मिनट निकालकर योग या बाहर टहलकर आ सकते हैं, क्योंकि वर्क प्लेस पर खुद को ऐक्टिव रखना काफी महत्वपूर्ण होता है।

वजन घटाना हो जाएगा आसान

1. जो भी खाएं उसमें कार्बोहाइड्रेट की मात्रा कम हो। वजन बढ़ने की यह खास वजह होती है।

2. जब भूख लगे, तो पेट भरकर खाएं. लेकिन कार्बोहाइड्रेट घटाने के साथ ही फैट कम न करें। कम मात्रा में मक्खन और घी ले सकते हैं।

3. प्रॉसेस्ड और लो-कार्ब फूड खाने से परहेज करें।

4. कुछ भी ऐसा न खाएं, जिसमें आर्टिफिशियल शुगर हो। इसके सेवन से एक ओर जहां वजन बढ़ता है, वहीं ऐसी चीजें मीठे को लेकर क्रेविंग बढ़ाने का भी काम करती हैं। वैसे भी मीठा हेल्थ को कई तरह से नुकसान देता है।

75प्रतिशत महिलाएं मोटापे की चपेट में इसलिए हैं

शहरों में रहने वाली 25 से 50 उम्र की 75 फीसदी कामकाजी महिलाएं मोटी हैं। हेल्थ सर्वे के आधार पर यह रिपोर्ट तैयार की है। सर्वे के दौरान अधिकतर महिलाओं ने कहा कि वे 8 से 9 घंटे कंप्यूटर पर काम करती हैं। इस दौरान वे मुश्किल से दो से तीन बार उठती हैं, वह भी कैंटीन तक चाय या कॉफी लेने के लिए। स्टडी में यह निकलकर आया कि मोटापा बढ़ने की खास कारणों में अधिक देर तक बैठकर काम करना और हेल्दी फूड न लेना है। अधिकतर महिलाओं में गलत लाइफस्टाइल फॉलो करना, वर्क प्रेशर और एक्सर्साइज न कर पाना और अनहेल्दी फूड खाना वेट बढ़ने की खास वजह पाई गई। ■

ब्लैक ड्रेस में सारा अली खान का बोल्ड लुक

✍ मुम्बई ब्यूरो

सारा अली खान, अपने कपड़ों की चॉइस और बेहतरीन ड्रेसिंग सेंस के जरिए हर दिन यह साबित करती जा रही हैं कि वह इंडस्ट्री की नई फैशनिस्ता बनने की राह पर हैं।

थाई हाई स्लिट गाउन में सारा

एक अवॉर्ड शो के दौरान बीती रात ब्लैक कलर के थाई हाई स्लिट ब्लैक कलर के ईवनिंग गाउन में बेहद बोल्ड नजर आ रहीं थीं सारा।

नेट वाली रफल ड्रेस में सारा

मशहूर फैशन डिजाइनर अनीता श्रॉफ अदजानिया ने सारा की इस ब्लैक नेट वाली रफल ड्रेस को डिजाइन किया था।

ब्लैक ड्रेस संग मैचिंग हील्स

अपनी इस ब्लैक नेट वाली स्लीवलेस रफल ड्रेस जिसमें थाई हाई स्लिट था को सारा ने ब्लैक कलर के हील वाले पंप्स, कानों में ब्लैक कलर के छोटे से स्टड्स, खुले बाल के साथ टीमअप कर पहना था। एक मशहूर मैग्जीन की ओर से करवाए गए इस ब्यूटी अवॉर्ड्स वाले इवेंट में सारा के अलावा कई और बॉलिवुड सिलेब्रिटीज ने शिरकत की। ■

रजोनिवृत्ति के लक्षण

महिलाओं में मासिक धर्म बंद होने के लक्षण आईये जानते है

स्त्रियों में मासिक धर्म के स्थायी रूप से बंद हो जाने को रजोनिवृत्ति कहते हैं। रजोनिवृत्ति होने पर स्त्री में शारीरिक और मानसिक दोनों बदलाव होते हैं।ज्यादातर स्त्रियों में ये परिवर्तन इतनी धीमी गति से होते हैं कि स्त्री को पता तक नहीं चलता है, लेकिन कुछ स्त्रियों को ज्यादा तकलीफ होती है।मेनोपौज़ या रजोनिवृत्ति कोई रोग नहीं है बल्कि यह स्त्री के शरीर की एक सामान्य प्रक्रिया है जिससे होकर एक उम्र के बाद हर महिला को गुज़रना पड़ता है।इसके बाद स्त्री के गर्भ धारण करने की सारी संभावनाएं समाप्त हो जाती हैं।अलग-अलग स्त्रियों में रजोनिवृत्ति अलग-अलग समय पर होती है।अधिकतर औरतों में रजोनिवृत्ति 45 वर्ष से 55 वर्ष के बीच में होता है। लेकिन यह 10 वर्ष से 40 वर्ष की आयु में भी हो सकती है, और यह भी हो सकता है कि 60 की आयु तक भी आपको रजोनिवृत्ति न हो।

डॉ. बी.के. कश्यप

BAMS.DNYS,APC
PARISHAND,
NEW DELHI
Y.N.MAHARASHTRA,
MUMBAI

रजोनिवृत्ति से जुड़ी महत्वपूर्ण बातें

रजोनिवृत्ति होने के दौरान महिलाओं को कई स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती हैं, कई बार ये समस्याएँ बहुत पीड़ा देती है।

रजोनिवृत्ति होने पर सुस्ती आना, नींद न आना, शरीर में शिथिलता रहना, शरीर के विभिन्न हिस्सों में दर्द रहना, मोटापा बढ़ना इत्यादि समस्याएँ भी हो सकती हैं।

रजोनिवृत्ति के लक्षण हर महिला में अलग-अलग होते हैं।किसी में अचानक मासिक धर्म आना बंद हो जाता है तो किसी में धीरे-धीरे।

रजोनिवृत्ति महिलाओं के वृद्धावस्था की ओर जाने के लक्षण हैं।

रजोनिवृत्ति होना प्राकृतिक है।

स्वस्थ महिलाओं को बिना किसी परेशानी के रजोनिवृत्ति हो जाता है यानी हर महीने मासिक के रक्त स्राव में कमी होते जाना और एक दिन पूरी तरह से बंद हो जाना।

अस्वस्थ महिलाओं या फिर जिनकी मासिक अनियमित हो, प्रसवकाल में उचित देखभाल न की गई हो, उन महिलाओं को माहवारी बंद होते समय कई परेशानियों से गुजरना पड़ सकता है।

रजोनिवृत्ति के लक्षण

बालों का पतला होना या बालों का गिरना।

हृदय की धड़कन का तेज़ होना।

जोड़ों का दर्द।

योनि का सूखापन ङ्क प्राकृतिक स्नेहन जो योनि की दीवारों पर होता है और जो कामोत्तेजना के दौरान बढ़ जाता है, रजोनिवृत्ति के दौरान इसकी मात्रा कम हो सकती है। योनि शुष्क हो जाती है और आप बहुत असहज महसूस करती हैं।

भटकाव और भूल जाना बहुत ज्यादा पसीना आना।

स्तनों का कोमल होना और उनमें दर्द होना।

सेक्स के प्रति रूचि कम होना।

घबराहट होना।

सिर में दर्द, चक्कर आना।

स्वभाव में चिड़चिड़ापन आना।

ज्यादा शारीरिक कमजोरी होना।

पेट से संबंधित समस्या होना।

पाचनशक्ति कमजोर होना।

उल्टियाँ होना।

लगातार कब्ज की समस्या होना।

मानसिक तनाव होना।

शरीर पर झुर्रियाँ पड़ने लगना।

समय से पहले रजोनिवृत्ति का कारण और ट्रीटमेंट

केवल 10 त्न स्त्रियाँ हीं रजोनिवृत्ति के समय डॉक्टर से सलाह लेती हैं।

आप एचआरटी- हॉरमोन थैरेपी (एचटी) का उपयोग कर सकती हैं जिसे कि हॉरमोन पुनर्स्थापन थैरेपी (एचआरटी) या हॉरमोन्स थैरेपी (पीएचटी) भी कहा जाता है।

इसके अलावा रजोनिवृत्ति के इलाज के अन्य विकल्पों तौर पर, मौखिक गर्भनिरोधक पिल्स तथा लगाने के लिए योनि की क्रीम का उपयोग कर सकती है।

रजोनिवृत्ति होने पर तनाव न लेते हुए हर दिन व्यायाम करना और संतुलित भोजन खाना शुरू कर देना चाहिए।

प्रयागराज शहर में

द सिटी स्टैन्डर्ड

अंग्रेजी समाचार पत्र

The City Standard

सम्पर्क . मो.- 7905230036, गोकरन शुक्ला - 8799689003

सिटी ऑफिस - 1 ए हाशिमपुर रोड, टेगोर टाऊन, प्रयागराज-211002

डॉ. एस. राधाकृष्णन

सपने हमारे हौसला आपका

कमल नाथ
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

शैक्षिक गुणवत्ता कायम करने के लिये मध्यप्रदेश के समर्पित
समस्त शिक्षकों को ''शिक्षक दिवस'' पर बधाई एवं शुभकामनाएं

शिक्षकों का कर रही सत्कार, मध्यप्रदेश सरकार

- स्थानीय निकायों के 1 लाख 77 हजार अध्यापक संवर्ग के शिक्षकों को नव गठित संवर्ग में सुसंगत पदों पर नियुक्ति।
- उन्हें अन्य शासकीय सेवकों के समरूप सुविधाएं।
- प्रथम बार 35,000 से अधिक शिक्षकों के ऑनलाइन स्थानांतरण, उनके द्वारा चाहे गये विद्यालयों में।
- उत्कृष्ट शिक्षकों के प्रोत्साहन हेतु प्रदेश में प्रथम बार कक्षा 10वीं तथा 12वीं में शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम लाने वाले शिक्षकों को स्थानांतरण में प्रथम वरीयता।
- उत्कृष्ट परिणाम देने वाले चिह्नित प्राचार्यों को राज्य सरकार द्वारा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय एक्सपोज़र विजिट के अवसर।
- बोर्ड परीक्षाओं में उत्कृष्ट परिणाम देने वाले प्राचार्यों को राज्य स्तर से प्रशस्ति-पत्र।
- दक्षता उन्नयन कार्यक्रम के अंतर्गत प्रदेश के 851 विद्यालय गोल्ड चैम्पियन, 2,187 रजत चैम्पियन तथा 4,566 विद्यालय कांस्य चैम्पियन। इन विद्यालयों की उपलब्धि वॉल ऑफ फेम पर दर्ज। इनके शिक्षकों को राज्य एवं जिला स्तर से प्रशस्ति-पत्र।

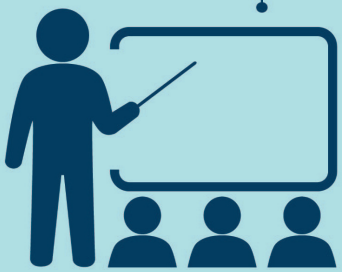

"सम्मानीय शिक्षकगण,
आज देश के पूर्व राष्ट्रपति और महान शिक्षाविद् डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी का जन्मदिवस है। उनके जन्मदिवस को हम शिक्षक दिवस के पावन पर्व के रुप में मनाते हैं। मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मध्यप्रदेश सरकार आपकी सुविधा और सम्मान का पूरा ध्यान रखेगी। शैक्षिक गुणवत्ता को कायम रखने हेतु आपके प्रयासों के लिए मेरी ओर से साधुवाद।"

कमल नाथ
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

"अबोध बच्चों को सुयोग्य नागरिक बनाने का महत्वपूर्ण दायित्व, शिक्षक ही निभाते हैं। मध्यप्रदेश में शैक्षिक गुणवत्ता के लिये दृढ़-संकल्पित शिक्षकों को शिक्षक दिवस पर हार्दिक बधाई।"

डॉ. प्रभुराम चौधरी
मंत्री, स्कूल शिक्षा, मध्यप्रदेश

D-18054

मध्यप्रदेश जनसंपर्क द्वारा जारी

यह संकल्प है अपना, पूर्ण करें उत्कृष्ट शिक्षा का सपना

स्कूल शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश